

فَاقْصِصْ الْقِصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ (سورة الاعراف: 176)

महत्वपूर्ण व्यक्ति और स्थान

डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब कासमी
Dr. Maulana Mohammad Najeeb Qasmi

www.najeebqasmi.com



فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ

(سورة الاعراف 176)

महत्वपूर्णव्यक्ति और स्थान

डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब कासमी

www.najeebqasmi.com

All rights reserved
सभी अधिकार लेखक के लिये सुरक्षित हैं

Important Persons & Places in the History महत्वपूर्ण व्यक्ति और स्थान

By
डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब कासमी
Dr. Mohammad Najeeb Qasmi

<http://www.najeebqasmi.com/>
najeebqasmi@gmail.com
[MNajeeb Qasmi - Facebook](#)
[Najeeb Qasmi - YouTube](#)
Whatsapp: [00966508237446](tel:00966508237446)

पहला हिंदी संस्करण: मार्च 2016

Address for Gratis Distribution मुफ्त मिलने का पता:
Dr. Mohammad Mujeeb, Deepa Sarai, Sambhal, UP (2044302) India
डा. मोहम्मद मुजीब, दीपा सराय, सभल, यूपी, इण्डिया (244302)

विषय-सूची

क्र.	विषय	पेज नं
1	प्रस्तावना: मोहम्मद नजीब कासमी संभली	5
2	मुखबंध: हज़रत मौलाना अबुल क़सिम नोमानी	8
3	मुखबंध: मौलाना मोहम्मद असरारूल हक़ कासमी	9
4	मुखबंध: प्रोफेसर अख़तरूल वासे साहब	10
5	अम्बिया व रुसुल	11
6	हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम की ज़िन्दगी के अहवाल	17
7	खुलफ़ाए राशिदीन की ज़िन्दगी के मुख़्तसर अहवाल	21
8	हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु	22
9	हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु	24
10	हज़रत उसमान गनी रज़ियल्लाहु अन्हु	25
11	हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु	26
12	हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हु	28
13	हज़रत फातिमा की ज़िन्दगी के हालात	29
14	हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की विलादत	29
15	हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की तरबियत	30
16	हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुशाबह थीं	31
17	हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की मदीना हिजरत	32
18	हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह	33
19	हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का महर	34
20	तसबिहे फातमी	38
21	मोहम्मद बिन कासिम की ज़िन्दगी के अहवाल	42

22	इमाम अबू हनीफा: हयात और कारनामे	45
23	हज़रत इमाम हनीफा के मुख्तसर हालाते ज़िन्दगी	45
24	हज़रत इमाम अबू हनीफा के बारे में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बशारत	47
25	हज़रत इमाम अबू हनीफा के ताबइयत	48
26	फुक़हा व मुहदिसीन की बस्ती शहर कूफ़ा	50
27	हज़रत इमाम अबू हनीफा और इल्मे हदीस	56
28	हज़रत इमाम अबू हनीफा के असातज़ा	58
29	हज़रत इमाम अबू हनीफा के	60
30	हज़रत इमाम अबू हनीफा की	66
31	हज़रत इमाम अबू हनीफा की शान में बाज़ उलमाए उम्मत के अक़वाल	68
32	शैख शाह इसमाईल शहीद और उनकी किताब तकवियतुल ईमान	77
33	मुल्के शाम - फज़ीलत और तारीख	81
34	शैखुल हदीस मौलाना मोहम्मद ज़करिया कांधलवी	91
35	शैखुल हदीस मौलाना मोहम्मद ज़करिया की खिदमात	103
36	शैखुल हदीस मौलाना मोहम्मद इसमाईल संभली	108
37	दारुल उलूम देवबन्द के मोहतमिम हज़रत मौलाना मरग़ूबुर्रहमान साहब	111
38	शैख डाक्टर मोहम्मद मुस्तफा आज़मी कासमी और उनकी हदीस की खिदमात	114
39	लेखक का परिचय	127

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ، وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى النَّبِيِّ الْكَرِيمِ وَعَلَى آلِهِ وَأَصْحَابِهِ أَجْمَعِينَ.

प्रस्तावना

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न सिर्फ़ आखरी नबी हैं बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत अंतरराष्ट्रीय भी है, यानी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़बिला कुरैश या अरबों के लिए नहीं बल्कि पुरी दुनिया के लिए, इसी तरह सिर्फ़ उस ज़माना के लिए नहीं जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए बल्कि क्रियामत तक आने वाले तमाम इंसान व जिन्नात के लिए नबी व रसूल बना कर भेजे गए। कुरान व हदीस की रौशनी में उम्मत मुस्लिमा खास कर उलमा-ए-दीन की जिम्मेदारी है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद दीने इस्लाम की हिफाज़त करके कुरान व हदीस के पैगाम को दुनिया के कोने कोने तक पहुंचाएँ। चूनांचे उलमा-ए-कराम ने अपने अपने ज़माने में मुख्तलिफ़ तरीकों से इस जिम्मेदारी को अंजाम दिया। उलमा-ए-कराम की कुरान व हदीस की खिदमात को भुलाया नहीं जा सकता है और इंशा अल्लाह उलमा-ए-कराम की इल्मी खिदमात से कल क्रियामत तक इस्तिफादा किया जाता रहेगा। अब नई टेक्नोलॉजी (वेबसाइट, वाट्स ऐप, मोबाइल ऐप, फेसबुक और यूट्यूब वगैरह) को दीने इस्लाम की खिदमात के लिए उलमा-ए-कराम ने इस्तेमाल करना शुरू तो कर दिया है मगर इसमें मज़ीद काम करने की सख्त ज़रूरत है।

अलहमदु लिल्लाह बाज़ दोस्तों की टेक्निकल समर्थन और बाज़ मुहसिनीन के माली योगदान से हमने भी दीने इस्लाम की खिदमात के लिए नई टेक्नोलॉजी के मैदान में घोड़े दौड़ा दिए हैं ۞ इस

अंतरिक्ष (जगह) को एसी ताकतें पुन कर दें जो इस्लाम और मुस्लिमानों के लिए नुकसानदेह साबित हों। चूनांचे 2013 में वेबसाइट (www.najeebqasmi.com) लांच की गई, 2015 में तीन ज़बानों में दुनिया की पहली मोबाइल ऐप (**Deen-e-Islam**) और फिर दोस्तों के तकाजा पर हाजियों के लिए तीन ज़बानों में खुम्सी ऐप (**Hajj-e-Mabroor**) लांच की गई। हिंदुस्तान और पाकिस्तान के बहुत से उलमा ने दोनों ऐपस के लिए प्रशंसापत्र लिख कर अवाम व ख्वास से दोनों ऐपस से इस्तिफादा करने की दरखास्त की। यह प्रशंसापत्र दोनों ऐपस का हिस्सा हैं। ज़माने की रफ्तार से चलते हुए कुरान व हदीस की रौशनी में मुहत्तसर दीनी पैगाम खुबसूरत इमेज की शकल में मुहत्तलिफ सूत्रों से हज़ारों दोस्तों को पहुंच रहे हैं जो अवाम व ख्वास में काफी मकबूलियत हासिल किए हुए हैं।

इन दोनों ऐपस (**दीने इस्लाम और हज्जे मब्रूर**) को तीन ज़बानों में लांच करने के लिये मेरे तकरीबन 200 मज़ामीन का अंग्रेज़ी और हिन्दी में तर्जुमा करवाया गया। तर्जुमा के साथ ज़बान के माहिरीन से एडिटिंग भी कराई गई। हिन्दी के तर्जुमा में इस बात का ख्याल रखा गया कि तर्जुमा आसान ज़बान में हो ताकि हर आम व खास के लिए इस्तिफादा करना आसान हो।

अल्लाह के फज़ल व करम और उसकी तौफ़ीक़ से अब तमाम मज़ामीन के अंग्रेज़ी और हिन्दी अनुवाद को विषय के एतेबार से किताबी शकल में तरतीब दे दिया गया है ताकि इस्तिफादा आम किया जा सके, जिसके ज़रिया 14 किताबें अंग्रेज़ी में और 14 किताबें हिन्दी में तय्यार हो गई हैं। उर्दू में प्रकाशित 7 किताबों के अलावा 10 नई किताबें छपने के लिए तय्यार कर दी गई हैं।

तारीख की चंद अहम शख्सियात (हज़रत इब्राहिम अलैहिस सलाम, खुलफाए राशिदीन, हज़रत फातमा रज़ी अल्लाहु अन्हा, फातेह सिंध मोहम्मद बिन कासिम, हज़रत इमाम अबु हनीफा, मौलाना मोहम्मद ज़क्रया कांधलवी, मौलाना मोहम्मद इस्माइल संभली, मौलाना मोहम्मद मरग़बुर रहमान और शैख डॉक्टर मोहम्मद मुस्तुफा आज़मी दामत बरकातुहुम) से मुतअल्लिक मेरे बहुत से मज़ामीन किताबी शकल (महत्वपूर्ण व्यक्ति और स्थान) में तरतीब दिए गए हैं ताकि इस्तिफादा आम हो सके।

अल्लाह तआला से दुआ करता हूं कि इन सारी खिदमात को कुबूलियत व मक़बूलियत से नवाज़ कर मुझे, ऐपस की तायीद में लेटर लिखने वाले उलमा-ए-कराम, टेक्निकल सपोर्ट करने वाले अहबाब, माली योगदान पेश करने वाले मुहसिनीन, मुतर्जिमीन, एडिटिंग करने वाले हज़रात खास कर जनाब अदनान महमूद उसमानी साहब, डिज़ाइनर और किसी भी किसम से तआवुन पेश करने वाले हज़रात को दोनों जहां की कामयाबी व कामरानी अता फरमाये। आखिर में दारुल उल्ला देवबन्द के मुहतमिम हज़रत मौलाना मुफ्ती अबुल कासिम नुमानी साहब, मौलाना मोहम्मद असरारुल हक़ कासमी साहब (मैंबर ऑफ़ पार्लियामेंट) और प्रोफेसर अखतरुल वासे साहब (लेसानियात के कमिशनर, मंत्रालय अक़लियती बहबूद) का शुक्र गुज़ार हूं कि उन्होंने अपनी मसरूफियात के बावजूद प्रस्तावना लिखा। डॉक्टर शफाअतुल्लाह खान साहब का भी मशकूर हूं जिनकी मेहनतों से यह प्रोजेक्ट मुकम्मल हुआ।

मोहम्मद नजीब कासमी संभली (रियाज़)

14 मार्च, 2016 ई.

(Mufti) Abul Qasim Nomani

Muslimah (MC) Darul Uloom Deoband



مفتی: ابو القاسم نعمانی

مہتمم دارالعلوم دیوبند، الہند

PIN- 247554 (U.P.) INDIA Tel: 01336-222429, Fax: 01336-222768 E-mail: info@darululoom-deoband.com

Ref. No.....

Date:.....

باسمہ سبحانہ و تعالیٰ

جناب مولانا محمد نجیب قاسمی سنبلی تہم ریاض (سعودی عرب) نے دینی معلومات اور شرعی احکام کو زیادہ سے زیادہ اہل ایمان تک پہنچانے کے لئے جدید وسائل کا استعمال شروع کر کے، دینی کام کرنے والوں کے لیے ایک اچھی مثال قائم فرمائی ہے۔

چنانچہ سعودی عرب سے شائع ہونے والے اردو اخبار (اردو نیوز) کے دینی کالم (روشنی) میں مختلف عنوانات پر ان کے مضامین مسلسل شائع ہوتے رہتے ہیں۔ اور موبائل ایپ اور ویب سائٹ کے ذریعہ بھی وہ اپنا دینی پیغام زیادہ سے زیادہ لوگوں تک پہنچا رہے ہیں۔ ایک اچھا کام یہ ہوا ہے کہ زمانہ کی ضرورت کے تحت مولانا نے اپنے اہم اور منتخب مضامین کے ہندی اور انگریزی میں ترجمے کرا دیے ہیں، جو الیکٹرونک بک کی شکل میں جلد ہی لانچ ہونے والے ہیں۔

اور امید ہے کہ مستقبل میں یہ پرنٹ بک کی شکل میں بھی دستیاب ہوں گے۔ اللہ تعالیٰ مولانا قاسمی کے علوم میں برکت عطا فرمائے اور ان کی خدمات کو قبول فرمائے۔ مزید علمی افادات کی توقعیں بنیں۔

ابورکاتب عثمان فرما

ابو القاسم نعمانی غفرلہ

مہتمم دارالعلوم دیوبند

۱۴۳۷ھ/۲۰۱۶ء

Mohammad Asrarul Haque
Member of Parliament
(Lok Sabha)



1E, South Avenue, New Delhi, 110011
Ph: 811-23785046 Telefax: 011-23786314
E-mail: mhaqqasmi@gmail.com

Date: 19/03/2016

Date: 19/03/2016

تائراٹ

عصر حاضر میں دینی تعلیمات کو جدید آلات و وسائل کے ذریعہ عوام الناس تک پہنچانا وقت کا اہم تقاضہ ہے، اللہ کا شکر ہے کہ بعض دینی، معاشرتی اور اصلاحی فکر رکھنے والے حضرات نے اس سمت میں کام کرنا شروع کر دیا ہے، جس کے جب آئن انٹرنیٹ پر دین کے تعلق سے کافی مواد موجود ہے۔ اگرچہ اس میدان میں زیادہ تر مغربی ممالک کے مسلمان سرگرم ہیں لیکن اب ان کے نقش قدم پر چلتے ہوئے مشرقی ممالک کے علماء و ایمان اسلام بھی اس طرف متوجہ ہو رہے ہیں جن میں عزیزم ڈاکٹر محمد نجیب قاسمی صاحب کا نام سر فہرست ہے۔ وہ انٹرنیٹ پر بہت سادہ سادہ مواد ڈال چکے ہیں، باضابطہ طور پر ایک اسلامی و اصلاحی ویب سائٹ بھی چلا رہے ہیں۔ ڈاکٹر محمد نجیب قاسمی کا قلم رواں دواں ہے۔ وہ اب تک مختلف اہم موضوعات پر سینکڑوں مضامین اور کئی کتابیں لکھ چکے ہیں۔ ان کے مضامین پوری دنیا میں بڑی دلچسپی کے ساتھ پڑھے جاتے ہیں۔ وہ جدید تکنیکی سہولتوں سے فائدہ اٹھاتے ہوئے اپنی ویب سائٹ پر کئی کتابوں کو بہت جلد دنیا بھر میں ایسے ایسے لوگوں تک پہنچا دیتے ہیں جن تک رسائی آسان کام نہیں ہے۔ موصوف کی شخصیت علوم و دینی کے ساتھ علم عصری سے بھی آراستہ ہے۔ وہ ایک طرف عالم دین ہیں، تو دوسری طرف ڈاکٹر و محقق بھی اور کئی زبانوں میں مہارت بھی رکھتے ہیں اور اس پر مستزاد یہ کہ وہ فعال و متحرک نوجوان ہیں۔ جس طرح وہ اردو، ہندی، انگریزی اور عربی میں دینی و اصلاحی مضامین اور کتابیں لکھ کر عوام کے سامنے لا رہے ہیں، وہ اس کے لئے حسین اور مبارک باد کے مستحق ہیں۔ ان کی شب و روز کی مصروفیات و جدوجہد کو دیکھتے ہوئے ان سے یہ امید کی جاسکتی ہے کہ وہ مستقبل میں بھی اسی مستعدی کے ساتھ مذکورہ تمام کاموں کو جاری رکھیں گے۔ میں دعا گو ہوں کہ باری تعالیٰ ان سے مزید دینی، اصلاحی اور علمی کام لے اور وہ اکابرین کے نقش قدم پر گامزن رہیں۔ آمین!

مخلص

(مولانا) محمد اسرار الحق قاسمی

ایم۔ بی۔ لوک-بھیا (انڈیا)

صدر آل انڈیا تعلیمی و ملی کارگزاری، نئی دہلی

Email: asrarulhaqqasmi@gmail.com

پرو. اکھتارول واسے

آیوکت

PROF. AKHTARUL WASEY
Commissioner



सत्यमेव जयते

भाषाजात अल्पसंख्यकों के आयुक्त

अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय

भारत सरकार

Commissioner for Linguistic
Minorities in India

Ministry of Minority Affairs
Government of India

تقریظ

اطلاعاتی انقلاب برپا ہونے کے بعد جس طرح ہم کی معلومات انٹرنیٹ کے ذریعہ آنکھوں کی دوچیلوں میں سمائی ہیں۔ اس نے ”گاہگر میں ساگر“ اور ”گوگل میں دریا“ کے تجزیاتی تصورات کو نہ صرف حقیقت بنا دیا ہے بلکہ ان پر ہمارا انحصار روز بروز ناگزیر ہوتا جا رہا ہے۔ گوگل (Google) ہو یا ویکی پیڈیا (Wikipedia) یا پھر دوسری سوشل سائٹس انہوں نے ترسیل و ابلاغ کو وہ حصہ جہت رنج اور فرقی کھڑی عطا کی ہے کہ فراق و فاصل کے تمام تصورات بے معنی ہو کر رہ گئے ہیں۔ لیکن اس اطلاعی انقلاب نے ایک پیچیدہ مسئلہ یہ پیدا کر دیا ہے کہ اطلاعات رسائی اور خبروں تک رسائی میں حقائق سے گریز یا ان کو سچ کرنے کا چیلن بھی اس طرح شامل ہو گیا ہے اور اس سچائی کو اسلام اور مسلمانوں سے بہتر کون جانتا ہے۔ دوسرا سنگین مسئلہ یہ ہے کہ باخبر ہونے اور معلومات حاصل کرنے کے لئے اب مطالعہ کی عادت لوگوں میں خاصی کم ہوتی جا رہی ہے۔ کیونکہ موبائل کے روپ میں دنیا ان کی مٹھی میں سمائی رہتی ہے اور وہ سب کچھ اسی کے ذریعہ جانتا چاہتے ہیں۔ اس چیلنج اور مسئلے کے حل کے لئے ضروری ہے کہ ہم غلط بیانیوں اور حقائق کو دینا پر آشکار کرنے کے لئے اور اپنے ہم مذہبوں خاص طور پر نئی نسل کو صحیح معلومات فراہم کرنے، انہیں رہنمائی دینے اور ان کے شعور میں بالیدگی اور پختگی لانے کے لئے اس اطلاعی انقلاب کے جتنے بھی وسائل و ذرائع ہیں ان کا بھرپور استعمال کریں۔

مجھے خوشی ہے کہ ہمارے ایک موثر اور معتبر عالم حضرت دین مولا نا محمد نجیب قاسمی نے جواز ہر بند اور اہل علم و دینہ کے قابل فخر اپنے قدیم میں سے ہیں اور عرصہ سے مملکت سعودی عرب کی راجدھانی ریاض میں برسر کار ہیں، انہوں نے اس ضرورت کو کوئی سمجھا اور دنیا کی کئی اسلامی موبائل ایپ ”دین اسلام“ اور ”چچ مبرور“ اردو، انگریزی اور ہندی میں تیار کیا تھا اور اب وقت گزرنے کے ساتھ نئے سوالات کی روشنی اور علمی ضرورتوں کے تحت نئے مضامین اور نئے بیانات شامل کر کے ایک وفد پھر نئے انداز کے ساتھ پیش کرنے جا رہے ہیں۔ مزید برآں زندگی کے مختلف پہلوؤں پر دین کے حوالے سے دوسرے مضامین کے الیکٹرونک ایڈیشن کو بھی منظر عام پر لایا جا رہا ہے۔ مجھے واقعی قفا محترم مولا نا محمد نجیب قاسمی صاحب کے مقالے، الیکٹرونک مضامین اور علمی فتوحات سے استفادہ کرنے کا موقع ملتا رہا ہے۔ مجھے ان کے متوازن، اعتدال پسند اور عالمانہ انداز تحریر نے ہمیشہ متاثر کیا۔ میں مولا نا نجیب قاسمی کی خدمت میں ہر یہ تحریک و تشکر پیش کرتا ہوں اور خدا سے دعا کرتا ہوں کہ وہ ان کی عمر میں درازی و علم میں اضافہ اور قلم میں مزید پختگی عطا فرمائے۔ کیونکہ:

ستاروں سے آگے جہاں اور بھی ہیں

ابھی عشق کے اقیانوں اور بھی ہیں

استمیر

(پروفیسر اختر الواسع)

سابق ڈائریکٹر، ڈاکٹر حسین انیس ٹیٹ آف اسلامک اسٹڈیز
سابق صدر، شعبہ اسلامک اسٹڈیز جامعہ ملیہ اسلامیہ، نئی دہلی
سابق دانش چیرمین، اردو اکادمی، دہلی

अम्बिया व रसूल

अल्लाह तआला ने इंसान व जिन्नात को अपनी इबादत के लिए पैदा फरमाया जैसा कि अल्लाह तआला ने अपने पाक कलाम में फरमाया "मैंने जिन्नात और इंसानों को महज इसलिए पैदा किया है कि वह सिर्फ मेरी इबादत करें।" (सूरह जारियात 56) अब सवाल पैदा होता है कि इबादत क्या है? किस तरह की जाए? इसका क्या तरीका होना चाहिए? इसी के लिए अल्ला तआला अपने बन्दों में से बाज़ बन्दों को मुंतखब फरमा कर उनको वही के ज़रिया अहकामात भेजता है कि क्या काम करने ज़रूरी हैं? क्या काम किए जा सकते हैं ? और किन कामों से बचना है? गरज़ ये कि वही के ज़रिया ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीका बयान किया जाता है, इसी नाम इबादत है। इन मुंतखब बन्दों को जो वक़्त के इमाम, इल्म व अमल के पैकर और तक़वा के अलमबरदार होते हैं, नबी या रसूल कहा जाता है, जिन की ज़िम्मेदारी अल्लाह के बन्दों को अपने कौल व अमल से अल्लाह तआला की तरफ बुलाना होती है। इन अम्बिया व रसूलों के वाक़यात पढ़ने चाहिएँ जैसा कि हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम के वाक़या को कदरे तफ़सील से बयान करने के बाद अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया "अम्बिया-ए-किराम के वाक़यात में अकलमंदों के लिए यकीनन नसीहत और इबरत है।" (सूरह यूसुफ 111)

नबी और रसूल में क्या फर्क है? उसकी तशरीह में उलमा के बह से रायें और अक़वाल हैं लेकिन तमाम मुफ़्फ़सेरीन व मुफ़क्केरीन और उलमा इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि कुरान व हदीस में दोनों लफ़्ज़

एक दूसरे के लिए इस्तेमाल हुए हैं अलबत्ता नबी आम है और रसूल खास है।

नबियों और रसूलों का यह सिलसिला हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से शुरू हुआ और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर खत्म हुआ, गरज़ ये कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रसूल होने के साथ साथ आखरी नबी भी हैं जैसा कि अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया "और लेकिन अल्लाह के रसूल और वह नबियों के खातिम हैं।" (सूरह अहजाब 40)

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक आने वाले अम्बिया व रुसूल की मुअय्यन तादाद तो अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता जैसा कि अल्लाह तआला ने कुरान करीम में फरमाया "आपसे पहले के बहुत से रसूलों के वाक्यात हमने आपसे बयान किए हैं और बुह्न से रसूलों के नहीं बयान किए।" (सूरह निसा 164) लेकिन फिर भी आप हज़रत अबूजर गिफारी रज़ियल्लाहु अन्हु की मशहूर व मारुफ हदीस जिसमें उनके सवाल करने पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया नबियों की कुल तादाद तक़रीबन एक लाख 24 हज़ार और रसूलों की कुल तादाद 315/313 है। (सही इब्ने हिब्बान) की बुनियाद पर लिखा गया है कि अम्बिया किराम की तादाद सहाबए किराम की तादाद की तरह लक़रीबन एक लाख 24 हज़ार थी (वल्लाहु आलम बिस सवाब)। इस रिवायत की सनद में बाज़ उलमा के नुक्ता-ए-नज़र में अगरचे कुछ जोफ मौज़ूद है मगर बहुत से शवाहिद की बिना पर तारिखी हैसियत से यह हदीस क़बूल की गई है।

जिन नबियों को रसूलों का तजक़िरा कुरान करीम में आया है उनकी तादाद 25 है, उनमें से 18 का ज़िक्र तो कुरान करीम (सूरह इनाम 83-86) में एक ही जगह पर है। जिन 25 अम्बिया का ज़िक्र कुरान करीम में आया है उनके नाम यह हैं।

(1) आदम अलैहिस्सलाम (2) इदरीस अलैहिस्सलाम (3) नूह अलैहिस्सलाम (4) हूद अलैहिस्सलाम (5) सालेह अलैहिस्सलाम (6) इब्राहिम अलैहिस्सलाम (7) लूत अलैहिस्सलाम (8) इसमाइल अलैहिस्सलाम (9) इसहाक अलैहिस्सलाम (10) याकूब अलैहिस्सलाम (11) यूनूस अलैहिस्सलाम (12) अय्यूब अलैहिस्सलाम (13) शुऐब अलैहिस्सलाम (14) मूसा अलैहिस्सलाम (15) हारून अलैहिस्सलाम (16) यूनूस अलैहिस्सलाम (17) दाउद अलैहिस्सलाम (18) सुलैमान अलैहिस्सलाम (19) इलयास अलैहिस्सलाम (20) अलयसा अलैहिस्सलाम (21) जकरिया अलैहिस्सलाम (22) यहया अलैहिस्सलाम (23) जुल किफल अलैहिस्सलाम अक्सर मुफ़स्सेरीन के नज़दीक) (24) ईसा अलैहिस्सलाम (25) हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम का ज़िक्र कुरान में (सूरह तौबा 30) में आया है लेकिन उनके नबी होने में इख़तेलाफ़ है। उन 25 अम्बिया-ए-किराम के अलावा उन तीन अम्बिया का ज़िक्र अहादीस में आया है (1) शीश अलैहिस्सलाम (2) यूशा अलैहिस्सलाम (3) खिजर अलैहिस्सलाम (इनके नबी होने में इख़तेलाफ़ है)

उन अम्बिया में पांच नबी एक ही घराने से तअल्लुक रखते हैं, हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम, इब्राहिम अलैहिस्सलाम के बेटे हज़रत इसहाक अलैहिस्सलाम इसहाक अलैहिस्सलाम के बेटे हज़रत याकूब

अलैहिस्सलाम, याकूब अलैहिस्सलाम के बेटे हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम और इब्राहिम अलैहिस्सलाम के भतीजे हज़रत लूत अलैहिस्सलाम।

अरब से तअल्लुक़ रखने वाले अम्बिया

आदम अलैहिस्सलाम, हूद अलैहिस्सलाम, सालेह अलैहिस्सलाम, इसमाइल अलैहिस्सलाम, शुरैब अलैहिस्सलाम और मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

इराक से तअल्लुक़ रखने वाले अम्बिया

इदरीस अलैहिस्सलाम, नूह अलैहिस्सलाम, इब्राहिम अलैहिस्सलाम और यूनस अलैहिस्सलाम।

शाम और फिलसतीन से तअल्लुक़ रखने वाले अम्बिया

लूत अलैहिस्सलाम, इसहाक अलैहिस्सलाम, याकूब अलैहिस्सलाम, अय्यूब अलैहिस्सलाम, जुल किफल अलैहिस्सलाम, दाउद अलैहिस्सलाम, सुलैमान अलैहिस्सलाम, इलयास अलैहिस्सलाम, अलयसा अलैहिस्सलाम, जकरिया अलैहिस्सलाम, यहया अलैहिस्सलाम और ईसा अलैहिस्सलाम।

मिश्र से तअल्लिक़ रखने वाले अम्बिया

युसूफ अलैहिस्सलाम, मूसा अलैहिस्सलाम और हारून अलैहिस्सलाम।

इन 25 अम्बिया के कुरान करीम में ज़िक्र की तकरीबी तादाद

आदम अलैहिस्सलाम 25	इदरीस अलैहिस्सलाम 2
नूह अलैहिस्सलाम 43	हूद अलैहिस्सलाम 7
सालिह अलैहिस्सलाम 9	इब्राहिम अलैहिस्सलाम 69
लूत अलैहिस्सलाम 27	इसमाइल अलैहिस्सलाम 12
इसहाक अलैहिस्सलाम 17	याकूब अलैहिस्सलाम 16
युसूफ अलैहिस्सलाम 27	अय्यूब अलैहिस्सलाम 4
शुऐब अलैहिस्सलाम 11	मूसा अलैहिस्सलाम 136
हारून अलैहिस्सलाम 19	यूनुस अलैहिस्सलाम 6
दाउद अलैहिस्सलाम 16	सुलेमान अलैहिस्सलाम 17
इलयास अलैहिस्सलाम 3	अलयसा अलैहिस्सलाम 2
जकरिया अलैहिस्सलाम 8	यहया अलैहिस्सलाम 4
ईसा अलैहिस्सलाम 25	जुल किफल अलैहिस्सलाम 2

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम 5 सराहत के साथ।

कुरान में ुहूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़िक्र पांच मरतबा सराहत के साथ हुआ है। (मोहम्मद का लफ़्ज़ चार मरतबा और अहमद का लफ़्ज़ एक मरतबा)। लफ़्जे रसूलुल्लाह, रसूल और नबी के साथ आपका ज़िक्र बहुत सी जगहों पर आया है जबकि बेशुमार जगहों पर आपको बराहे रास्त मुखातब किया गया है। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के मुतअल्लिक कितबों में मज़कूर है कि वह जन्नत से हिन्द की सरज़मीन पर उतारे गए। हिन्द या मक्का में मदफून हैं।

हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम के दो साहबजादे हज़रत इसहाक अलैहिस्सलाम और हज़रत इसमाइल अलैहिस्सलाम हैं। इनके बाद

तमाम अम्बिया-ए-किराम हज़रत इसहाक अलैहिस्सलाम की औलाद से हुए, सिवाए तमाम नबियों के सरदार हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कि वह हज़रत इसमाइल अलैहिस्सलाम की औलाद से हैं।

हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम का लकब इसराइल था जिसके मानी हैं बन्दा खुदा। उनही के नसल को बनी इसराइल कहते हैं।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम कौमे नूह, हज़रत हूद अलैहिस्सलाम कौमे आद, हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम कौमे समूद, हज़रत लूत अलैहिस्सलाम कौमे लूत और हज़रत मूसा, हारून, दाउद, सुलैमान, जकरिया, यहया और ईसा अलैहिस्सलाम कौमे बनी इसराइल के मुख्तलिफ कबाएल की इस्लाह के लिए रसूल बना कर भेजे गए।

हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम की ज़िन्दगी के मुख्तसर अहवाल

हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम तक्ररीबन चार हज़ार साल पहले इराक में पैदा हुए।

उनका वालिद आजर मजहबी पेशवा था, बुत बना कर बेचा करता था।

हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम बचपन से ही बुतों की इबादत की मुखालिफत की।

हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम की खुल कर बुतों की मुखालिफत के बाद उनको क़त्ल करने और घर से निकालने की धमकी दी गई।

हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम का एक इबादतगाह में ुष्क कर बड़े बुत के अलावा तमाम बुतों के टुकड़े टुकड़े करने का वाक़या पेश आया जिसका ज़िक्र कुरान करीम में है और फिर नमरूद बादशाह के साथ मुनाजरा हुआ।

मुनाजरा में हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम के मंतिकी जवाब पर गौर करने के बजाए यह शाही फरमान जारी किया गया कि इसको जला डालो और अपने माबूदों की मदद करो।

हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम को आतिशे नमरूद में डाले जाने का वाक़या पेश आया मगर अल्लाह तआला के हुकुम से आग हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम के लिए ठंडी होने के साथ सलामती और अराम की चीज बन गई।

इस कौम की बद नसीबी की हद यह थी इतना बड़ा मोजज़ा देखने के बावज़ूद एक आदमी भी ईमान नहीं लाया।

चुनांचे हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम इराक छोड़ कर मुल्के शाम तशरीफ ले गए।

वहां से फिलसतीन चले गए और वहीं मुस्तकिल क़याम फरमा कर इसी को दावत का मरकज बनया।

एक मरतबा हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम अपनी बीवी हज़रत सारा के साथ मिश्र तशरीफ ले गए।

वहां के बादशाह ने हज़रत हाजरा को हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम की अहलिया हज़रत सारा की खिदमत के लिए पेश किया।

उस वक़्त तक हज़रत सारा की कोई औलाद नहीं हुई थी।

मिश्र से हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम फिर फिलसतीन वापस तशरीफ ले गए।

हज़रत सारा ने खुद हज़रत हाजरा का निकाह हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम के साथ करवा दिया।

बुढ़ापे में हज़रत हाजरा के बतन से हज़रत इसमाइल अलैहिस्सलाम पैदा हुए।

कुछ अरसा बाद हज़रत सारा के बतन से हज़रत इसहाक अलैहिस्सलाम पैदा हुए।

अल्लाह तआल के हुकुम से हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम ने अपनी बीवी हज़रत हाजरा और बेटे हज़रत इसमाइल अलैहिस्सलाम को मक्का के चटयल मैदान में बैतुल्लाह के करीब छोड़ दिया।

जब खाने पीने के लिए कुछ न रहा तो हज़रत हाजरा बेचैन हो कर करीब की सफा और मरवा पहाड़ियों पर पानी की तलाश में दौड़ीं।
चुनांचे पानी का चशमा जमजम जारी हुआ।

कुछ मुद्दत के बाद एक कबीला बनू जरहम का इधर से गुजर हुआ। पानी की सहूलत देख कर उन्होंने हज़रत हाजरा से क़याम की इजाज़त चाही, हज़रत हाजरा ने वहां क़याम करने की इजाज़त दे दी। हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम को खाब में दिखाया गया कि वह अपने एकलौते बेटे को ज़बह कर रहे हैं। नबी का खाब सच्चा हुआ करता है, चुनांचे अल्लाह के इस हुकुम की तकमिल के लिए फौरन फिलसतीन से मक्का पहुंच गए। जब बाप ने बेटे को बताया कि अल्लाह तआला ने मुझे तुम्हें ज़बह करने का हुकुम दिया है तो फरमाबरदार बेटे इसमाइल अलैहिस्सलाम का जवाब था अब्बा जान! जो कुछ आपको हुकुम दिया जा रहा है उसे कर डालिए। इंशाअल्लाह आप मुझे सब्र करने वालों में पाएंगे।

और फिर अल्लाह तआला की रज़ा के लिए हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम ने तारीख इंसानी का वह अजीमुश शान कारनामा अंजाम दिया जिसका मुशाहिदा न इससे पहले कभी ज़मीन व आसमान ने किया और न उसके बाद करेंगे। अपने दिल के टुकड़े को मुंह के बल ज़मीन पर लिटा दिया, छुरी तेज की, आंखों पर पट्टी बांधी और उस वक़्त तक पूरी ताकत से छुरी अपने बेटे के गले पर चलाते रहे जब तक अल्लाह तआला की तरफ से यह आवाज़ न आ गई ऐ इब्राहिम! तुने खाब सच कर दिखाया, हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला देते हैं। चुनांचे हज़रत इसमाइल अलैहिस्सलाम की जगह जन्नत से एक मेंढा भेज दिया गया जिसे हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम ने ज़बह कर दिया।

इस अज़ीम इमतिहान में कामयाबी के बाद अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम को हुकुम दिया कि दुनिया में मेरी इबादत के

लिए घर तामीर करो। चुनांचे बाप बेटे ने मिल कर बैतुल्लाह शरीफ (खाना काबा) की तामीर की।

बैतुल्लाह की तामीर से फरागत के बाद अल्लाह तआला ने हुकुम दिया कि लोगों में हज का एलान कर दो। हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम ने हज का एलान किया चुनांचे अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम का इलान नह सिर्फ उस वक़्त के जिन्दा लोगों तक पहुंचा दिया बल्कि आलमे अरवाह में तमाम रूहों ने भी यह आवाज़ सुनी, जिस शख्स की किसमत में बैतुल्लाह की ज़ियारत लिखी थी उसने इस इलान के जवाब में लब्बैक कहा।

खुलफाए राशिदीन की ज़िन्दगी के मुख्तसर अहवाल

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रिसालत व नुबूवत की अज़ीम ज़िम्मेदारी का हक़ अदा करने के बाद 12 रबीउल अव्वल 11 हिजरी को तकरीबन 63 साल की उम्र में इंतिकाल फरमा गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद तकरीबन 30 साल यानी 40 हिजरी तक हज़रत अबू बकर, हज़रत उमर फारूक, हज़रत उसमान गनी और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हुम ने खिलाफत की ज़िम्मेदारियां बखूबी अंजाम दीं। 11 हिजरी से 40 हिजरी तक का वक़्त तारीख में खिलाफते राशिदा के नाम से जाना गया है और उन जलीलुल कदर सहाबा को खुलफाए राशिदीन के नाम से जाना जाता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन्हीं खुलफाए राशिदीन के मुतअल्लिक़ इरशाद फरमाया है “तुम मेरी और मेरे बाद आने वाले खुलफाए राशिदीन की सुन्नत को बहुत मज़बूती के साथ पकड़ लो।” (तिर्मिज़ी, अबू दाऊद)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशादात “मेरी उम्मत में खिलाफत तीस साल तक रहेगी फिर बादशाहत हो जाएगी” (तिर्मिज़ी, मुसनाद अहमद) “तुम्हारे दीन की इब्तिदा में नुबूवत व रहमत है फिर खिलाफत व रहमत होगी, फिर बादशाहत व जबरियत हो जाएगी” (सुयूती) की रौशनी में मुहद्दिसीन व मुफक्केरीन और मुअर्रेखीन फरमाते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशाद “तुम मेरे और मेरे बाद आने वाले खुलफाए राशिदीन की सुन्नत को बहुत मज़बूती के साथ पकड़ लो” से मुराद यही चार

खुलफा हैं जिनका तअल्लु कबीला कुरैश से है। हज़रत अमीर मआविया रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके बाद यह खिलाफत बादशात में तब्दील होती चली गई और खलीफा ने एक बादशाह की हैसिस्त इख्तियार कर ली। मुअर्रेखीन ने हज़रत हसन बिन अली की हज़रत मआविया से सुलह से पहले तकरीबन सात माह की खिलाफत को भी खिलाफते राशिदा में उम्मार किया है, क्योंकि हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु की तकरीबन सात माह की खिलाफत को शुमार करके ही तीस साल मुकम्मल होते हैं। बाज़ मुअर्रेखीन ने हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ को हुकमन पांचवां खलीफा राशिद शुमार किया है, क्योंकि उन्होंने चारों खुलफा के नक्शे क़दम पर चल कर खिलाफत की जिम्मेदारियां निभाईं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नियाबत में दीन और दुनिया के उमूर में सरपरस्ती करने और शरई अहकामात का निफाज़ कराने का नाम खिलाफत है। राशिद की जमा राशिदून और राशिदीन आती है जिसके मानी सीधे रास्ते पर चलने वाले यानी हिदायत याफ़ता के हैं।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु (खिलाफत 11 हिजरी से 13 हिजरी तक)

आपका नाम अब्दुल्लाह बिन अबी कुहाफा, कुन्नियत अबू बकर और वाक़या मेराज की तसदीक़ करने से लक़ब सिद्दीक़ हुआ। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नबी बनाए जाने के रोज़ ही हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के बाद सबसे पहले इस्लाम क़बूल

किया। इनकी तबलीग से बेशुमार सहाबा इस्लाम लाए जिनमें बाज़ अहम नाम यह हैं, हज़रत उसमान गनी, हज़रत जुबैर बिन अवाम, हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ, हज़रत तल्हा बिन उबैदुल्लाह और हज़रत साद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हुम। इस्लाम लाने के बाद से मौत तक पूरी ज़िन्दगी एलाए कलेमतुल्लाह और एहयाए इस्लाम में लगा दी। अल्लाह तआला के अता करदा माल को अल्लह तआला के रास्ते में आप बड़ी सखावत और फरावानी से खर्च करते थे, मसलन बेशुमार गुलामों को खरीद कर आज़ाद किया जिनमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुअज़्ज़िन हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु भी हैं। आपकी साहबज़ादी हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के इंतिकाल के बाद निकाह फरमाया। आपने मदीना की तरफ हिजरत नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ की। कुरान करीम की आयत (सूरह तौबा 40) में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़िक्र है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुकुम से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात से पहले चंद नमाज़ें हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ही ने इमामत करके सहाबा को पढ़ाईं। इंतिकाल के दिन हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ मिलकर नमाज़े फजर की इमामत की। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद सहाबाए किराम के मशवरे से आपको खलीफा बनाया गया। आपकी खिलाफत के चंद अहम काम यह हैं:

— हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर को मुल्के शाम रवाना किया जो कैसर की फौज को शिकस्त देकर सही सालिम वापस आया।

— मुरतदीन, ज़कात न देने वाले और दाइयाने नुबूवत से क़िताल करके नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद पैदा हुए तमाम फितनों को खत्म किया।

— मज़कूरा फितनों को खत्म करने में बेश्मार हुफ्फाज़े किराम शहीद हुए, चुनांचे हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु की राय पर आपने कुरान करीम को एक जगह जमा कराया।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु का 13 हिजरी में इंतिक़ाल हुआ। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के हुजरा में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पहलू में दफन हुए। आपकी उम्र तक़रीबन 63 साल और ख़िलाफ़त 11 हिजरी से 13 हिजरी तक दो साल तीन महीने दस दिन रही।

हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु (ख़िलाफ़त 13 हिजरी से 23 हिजरी तक)

आपका नाम उमर बिन खत्ताब, कुन्नियत अबू हफ्स और लक़ब फारूक (हक़ को बातिल से अलग करने वाला) है। 6 नुबूवत में 33 साल की उम्र में इस्लाम लाए। आपसे पहले 39 मर्द इस्लाम क़बूल कर चुके थे। आपके क़बूले इस्लाम पर मुसलमानों ने तक़बीर बुलंद की। आपके इस्लाम लाने से मुसलमानों को बहुत तक़वियत मिली। तमाम जंगों में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रहे। कुरान करीम अगरचे हज़रत अबू बकर के अहदे ख़िलाफ़त में

जमा किया गया मगर यह तजवीज़ हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु की ही थी और उन्हीं के इसरार पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु इस अमल के लिए तैयार हुए थे। मदीना की तरफ हिजरत पोशिदा तौर पर नहीं बल्कि खुल्लम खुल्ला तौर पर की।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने मरज़ुल वफात में सहाबाए किराम के मशवरे से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को मुसलमानों का खलीफा बनाया। बाद में आपको अमीरुल मोमेनीन के खिताब से नवाजा गया। आपके अहदे खिलाफत में मुस्के इराक़, फारस, शाम और मिश्र फतह हुए, इस्लामी कैलेंडर का इफतिताह हुआ, कूफा और बसरा शहर आबाद किए गए, रमज़ान के महीने में नमाज़े तरावीह का जमाअत के साथ एहतेमाम शुरू हुआ, ज़कात की आमदनी के इंदेराज की गरज़ से बैतुल माल कायम किया गया।

26 ज़िलहिज्जा 23 हिजरी की सुबह आप मस्जिदे नबवी में नमाज़े फज़ की इमामत कर रहे थे कि फिरोज़ नामी मजूसी गुलाम ने खंजर से ज़ख्मी किया, चार दिनों के बाद 1 मुहर्रम 26 हिजरी को इंतिकाल फरमा गए। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के पहलू में दफन हुए। हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु की खिलाफत दस साल छः माह और चार दिन रही।

हज़रत उसमान गनी रज़ियल्लाहु अन्हु (खिलाफत 24 हिजरी से 35 हिजरी तक)

आपका नाम उसमान बिन अफ़फान, कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह और अबू उमर है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दो

साहबज़ादियां (रुक़य्या और उम्मे कुलसूम) यके बाद दीगरे आपके निकाह में आईं, इसलिए जुन्नूरैन के लक़ब से मशहूर हुए। दोबार हबशा हिजरत की फिर हबशा से मदीना को हिजरत फरमाई। आपने अल्लाह के रास्ते में बहुत माल खर्च फरमाया, जंगे तबूक के लश्कर की तैयारी के लिए बेशुमार माल व सामान अता फरमाए। जंगे बदर के अलावा तमाम जंगों में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रहे। हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद खलीफा बने। 35 हिजरी में 82 साल की उम्र में आपु सन्न करीम की तिलावत करते हुए शहीद हुए। जन्नतुल बकी में मदफून हैं। आपकी खिलाफत 11 साल, 11 माह और 13 दिन रही। आपकी खिलाफत में तूनिस मुल्क फतह हुआ। फुतूहात की वजह से इस्लामी ममलकत में बहुत ज़्यादा तौसी हुई जिसकी वजह से यह सोच कर कि कहीं कुरान करीम की क़िरात में इख़्तेलाफ़ रोबूमा न हो जाए आपने कुरान करीम को एक सहीफा (मुसहफ़े उसमानी) में जमा कराया और उस सहीफे के नुसखे तमाम रियासतों में भेजे गए, इस तरह कुरान करीम के एक नुसखा (मुसहफ़े उसमानी) पर उम्मते मुस्लिमा मुत्तहिद हो गई।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु

(खिलाफत 35 हिजरी से 40 हिजरी तक)

आपका नाम अली बिन अबी तालिब, कुन्नियत अबुल हसन और अबू तुराब है। आप नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचाज़ाद भाई और दामाद हैं। आपकी तरबियत नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर पर हुई। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

की सबसे छोटी साहबज़ादी हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से
 आपकी शादी हुई। आपने बचपन में भी कभी ^{बू} परस्ती नहीं की
 थी। 13 साल से कम की उम्र में इस्लाम लाए, बच्चों में सबसे पहले
 आप ही इस्लाम लाए थे। शबे हिजरत में अपनी जान को खतरे में
 डाल कर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बिस्तर पर
 सोए। वही लिखने वाले चंद सहाबा में से एक आप भी हैं। जंगे तबूक
 के मौके पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन्हें मदीना
 में खलीफा बना कर छोड़ा। सिवाए उस जंग के बाकी तमाम गज़व्व
 में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रहे। आपकी
 बहादुरी के कारनामे बहुत मशहूर हैं। आपकी इल्मी हैसियत बड़ी
 मुसल्लम थी हत्ताकि हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक
 मौके पर फरमाया कि हज़रत अली हम सबसे बढ़कर काजी हैं।
 हज़रत उसमान गनी रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद सहाबए
 किराम ने मशवरे के बाद आपको खलीफा बनाया। आपने चंद
 मसलेहतों की वजह से मुसलमानों का दारुल खिलाफत मदीना से
 इराक के शहर कूफा मुंतकिल कर दिया। पुलिस का शोबा बनाया।
 36 हिजरी में जंगे जमल और 37 हिजरी में जंगे सिप्फीन वाके हुई।
 17 रमज़ानुल मुबारक 40 हिजरी की सुबह को इब्ने मुलजिम के
 हाथों शहीद हो गए और कूफा ही में दफन किए गए। इस तरह
 आपकी कुल उम्र तक़रीबन 63 साल और आपकी खिलाफत चार साल
 और सात माह रही।

हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हु

आपका नाम हसन बिन अली है, आपकी वालिदा हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा हैं जो ङूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की साहबज़ादी हैं। रमज़ान 3 हिजरी में पैदा ण्ह ङूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने नवासे हज़रत हसन और हज़रत हुसैन से बहुत मोहब्बत किया करते थे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद इराक में मुसलमानों के इसरार पर हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने बैअते खिलाफत ली। दूसरी तरफ शाम में हज़रत मआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ पर बैअत की गई। मुमकिन था कि मुसलमानों के दरमियान एक और जंग शुरू हो जाए, लेकिन हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु इतिहाई ज़ाहिद व मुत्तकी और अल्लाह से डरने वाले थे, उन्होंने अपनी दूर अंदेशी से मुसलमानों को कत्ले आम से बचा कर हज़रत मआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ सुलह फरमा ली और खिलाफत से दस्तबरदार हो गए। 50 हिजरी में 47 साल की उम्र में मदीना में इत्तेकाल हुआ, जन्नतुल बकी में मदफून हैं।

खिलाफते राशिदा 11 हिजरी से 41 हिजरी तक (632-662)

खिलाफते बनू उमय्या 41 हिजरी से 132 हिजरी तक (662-750)

खिलाफते बनू अब्बासिया 132 हिजरी से 656 हिजरी तक (750-1258)

खिलाफते उसमानिया 698 हिजरी से 1342 हिजरी तक (1299-1924)

गरज़ ये कि 1924 में तकरीबन 1350 साल बाद मुसलमानों की एक मरकज़ी खिलाफत/हुकूमत खत्म हो गई।

हज़रत फातिमा बिनते मोहम्मद की मुख्तसर ज़िन्दगी के हालात

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की विलादत

हज़रत हसन व हुसैन की वालिदा और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सबसे छोटी साहबज़ादी हज़रत फातिमा ज़ोहरा रज़ियल्लाहु अन्हा की विलादत बेसते नबवी से तक्रीबन पांच साल पहले हज़रत खदीजा के बतन से मक्का में हुई। हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की विलादत के वक़्त नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र तक्रीबन 35 साल थी और यह वह वक़्त था जब काबा की तामीरे नौ हो रही थी। इसी तामीर के मौक़े पर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बेहतरीन तदबीर के साथ हज़्रे असवद को उसकी जगह रख कर आपने जंग के बहुत बड़े खतरे को टाला था और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस तदबीर ने अरब के तमाम कबीले में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़मत व एहतेराम में इज़ाफा कर दिया था।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तमाम औलादे नरीना की वफात बिल्कुल पचपन ही में हो गई थी, चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तीनों बेटों में से कोई भी बेटा 2 या 3 साल से ज़्यादा बाहयात न रह सका। चारों बेटियों में से भी तीन की क़ात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हयाते मुबारका में ही हो गई थी। हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिकाल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के छः महीने बाद हुआ। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चारों बेटियों में कोई भी बेटी 30 साल से ज़म्दा

बाहयात न रह सकी। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी के आखिरी सालों में तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तवज्जोहात व मोहब्बत का मरकज़ फितरी तौर पर हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा बन गई थीं, यूँ भी वह हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बहुत ही चहेती बेटी थीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चारों बेटियां मदीना के मशहूर क़ब्रिस्तान (अलबक़ी) में मदफून हैं।

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की तरबियत

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपनी वालिदा माजिदा हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के ज़ेरे साया तरबियत और परवरिश पाई। अभी हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा 15 साल की थीं कि मां की शफ़क़त से महरूम हो गईं। हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के इंतिक़ाल के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की खुसूसी तरबियत फरमाई। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आया (मुरब्बिया) हज़रत उम्मे ऐमन और हज़रत अली की वालिदा हज़रत फातिमा बिन्ते असद ने भी हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की तरबियत और परवरिश में एक अहम किरदार अदा किया। इनके अलावा हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की बहनों ने भी हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की हमा वक़्त दिलजोई फरमाई।

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुशाबह थीं

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा जिस वक़्त चलतीं तो आपकी चाल ढाल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बिल्कुल मुशाबह होती थी (मुस्लिम) इसी तरह हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की रिवायत है कि मैंने उठने बैठने और आदात व अतवार में हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से ज़्यादा किसी को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुशाबह नहीं देखा। (तिर्मिज़ी) गरज़ ये कि हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की चाल ढाल और गुफ्तगु वगैरह में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की झलक नुमायां नज़र आती थीं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा बचपन ही से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बड़ी खिदमत करती थीं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि एक मरतबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिदे हराम में नमाज़ पढ़ रहे थे कुरैश के चंद बदमआश ने शरारत की गरज़ से ऊंट की ओझड़ी लाकर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर डाल दी और खुशी से तालियां बचाने लगे। किसी ने हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को खबर दी तो वह दौड़ी दौड़ी आई और हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर से ओझड़ी उतार कर फेंक दी। इसी तरह एक मरतबा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक गली से गुज़र रहे थे कि किसी बदबख्त ने मकान की छत से आप

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सर मुबारक पर गंदगी फेंक दी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इसी हालत में घर तशरीफ लाए। हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने यह हालत देखी तो रोने लगीं और फिर सर मुबारक और कपड़ों को धोया।

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा न सिर्फ आम हालात में बल्कि सख्त तरीन हालात में भी निहायत दिलेरी और साबित क़दमी से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत करती थीं, चुनांचे जंगे उहद में जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दंदाने मुबारक शहीद हो गए थे और पेशानी पर भी ज़ख्म आए थे तो हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा उहद के मैदान पहुंचीं और अपने वालिदे मोहतरम के चेहरे को पानी से धोया और खून साफ किया। गरज़ ये कि हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपने वालिद की खिदमत का हक़ अदा किया।

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की मदीना को हिजरत

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का बचपन दीन के लिए तकलीफें सहने में बुझरा, हत्ताकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुरैश की तकलीफों से बचने के लिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को रफीक़े सफर बना कर मदीना को हिजरत फरमाई। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने अहल व अयाल को मक्का में छोड़ कर गए थे। कुछ मुद्दत के बाद नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने अहल व अयाल और हज़रत अबू बकर के अहल व अयाल को मदीना बुलाने का इंतज़ाम किया। इस तरह हज़रत

फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा अपने वालिद के पास मदीना हिजरत फरमा गईं।

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह

2 हिजरी में जंगे बदर के बाद जुहूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी सबसे छोटी बेटी हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह अपने चचाज़ाद भाई अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ कर दिया।

मुसनद अहमद में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का वाक्या खुद उनकी ज़बानी नक़ल किया गया है: जब मैंने जुहूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की साहबज़ादी हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में अपने निकाह का पैगाम देने का इरादा किया तो मैंने (दिल में) कहा कि मेरे पास कुछ भी नहीं है, फिर यह काम क्योंकिर अंजाम पाएगा? लेकिन उसके बाद ही दिल में जुहूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सखावत और नवाज़िश का खयाल आ गया, लिहाज़ा मैंने हाज़िरे खिदमत हो कर पैगामे निकाह दे दिया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सवाल फरमाया तुम्हारे पास (महर में देने के लिए) कुछ है? मैंने अर्ज़ किया नहीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुम्हारी ज़िरह कहां गई? मैंने कहा जी वह तो है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया उसको (बेच कर महर में) दे दो।

(वज़ाहत) अहले सीरत व मुअर्रिखीन ने लिखा है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान पर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी ज़िरह बेच दी जिसको हज़रत उसमान गनी ने खरीदी थी, लेकिन बाद में हज़रत उसमान गनी रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत

अली को यह ज़िह बतौर हदिया वापस कर दी थी। इस वाक्ये से महर की अदाएगी की अहमियत का अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने महर की अदाएगी के लिए हज़रत अली की पसंदीदा चीज़ को फरोख्त करवा दिया था।

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का महर

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के महर की मिक़दार के मुतअल्लिक़ चंद रिवायात वारिद हुई हैं जिनका खुलासए कलाम यह है कि हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का महर 400 दिरहम से 500 दिरम के दरमियान था। दिरहम चांदी का एक सिक्का हुआ करता था जो आम तौर पर 2.975 ग्राम चांदी पर मुशतमिल होता था। अगर 480 दिरहम वाली रिवायत को लिया जाए तो हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का महर 1428 ग्राम चांदी होगा जिसको उम्मतए मुस्लिमा महरए फातमी से जानती है। वल्लाहु आलम बिस सवाब।

(वज़ाहत) महर औरत का हक़ है, इसको निकाह के वक़्त मुतअय्यन और रुख़्सती से पहले अदा करना चाहिए। महर में हसबे इस्तिताअत दरमयाना रवी इख्तियार करनी चाहिए, न बहुत कम और न बहुत ज़्यादा। अल्लाह तआला ने इस मौजू की अहमियत के पेशे नज़र कुरान करीम में तक़रीबन 7 जगहों पर महर का ज़िक़्र फरमाया है, लिहाज़ा हमें महर ज़रूर अदा करना चाहिए। अगर हज़रत बड़ी रक़म महर में अदा नहीं कर सकते हैं और लड़की के घर वाले महर में बड़ी रक़म मुस्तअय्यन करने पर बज़िद हैं जैसा कि हमारे मुल्कों में आम तौर पर होता है तो हमें हस्बे इस्तिताअतु छ न

कुछ महर जरूर नक़द अदा करनी चाहिए (और बाकी मुअज्जल तैय कर लें) जैसा कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली की ज़िरह फरोख़्त करा के महर की अदाएगी कराई। आज हम जहेज़ और शादी के अखराजात में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते हैं, लेकिन महर की अदाएगी जो अल्लाह तआला का हुकुम है उससे कतराते हैं। अल्लाह तआला हम सबकी मगफिरत फरमाए, आमीन।

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का जहेज़

तमाम रिवायात जमा करने के बाद जन्नत में सारी औरतों की सरदार का जहेज़ सिर्फ़ चंद चीज़ों पर मुश्तमिल था।

- 1) एक चारपाई।
- 2) एक बिछौना।
- 3) एक चमड़े का तकिया जिसमें खज़ूर की छाल भरी हुई थी।
- 4) एक चक्की (बाज़ रिवायात में 2 चक्कियों का तज़केरा है)।
- 5) दो मशकीज़ा (जिसके ज़रिया कुएं वगैरह से पानी भर के लाया जाता है)।

(वज़ाहत) हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सबसे ज़्यादा प्यारी और चहेती साहबज़ादी थीं, उनको नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जन्नत की औरतों की सरदार बताया है, उनकी शादी किस सादगी से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अंजाम दी कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने निकाह का पैगाम दिया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के सामने इसका तज़केरा किया आप खामोश रहीं जो रिजामंदी की दलील हुआ

करती है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के निकाह के पैगाम को क़बूल फरमा लिया और महर मुतअय्यन करके उसी वक़्त चंद सहाबए किराम की मौजूदगी में निकाह पढ़ा दिया। चंद माह बाद सादगी के साथ रुख़सती हे गई। हदीस और तारीख की किताबों में मज़ूक़ हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को जो जहेज़ दिया था दर हकीक़त उसी रक़म से खरीदा था जो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने बतौर महर अदा की थी और जहेज़ भी इंतिहाई मुख़्तसर था जिसके लिए हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने न किसी से उधार लिया और न उसकी फेहरिस्त लोगों को दिखाई और न जहेज़ की चीज़ों की तशहीर की।

आज बेशतर लोग जहेज़ में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते हैं चाहे उसके लिए कितनी भी रक़म उधार लेनी पड़े और न चाहते हुए भी हर शख्स किसी न किसी हद तक इस में मुबतला है जिसकी इस्लाह की अशद ज़रूरत है, क्योंकि जहेज़ की कसरत की वजह से बेशुमार लड़के और लड़कियां शादी से रुके रहते हैं और समाज में बहुत सी बुराईयां फैलने का सबब भी जहेज़ है। लड़के या उनके घराने की तरफ से अब जहेज़ के लिए मुतअय्यन सामान या पैसों का आम तौर पर मुतालबा भी होने लगा है, नीज़ जहेज़ देने के पीछे एक दूसरे से सबक़त ले जाने का जज़्बा भी कार फरमा होता है चाहे उसके लिए नाजाएज़ तरीक़ों से माल हासिल करके ही खर्च करना पड़े जो जाएज़ नहीं है। अल्लाह तआला हम सब की इस मुहलिक बीमारी से हिफाज़त फरमाए, आमीन।

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की रुखसती

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की रुखसती सिर्फ़ इस तरह हुई कि हज़रत उम्मे ऐमन के साथ नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको दुल्हा के घर भेज दिया। यह दोनों जहाँ में सबसे अफ़ज़ल बशर की साहबज़ादी की रुखसती थी जिसमें न धूम धाम न पाल्की और न रूपय की बिखेर, न हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु घोड़े पर सवार हुए, न हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने बारात चढ़ाई, न आतिशबाजी के ज़रिये अपना माल फूँका। दोनों तरफ से सादगी से काम लिया गया, क़र्ज़ उधार लेकर कोई काम नहीं किया गया। आज हम सब हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मोहब्बत के बड़े बड़े दावे करते हैं, लेकिन उनकी इत्तिबा और इक़्तिदा 'म' अपनी और खानदान की ज़िल्लत समझते हैं।

वलीमा

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने दूसरे रोज़ (मुख़्तसर) अपना वलीमा किया जिसमें सादगी के साथ जो मुयस्सर आया खिला दिया। वलीमा मो जौ की रोटी, खज़ूरें, हरीरा, पनीर और गोश्त था। (सीरत सरवरे कौनैन, मुफ़्ती मोहम्मद आशिक़ इलाही मदनी)

काम की तक़सीम

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास कोई खादिम या खादिमा नहीं थी, इस लिए हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत अली अल्लाहु अन्हु के दरमियान काम को इस तरह तक़सीम कर दिया था कि हज़रत

फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा घर के अंदर के काम किया करती थीं, मसलन चक्की से आटा पीसना, आटा गूंधना, खाना पकाना और घर की सफाई वगैरह और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु घर से बाहर के काम अंजाम दिया करते थे। (जादुल मुआद)

तसबिहे फातमी

एक मरतबा हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में कुछ गुलाम और बांदियां आईं तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को मशवरा दिया कि इस मौके पर तुम हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में जा कर एक खादिम का मुतालबा करो जो तुम्हारी घरेलू ज़रूरियात में तुम्हारी मदद कर सके, चुनांचे हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा इसी गरज़ से हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुईं। उस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में कुछ लोग हाज़िर थे, इस लिए हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा वापस आ गईं। बाद में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा घर तशरीफ लाए तो उस वक़्त हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु भी मौजूद थे। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दरयाफ़्त किया कि फातिमा तुम उस वक़्त मुझ से क्या कहना चाहती थीं? हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा तो हया की बिना पर खामोश रहीं, लेकिन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! चक्की पीसने की वजह से फातिमा के हाथों में छाले और मशकिज़ा उठाने की वजह से जिस्म पर निशान पड़ गए हैं। इस वक़्त आपके पास कुछ

खादिम हैं तो मैंने ही इनको मशवरा दिया कि यह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एक खादिम तलब कर लें ताकि इस मशक्कत से बच सकें। हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह सुन कर फरमाया कि ऐ फातिमा! क्या तुम्हें एक ऐसी चीज़ न बता दूँ जो तुम्हारे लिए खादिम से बेहतर है। जब तुम रात को सोने लगे तो 33 मरतबा सुबहानल्लाह, 33 मरतबा अलहमदु लिल्लाह और 34 मरतबा अल्लाहु अकबर पढ़ लिया करो। (अबू दाऊद जिल्द 2 पेज 64) गरज़ ये कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी चहेती बेटी को खादिम या खादिमा नहीं दी बल्कि अल्लाह तआला की जानिब से इसका बेहतरीन बदला यानी तसबीहात अता फरमाई, इन तसबीहात को उम्मत मुस्लिमा तसबिहे फातमी से जानती है।

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के बाज़ फज़ाइल व मनाकिब
 रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया फातिमा मेरे जिस्म का टुकड़ा है, जिसने उसे नाराज़ किया उसने मुझे नाराज़ किया। दूसरी रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के रंज से मुझे रंज होता और उसकी तकलीफ से मुझे तकलीफ होती है। (मुस्लिम)

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब सफर में तशरीफ ले जाते तो सबसे आखिर में हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से मिल कर खाना होते थे और जब वापस तशरीफ लाते तो सबसे पहले हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास तशरीफ ले जाते थे। (मिशकात)

हज़रत हुज़ैफा रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैं नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुआ, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस वक़्त फरमाया कि बेशक यह फरिश्ता है जो ज़मीन पर आज की इस रात से पहले कभी नाज़िल नहीं हुआ, अपने रब से इजाज़त ले कर मुझे सलाम करने और बशारत देने के लिए आया है कि यक़ीनन हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा जन्नत की औरतों की सरदार हैं और हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा जन्नत के जवानों के सरदार हैं। (मिशाकत)

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात का बहुत शदीद रंज हुआ था, चूनांचे हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तदफ़ीन के बाद उन्होंने खादिमे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से ऐसी बात कही थी जिससे उनके दिली कर्ब व बेचैनी का इज़हार होता है और जो उनके दिली गम की अक्कासी करता है। हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फरमाया ऐ अनस! रसूलुल्लाह सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम के जिस्मे अतहर पर मिट्टी डालना तुम लोगों ने किस तरह गवारा कर लिया। (मिशकात पेज 547)

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की वालिदा हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा तीन बहर्नें और तमाम छोटे भाई हज़रत फातिमा की ज़िन्दगी में ही वफात पा गए थे और फिर आखिर में आप को बहुत चाहने वाले बाप की वफात हो गई, बाप की वफात पर जितना

भी रंज हुआ हो कम है। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इंतिकाल पर अगरचे हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने पूरे सब्र व ज़ब्त का मुज़ाहरा किया, लेकिन फिर भी हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा बहुत मगमूम रहा करती थीं चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा सिर्फ 6 माह ही बाहयात रह सकीं।

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की औलाद

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के बतन से तीन साहबज़ादे हसन, हुसैन और मोहसिन और दो साहबज़ादियां ज़ैनब और उम्मे कुलसूम पैदा हुईं। हज़रत मोहसिन का इंतिकाल बचपन में ही हो गया था। हज़रत हसन और हज़रत हुसैन के ज़रिया उनके नाना मोहतरम हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सिलसिलए नसब चला। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह खुसूसियत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की साहबज़ादी से जो नसल चली वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नसल समझी गई, वरना कायदा यह है कि इंसान की नसल उसके बेटों से चलती है।

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफात

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तकरीबन छः माह बाद हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा चंद रोज़ अलालत (बीमारी) के बाद 3 रमज़ानुल मुबारक 11 हिजरी को बाद नमाज़े मगरिब 29 साल की उम्र में इंतिकाल फरमा गईं और इशा की नमाज़ के बाद दफन कर दी गईं।

फातेह सिंध मोहम्मद बिन कासिम की ज़िन्दगी के मुख्तसर अहवाल

मोहम्मद बिन कासिम ताएफ में सक़फी क़बीले के एक मशहू खानदान के यहां 72 हिजरी में पैदा हुआ (आप ताबेईन में से थे)। अब्दुल मलिक बिन मरवान के ज़माने खिलाफत 75 हिजरी में हज्जाज बिन यूसुफ को मशरिकी रियासतों (इराक़) का हाकिमे आला बनाया गया। हज्जाज बिन यूसुफ ने अपने चाचा कासिम को बसरा शहर का वाली बनाया। मोहम्मद बिन कासिम अपने वालिद के साथ ताएफ से बसरा मुंतक़िल हो गए और वहीं तालीम व तरबियत पाई। हज्जाज बिन यूसुफ ने अपने खास फौजियों की ट्रेनिंग के लिए वासित शहर बसाया। इस शहर में मोहम्मद बिन कासिम की फौजी तरबियत हुई, चुनांचे सिर्फ 17 साल की उम्र में मोहम्मद बिन कासिम एक फौजी कमांडर की हैसियत से सामने आए।

मोहम्मद बिन कासिम सिंध के मुतअल्लिक बहुत सुना करते थे। खुलफाए राशिदीन के ज़माने में भी इस इलाक़े में जंगें हुईं। हज़रत अमीर मआविया के अहदे खिलाफत 40 हिजरी में मकरान इलाक़ेपर फतह हासिल हुई।

88 हिजरी में जज़ीरा याकूत (सैलान) के बादशाम ने अरबों से अच्छे तअल्लुक कायम करने के लिए एक जहाज़ इराक़ के लिए रवाना किया जिसमें यतीम और बेवा मुस्लिम औरतें थीं। जब यह जहाज़ सिंध के बन्दरगाह (दीबल) से गुज़रा तो सिंध के कुछ लोगों ने इस

जहाज़ को लूट लिया। हज्जाज बिन यूसुफ ने सिंध के बादशाह से जहाज़ और मुस्लिम औरतों की रिहाई का मुतालबा किया, मगर उसने रिहाई करने से इंकार कर दिया। हज्जाज बिन यूसुफ ने दो मरतबा लश्कर कुशाई की मगर नाकामी हुई। जब हज्जाज बिन यूसुफ को यकीन हो गया कि मुस्लिम औरतें और फौज के जवान दीबल के जेलों में बन्द हैं और सिंध का बादशाह अरबों से दुश्मनी की वजह से उनको छोड़ना नहीं चाहता है तो हज्जाज बिन यूसुफ ने सिंध के तमाम इलाकों को फतह करने के लिए 90 हिजरी में एक बड़े लश्कर को मोहम्मद बिन कासिम की क़यादत में सिंध रवाना किया। मोहम्मद बिन कासिम ने सिर्फ 2 साल में अल्लाह के फज़ व करम से 92 हिजरी तक सिंध के बेशुमार इलाके फतह कर लिए। 92 हिजरी में सिंध के राजा दाहिर की क़यादत में सिंधी प़ौ से फैसलाकुन जंग हुई जिसमें सिंध का राजा मारा गया और मोहम्मद बिन कासिम की क़यादत में मुसलमानों को फतह हुई। गरज़ ये कि सिर्फ 20 साल की उम्र में मोहम्मद बिन कासिम फातेह सिंध बन गए। 95 हिजरी तक सिंध के दूसरे इलाके हत्ताकि पंजाब के बाज़ इलाके मोहम्मद बिन कासिम की क़यादत में मुसलमानों ने फतह कर लिए।

मोहम्मद बिन कासिम ने सिंध पर फतह हासिल करने के बाद जूही हिन्द (मौजूदा हिन्दुस्तान) की हुदूद में दाखिल होने का इरादा किया नए बादशाह सुलैमान बिन अब्दुल मलिक का हुकुम पहुंचा कि फौरन इराक वापस आ जाओ। वलीद बिन अब्दुल मलिक के बाद सुलैमान बिन अब्दुल मलिक खलीफा बने। नए खलीफा सुलैमान बिन अब्दुल

मलिक और मोहम्मद बिन कासिम के खानदान के साथ तअल्लुकात अच्छे नहीं रहे। मोहम्मद बिन कासिम को यकीन था कि मेरा इराक वापस जाना मौत को दावत देना है। सिंध के लोगों और फौज के ज़िम्मेदारों ने मोहम्मद बिन कासिम को वापस जाने से मना किया, लेकिन मोहम्मद बिन कासिम ने खलीफा के हुकुम की नाफरमानी करने से इंकार किया और इराक वापस गए। सुलैमान बिन अब्दुल मलिक ने दुशमनी व इनाद में मोहम्मद बिन कासिम को जेल में बन्द कर दिया। मुख्तलिफ तरह से तकलीफें दीं। गरज़ 95 हिजरी में फातेह सिंध मोहम्मद बिन कासिम सिर्फ 23 साल की उम्र में अल्लाह को प्यारा हो गया।

इमाम अबू हनीफा (80 हिजरी से 150 हिजरी) हयात और कारनामे

हज़रत इमाम हनीफा के मुख्तसर हालाते ज़िन्दगी

आपका इस्मे गिरामी नोमान और कुन्नियत अबू हनीफा है। आपकी विलादत 80 हिजरी में इराक़ के कूफ़ा शहर में हुई। आप फारसी नस्ल थे। आपके वालिद का नाम साबित था और आपके दादा नोमान बिन मरज़बान काबुल के अअयान व अशराफ में बड़ी फहम व फिरासत के मालिक थे। आपके परदादा मरज़बान फारस के एक इलाक़े के हाकिम थे। आपके वालिद हज़रत साबित बचपन में ही हज़रत अली की खिदमत में लाए गए तो हज़रत अली ने आप और आपकी औलाद के लिए बरकत की दुआ फरमाई जो ऐसी क़बूल हुई कि इमाम अबू हनीफा जैसा अज़ीम मुहद्दिस व फकीह और खुदा तरस इंसान पैदा हुआ।

आपने ज़िन्दगी के इब्तिदाई दिनों में ज़रूरी इल्म की तहसील के बाद तिजारत शुरू की, लेकिन आपकी ज़ेहानत को देखते हुए इल्मे हदीस की मारूफ शख्सियत आमिर शाबी कूफी (17 हिजरी से 104 हिजरी) जिन्हें पांच सौ से ज़्यादा असहाबे रूस्न की ज़ियारत का शरफ हासिल है ने आपको तिजारत छोड़ कर मज़ीद इल्मी कमाल हासिल करने का मशवरा दिया, चुनांचे आपने इमाम शाबी कूफी के मशवरे पर इल्मे कलाम, इल्मे हदीस और इल्मे फिक़ह की तरफ तवज्जोह फरमाई और ऐसा कमाल पैदा किया कि इल्मी व अमली दुनिया में इमाम आज़म कहलाए। आपने कूफा, बसरा और बग़दाद के बेशुमार

शैखों से इल्मी इस्तिफादा करने के साथ हुसूले इल्म के लिए मक्का, मदीना और मुल्के शाम के बहुत से असफार किए। एक वक़्त ऐसा आया कि अब्बासी खलीफा अबू जाफर मंसूर ने हज़रत इमाम अबू हनीफा को मुल्क के काज़ी होने का मशवरा दिया, लेकिन आपने माज़रत चाही तो वह अपने मशवरे पर इसरार करने लगा, चुनांचे आपने सराहतन इंकार कर दिया और क़सम खाली कि वह यह ओहदा क़बूल नहीं कर सकते जिसकी वजह से 146 हिजरी में आपको कैद कर दिया गया। इमाम साहब की इल्मी शोहरत की वजह से कैदखाना में भी तालीमी सिलसिला जारी रहा और इम्माम मोहम्मद जैसे फ़कीह ने जेल में ही इमाम अबू हनीफा से तालीम हासिल की। इमाम अबू हनीफा की मक़बूलियत से खौफ़ज़दा खलीफ़ा वक़्त ने इमाम साहब को ज़हर दिलवा दिया। जब इमाम साहब को ज़हर का असर महसूस हुआ तो सज्दा किया और इसी हालत में वफात पा गए। तक्ररीबन पचास हज़ार अफराद ने नमाज़े जनाजा पढ़ी, बगदाद के खैज़रान क़ब्रिस्तान में दफन किए गए। 375 हिज्री में इस क़ब्रिस्तान के करीब एक बड़ी मस्जिद “जामे अल इमाम आज़म” तामीर की गई जो आज भी मौजूद है। गरज़ 150 हिजरी में सहाबा व बड़े बड़े ताबेईन से रिवायत करने वाला एक अज़ीम मुहद्दिस व फ़कीह दुनिया से रुखसत हो गया और इस तरह सिर्फ और सिर्फ अल्लाह तआला के खौफ से काज़ी के ओहदे को क़बूल न करने वाले ने अपनी जान का नज़राना पेश कर दिया, ताकि खलीफ़ा वक़्त अपनी मर्ज़ी के मुताबिक कोई फैसला न करा सके जिसकी वजह से मौलाए हकीकी नाराज़ हो।

हज़रत इमाम अबू हनीफा के बारे में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बशारत

मुफस्सिर कुरान शैख जलालुद्दीन सुयूती शाफई मिस्री (849 हिजरी से 911 हिजरी) ने अपनी किताब "तबयीज़ुस सहीफा फी मनाकिबिल इमाम अबी हनीफा" में बुखारी व मुस्लिम और दूसरी हदीस की किताबों में वारिद नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल "(अगर ईमान सुरय्या सितारे के करीब भी होगा तो अहले फारस में से बाज़ लोग उसको हासिल कर लेंगे। (बुखारी) अगर ईमान सुरय्या सितारे के पास भी होगा तो अहले फारस में से एक शख्स उसमें से अपना हिस्सा हासिल कर लेगा। (मुस्लिम) अगर इल्म सुरय्या सितारे पर भी होगा तो अहले फारस में से एक शख्स उसको हासिल कर लेगा। (तबरानी) अगर दीन सुरय्या सितारे पर भी मुअल्लक होगा तो अहले फारस में से कुछ लोग उसको हासिल कर लेंगे। (तबरानी)" ज़िक्र करने के बाद तहरीर फरमाया है कि मैं कहता हूँ कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इमाम अबू हनीफा (शैख नोमान बिन साबित) के बारे में उन अहादीस में बशारत दी है और यह अहादीस इमाम साहब की बशारत व फज़ीलत के बारे में ऐसे सरीह हैं कि उनपर कुक़मल एतेमाद किया जाता है। शैख इब्ने हजर अलहैसमी शाफई (909 हिजरी से 973 हिजरी) ने अपनी मशहूर व मारूफ किताब "अलखैरातुल हिसान फी मनाकिबि इमाम अबी हनीफा" में तहरीर किया है कि शैख जलालुद्दीन सूयूती के बाज़ तलामिज़ा ने फरमाया और जिस पर हमारे मशायख ने भी एतेमाद किया है कि उन अहादीस की मुराद बिला शुबहा इमाम अबू हनीफा

हैं, इस लिए कि अहले फारस में उनके आसरीन में से कोई भी इल्मे के उस दरजे को नहीं पहुंचा जिस पर इमाम साहब फायज़ थे।

(वज़ाहत) इन अहादीस की मुराद में इख्तिलाफे राय हो सकता है, मगर असरे कदीम से असरे हाज़िर तक हर ज़माने के मुहद्दिसीन व फुक्कहा व उलमा की एक जमाअत ने लिखा है कि इन अहादीस से मुराद हज़रत इमाम अबू हनीफा हैं। उलमाए शवाफे ने खास तौर पर इस कौल को मुदल्लल किया है जैसा कि शाफई मक्तबए फिक्र के दो मशहूर जय्यिद उलमा व मुफस्सिरे कुरान के अक्वाल ज़िक्र किए गए।

हज़रत इमाम अबू हनीफा के ताबइयत

हाफिज़ इब्ने हजर असकलानी (फन्ने हदीस के इमाम शुमार किए जाते हैं) से जब इमाम अबू हनीफा के मुतअल्लिक सवाल किया गया तो उन्होंने फरमाया कि इमाम अबू हनीफा ने सहाबए किराम की एक जमाअत को पाया, इसलिए कि वह 80 हिजरी में कूफा में पैदा हुए और वहां सहाबए किराम में से हज़रत अब्दुल्लाह बिन औफी मौजूद थे, उनका इंतिकाल इसके बाद हुआ है। बसरा में हज़रत अनस बिन मालिक थे और उनका इंतिकाल 90 या 93 हिजरी में हुआ है। इब्ने साद ने अपनी सनद से बयान किया है कि इसमें कोई हर्ज नहीं कि कहा जाए कि इमाम अबू हनीफा ने हज़रत अनस बिन मालिक को देखा है और वह तबक़ए ताबेईन में से हैं, नीज़ हज़रत अनस बिन मालिक के अलावा भी इस शहर में दूसरे सहाबए किराम उस वक़्त हयात थे।

शैख मोहम्मद बिन यूसुफ दिमश्की शाफई ने “उकूदुल जमान फी मनाकिबिल इमाम अबी हनीफा” के नवें बाब में जिक्र किया है कि इसमें कोई इख्तिलाफ नहीं है कि इमाम अबू हनीफा उस ज़माने में पैदा हुए जिसमें सहाबए किराम की कसरत थी।

अक्सर मुहद्दिसीन (जिनमें इमाम खतीब बगदादी, अल्लामा नववी, अल्लामा इब्ने हजर, अल्लामा ज़हबी, अल्लामा ज़ैनुल आबेदीन सखावी, हाफिज़ अबू नईम असबहानी, इमाम दारे कुतनी, हाफिज़ इब्ने अब्दुल बर और अल्लामा जौज़ी के नाम काबिले जिक्र हैं) का यही फैसला है कि इमाम अबू हनीफा ने हज़रत अनस बिन मालिक को देखा है। मुहद्दिसीन व मुहक्केकीन की तशरीह के मुताबिक सहाबी के लिए हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करना ज़रूरी नहीं है बल्कि देखना भी काफी है। इसी तरह ताबई का मामला है कि ताबई कहलाने के लिए सहाबिए रसूल से रिवायत करना ज़रूरी नहीं है बल्कि सहाबी का देखना भी काफी है। इमाम अबू हनीफा तो सहाबए किराम की एक जमाअत को देखने के अलावा बाज़ सहाबा खास कर हज़रत अनस बिन मालिक से आहादीस रिवायत भी की हैं।

गरज़ ये कि हज़रत इमाम अबू हनीफा ताबई हैं और आपका ज़माना सहाबा, ताबईन और तबे ताबईन का ज़माना है और यह वह ज़माना है जिस दौर की अमानत व दियानत और तक्वा का जिक्र अल्लाह तआला ने कुरान करीम (सूरह तौबा आयत 100) में फरमाया है। नीज़ नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान के मुताबिक यह बेहतरीन ज़मानों में से एक है। इसके अलावा उल्लू अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी हयात में ही हज़रत

इमाम अबू हनीफा के मुतअल्लिक बशारत दी थी जैसा कि बयान किया जा चुका जिससे हज़रत इमाम आजम अबू हनीफा की ताबईयत और फज़ीलत रोज़े रौशन की तरह वाज़ेह हो जाती है।

सहाबए किराम से हज़रत इमाम अबू हनीफा की रिवायात

इमाम अबू माशर अब्दुल करीम बिन अब्दुस समद मुक़री शाफई ने एक रिसाला तहरीर फरमाया है जिसमें उन्होंने इमाम अबू हनीफा की मुख्तलिफ सहाबए किराम से रिवायात नक़ल की है:

- (1) हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु।
- (2) हज़रत अब्दुल्लाह बिन जज़ाउज़ जुबैदी रज़ियल्लाहु अन्हु।
- (3) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु।
- (4) हज़रत मअक़िल बिन यसार रज़ियल्लाहु अन्हु।
- (5) हज़रत वासिला बिन असक्रा रज़ियल्लाहु अन्हु।
- (6) हज़रत आइशा बिन्त उज़्र रज़ियल्लाहु अन्हा।

(वज़ाहत) मुहद्दिसीन की एक जमाअत ने 8 सहाबा से इमाम अबू हनीफा का रिवायत करना साबित किया है, अलबत्ता बाज़ मुहद्दिसीन ने इससे इख़्तिलाफ किया है, मगर इमाम अबू हनीफा के ताबई होने पर जमहूर मुहद्दिसीन का इत्तिफाक है।

फुक्रहा व मुहद्दिसीन की बस्ती शहर कूफा

हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु के अहदे खिलाफत में मुस्के इराक फतह होने के बाद हज़रत साद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु की इजाज़त से 17 हिजरी में कूफा शहर बसाया, क़बाइले अरब में से फुसहा को आबाद

किया गया। हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे जलीलुल क़दर सहाबी को वहां भेजा ताकि वह कुरान व सुन्नत की रौशनी में लोगों की रहनुमाई फरमाएं। सहाबए किराम के दरमियान हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु की इल्मी हैसियत मुसल्लम थी, खुद सहाबए किराम भी मसाइले शरइया में उनसे रुजू फरमाते थे। उनके मुतअल्लिक हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशादात हदीस की किताबों में मौजूद हैं।

इब्ने उम्मे अब्द (यानी अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु) के तरीक़ को लाज़िम पकड़ो। जो कुरान पाक को उस अंदाज में पढ़ना चाहे जैसा नाज़िल हुआ था तो उसको चाहिए कि इब्ने उम्मे अब्द (यानी अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु) की किरात के मुताबिक़ पढ़े। हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में फरमाया कि वह इल्म से भरा हुआ एक ज़र्फ़ है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर फारूक और हज़रत उस्मान गनी रज़ियल्लाहु अन्हुमा के अहदे खिलाफत में अहले कूफा को कुरान व सुन्नत की तालीम दी। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के अहदे खिलाफत में जब दारुल खिलाफत कूफा मुंतक़िल कर दिया गया तो कूफा इल्म का गहवारा बन गया। सहाबए किराम और ताबईन की एक जमाअत खास कर हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके शागिर्दों ने इस बस्ती को इल्म व अमल से भर दिया। सहाबए किराम के दरमियान फ़कीह की हैसियत रखने वाले हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु का इल्मी वरसा

हज़रत इमाम अबू हनीफा के मशहूर उस्ताज़ शैख हम्माद और मशहूर ताबेईन शैख इब्राहीम नखई व शैख अल्क़मा के ज़रिये इमाम अबू हनीफा तक पहुंचा। शैख हम्माद सहाबिए रसूल हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु के भी सबसे करीब और मोतमद शागिर्द हैं। शैख हम्माद की सोहबत में इमाम अबू हनीफा 18 साल रहे और शैख हम्माद के इंतिकाल के बाद कूफा में उनकी मसनद पर इमाम अबू हनीफा को ही बैठाया गया। गरज़ ये कि इमाम अबू हनीफा हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु के इल्मी वरसा के वारिस बने, इसी लिए हज़रत इमाम अबू हनीफा हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायात और उनके फैसले को तरजीह देते हैं, मसलन अहादीस की किताबों में वारिद हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायात की बिना पर हज़रत इमाम अबू हनीफा ने नमाज़ में रूकसे पहले और बाद में रफे यदैन् न करने को राजेह करार दिया है। हज़रत इमाम अबू हनीफा का इसमें गिरामी नोमान बिन साबित कुन्नियत अबू हनीफा है।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के अहदे खिलाफत में तदवीन हदीस और इमाम अबू हनीफा

खलीफा हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के खास इहतिमाम से वक़्त के दो जय्यिद मुहद्दिस शैख अबू बकर बिन अलहज़म और मोहम्मद बिन शहाब ज़ोहरी की ज़ेरे निगरानी अहादीसे रसूल को किताबी शकल में जमा किया गया। अब तक यह अहादीस मुंतशिर हालतों में ज़बानों और सीनों में महफूज़ चली आ रही थीं। इस्लामी तारीख में इन्ही दोनों मुहद्दिस को हदीस का मुदव्विने अव्वल कहा जाता है।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी हयाते तय्यिबा में उम्मी तौर पर अहादीस लिखने से मना फरमा दिया था ताकि कुरान व हदीस एक दूसरे से मिल न जाएं, अलबत्ता बाज़ फुक़हा सहाबा (जिन्हें कुरान व हदीस की इबारतों के दरमियान फर्क़ मात्मा था) को नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हयाते तय्यिबा में भी अहादीस लिखने की महदूद इजाज़त थी। खुलफ़ाए राशिदीन के अहद में जब कुरान करीम तदवीन के मुख्तलिफ़ मराहिल से गुज़र कर एक किताबी शकल में उम्मत मुस्लिमा के हर फर्द के पास पहुंच गया तो ज़रूरत थी कि कुरान करीम के सबसे पहले पहले मुफस्सिर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अहादीस को भी मुदव्वन किया जाए, चुनांचे अहादीसे रसूल का मुकम्मल ज़खीरा जो मुंतशिर औराक और जबानों पर जारी था इतिहाई एहतियात के साथ हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की अहदे खिलाफत में मुरत्तब किया गया। अहादीसे नबविया के उस ज़खीरे की सनद में उम्मन दो रावी थे एक सहाबी और ताबेई। इन अहादीस के ज़खीरे में ज़ईफ़ या मौज़ू होने का एहतेमाल भी नहीं था। नीज़ यह वह मुबारक दौर था जिसमें असमाउर रिजाल के इल्म का वजूद भी नहीं आया था और न उसकी ज़रूरत थी, क्योंकि हदीसे रसूल बयान करने वाले सहाबए किराम और ताबेईन इज़ाम या फिर तबे ताबेईन हज़रात थे और उनकी अमानत व दियानत और तक़वा का ज़िक्र अल्लाह तआला ने कुरान करीम (सूरह तौबा 100) में फरमाया है।

हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा को इन्हीं अहादीस का ज़खीरा मिला थे, चुनांचे उन्होंने कुरान करीम और अहादीस के इस ज़खीरे से इस्तिफ़ादा फरमा के उम्मत मुस्लिमा को इस तरह मसाइले शरइया

से वाक़िफ़ कराया कि 1300 साल गुज़र जाने के बाद भी तक्ररीबन 75 फीसद उम्मत मुस्लिमा उसपर अमल पैरा है और एक हज़ार साल से उम्मत मुस्लिमा की अक्सरियत इमाम अबू हनीफ़ा की तफ़सीर व तशरीह और वज़ाहत व बयान पर ही अमल करती चली आ रही है। इमाम अबू हनीफ़ा को अहादीसे रसूल सिर्फ़ दो वास्तों (सहाबी और ताबई) से मिली हैं, बल्कि बाज़ अहादीस इमाम अबू हनीफ़ा ने सहाबए किराम से बराहे रास्त भी रिवायत की हैं। दो वास्तों से मिली अहादीस को अहादीस सुनाई कहा जाता है जो सनद के एतेबार से हदीस की आला किस्म शुमार होती है। बुखारी और दूसरी हदीस की किताबों में दो वास्तों की कोई भी हदीस मौजूद नहीं है। तीन वास्तों वाली यानी अहादीसे सुलासियात बुखारी में सिर्फ़ 22 हैं, उनमें से 20 अहादीस इमाम बुखारी ने इमाम अबू हनीफ़ा के शागिर्दों से रिवायत की हैं।

80 हिजरी से 150 हिजरी तक इस्लामी हुकूमत और हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा

इमाम अबू हनीफ़ा की विलादत 80 हिजरी में उमवी खलीफ़ा अब्दुल मलिक बिन मरवान के दौरै हुकूमत में हुई, जिसका इंतिकाल 86 हिजरी में हुआ, उसके बाद उसका बेटा वलीद बिन अब्दुल मलिक तख्त नशीन हुआ। 10 साल हुकुमरानी के बाद 96 हिजरी में उसका भी इंतिकाल हो गया फिर उसका भाई सुलैमान बिन अब्दुल मलिक जानशीन बना। 3 साल की हुकुमरानी के बाद 99 हिजरी में यह भी रुखसत हुआ, लेकिन सुलैमान बिन अब्दुल मलिक ने अपनी वफ़ात से पहले हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ को अपना जानशीन मुक़रर

करके ऐसा कारनामा अंजाम दिया जिसको तारीख कभी नहीं भुला सकती। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ का दौर ख़िलाफ़त (99 हिजरी से 101 हिजरी) अगरचे निहायत मुख़्तसर रहा मगर ख़िलाफ़ते राशिदा का ज़माना लोगों को याद आ गया, हत्ताकि रिआया में उनका लक़ब खलीफ़े ख़ामिस (पांचवां खलीफ़ा) करार पाया। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के दौर ख़िलाफ़त में इमाम अबू हनीफ़ा की उम्र (19-21) साल थी। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के कारनामों में एक अहम कारनामा तदवीने हदीस है जिसकी तदवी का मुख़्तसर बयान गुज़र चुका, गरज़ ये कि तदवीने हदीस का अहम दौर इमाम अबू हनीफ़ा ने अपनी आंखों से देखा है। इमाम अबू हनीफ़ा ने इस्लामी दौर की दो बड़ी हुकूमतों (बनू उमय्या और बनू अब्बास) को पाया। ख़िलाफ़ते बनू उमय्या के आखिरी दौर में हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा का हुकुमरानों से इख़्तिलाफ़ हो गया था जिसकी वजह से आप मक्का चले गए और वहीं सात साल रहे। ख़िलाफ़ते बनू अब्बास के क़याम के बाद आप फिर कूफ़ा तशरीफ़ ले आए, अब्बासी खलीफ़ा अबू जाफ़र मंसूर हुकूमत की मज़बूती के लिये इमाम अबू हनीफ़ा की ताईद चाहता था जिस के लिये उसने मुल्क का ख़ास ओहदा पेश किया मगर आपने हुकूमती मामलात में दखल अंदाज़ी से माज़रत चाही, क्योंकि हुकुमरानों के अग़राज़ व मक़ासिद से इमाम अबू हनीफ़ा अच्छी तरह वाकिफ़ थे, इसी वजह से 146 हिजरी में आपको जेल में कैद कर दिया गया, लेकिन जेल में भी आपकी मक़बूलियत में कमी नहीं आई और वहां भी आपने क़ुरान व हदीस और फ़िक़ह की तालीम जारी रखी, चुनांचे इमाम मोहम्मद ने जेल में ही आपसे तालीम हासिल की। हुकुमरानों ने इसपर ही बस

नहीं किया बल्कि रोज़ाना 20 कोड़ों की सजा भी मुक़रर की (ख़तीब अलबगदादी जिल्द 13 पेज 328)। 150 हिजरी में इमाम साहब दो पानी से दारे बक्का की तरफ कूच कर गए। इमाम अहमद बिन हमबल इमाम अबू हनीफा के आजमाइशी दौर को याद करके रोया करते थे और उनके लिए दुआये मगफिरत किया करते थे। (अलखैरातुल हिसान जिल्द 1 पेज 59)

हज़रत इमाम अबू हनीफा और इल्मे हदीस

इमाम अबू हनीफा से अहादीस की रिवायत हदीस की किताबों में कसरत से न होने की वजह से बाज़ लोगों ने यह तअस्सुर पेश किया है कि इमाम अबू हनीफा की इल्मे हदीस में महारत कम थी, हालांकि गौर करें कि जिस शख्स ने सिर्फ बीस साल की उम्र इल्मे हदीस पर तवज्जोह दी हो, जिसने सहाबा, ताबईन और तबे ताबईन का बेहतरीन ज़माना पाया हो, जिसने सिर्फ एक या दो वास्तों से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अहादीस सुनी हो, जिसने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद जैसे जलीलुल क़दर फ़कीह सहाबी के शागिर्दों से 18 साल तरबियत हासिल की हो, जिसने उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ का अहदे खिलाफ़त पाया हो जो तदवीने हदीस का सुनहरा दौर रहा है, जिसने कूफा, बसरा, बगदाद, मक्का मदीना और मुल्के शाम के ऐसे असातज़ा से अहादीस पढ़ी हो जो अपने ज़माने के बड़े बड़े मुहद्दिस रहे हों, जिसने क़ुरान व हदीस की रौशनी में हज़ारों मसाइल का इस्तिम्बात किया हो, क़ुरान व हदीस की रौशनी में किए गए जिसके फैसले को हज़ार साल के अरसे सेज़्यादा उम्मते मुस्लिमा नीज़ बड़े बड़े उलमा व मुहद्दिसीन व मुफ़स्सेरीन

तसलीम करते चले आए हों, जिसने फ़िक्रह की तदवीन में अहम स्ने अदा किया हो, जो सहाबिए रसूल हज़रत अब्दुल्लाह बिन समूद का इल्मी वारिस बना हो, जिसने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद जैसे फ़क़हा सहाबा के शागिर्दों से इल्मी इस्तिफ़ादा किया हो, जिसके तलामजा बड़े बड़े मुहद्दिस, फ़कीह और इमामे वक़्त बने हों तो उसके मुतअल्लिक़ ऐसा तअस्सुर पेश करना सिर्फ़ और सिर्फ़ गुब्ब व इनाद और इल्म की कमी का नतीजा है। यह ऐसा ही है कि कोई शख्स हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उसमान गनी रज़ियल्लाहु अन्हु के मुतअल्लिक़ कहे कि उनको इल्मे हदीस से मारेफ़त कम थी, क्योंकि उनसे गिन्ती के चंद अहादीस हदीस की किताबों में मरवी हैं, हालांकि उन हज़रात का कसरते रिवायत से इजतिनाब दूसरे असबाब की वजह से था जिसकी तफ़सीलात किताबों में मौजूद हैं। गरज़ ये कि इमाम अबू हनीफ़ा फ़कीह होने के साथ साथ अज़ीम मुहद्दिस भी थे।

हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा और हदीस की मशहूर किताबे

अहादीस की मशहूर किताबें (बुखारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, नसई, इब्ने माजा, तबरानी, बैहकी, मुसनद अहमद, मुसनद इब्ने हिब्बान, मुसनद अहमद बिन हमबल वगैरह) इमाम अबू हनीफ़ा की वफ़ात के तक्ररीबन 150 साल बाद लिखी गई हैं। इन मजूक़ा किताबों के मुसन्निफ़ीन इमाम अबू हनीफ़ा की हयात में मौजूद ही नहीं थे, उनमें से अक्सर इमाम अबू हनीफ़ा के शगिर्दों के शगिर्द हैं। मशहूर हदीस की किताबों की तसनीफ़ से पहले ही इमाम अबू हनीफ़ा

के मशहूर शगिर्द (काजी अबू युसूफ और इमाम मोहम्मद) ने इमाम अबू हनीफा के हदीस और फिकहा के दुरुस को किताबी शकल में मुरत्तब कर दिया था जो आज भी दस्तयाब हैं। मशहूर हदीस की किताबों में उम्मून चार या पांच या छ वास्तों से अहादीस जिक्र की गई हैं जबकि इमाम अबू हनीफा के पास अक्सर अहादीस सिर्फ दो वास्तों से आई थीं, इस लिहाज़ से इमाम अबू हनीफा को जो अहादीस मिली हैं वह असहहुल असानदीद के अलावा अहादीसे सहीहा, मरफू, मशहूर और मुतवातिर का मक़ाम रखती हैं। गरज़ ये कि जिन अहादीस की बुनियाद पर फिकह हनफी मुरत्तब किया गया वह उम्मून सनद के एतेबार से आला दरजे की अहादीस हैं।

हज़रत इमाम अबू हनीफा के असातज़ा

इमाम अबू हनीफा ने तक़रीबन चार हज़ार मशायख से इल्म हासिल किया, खुद इमाम हनीफा का क़ौल है कि मैंने कूफा बसरा का कोई ऐसा मुहद्दिस नहीं छोड़ा जिससे मैंने इल्मी इस्तिफादा न किया हो। तफसीलात के लिए सवानेह इमाम अबू हनीफा का मुतालआ करें, इमाम अबू हनीफा के चंद अहम असातज़ा हसबे जैल हैं:

शैख हम्माद बिन अबी सुलैमान (वफात 120 हिजरी) शहर कूफा के इमाम व फकीह शैख हम्माद हज़रत अनस बिन मालिक के सबसे करीब और मोतमद शगिर्द हैं, इमाम अबू हनीफा उनकी सोहबत में 18 साल रहे। 120 हिजरी में शैख हम्माद के इंतिक़ाल के बाद इमाम अबू हनीफा ही उनकी मसनद पर फायज़ हुए। शैख हम्माद मशहूर व मारुफ मुहद्दिस व ताबई शैख इब्राहीम नखई के भी खुसूसी

शगिर्द हैं। इसके अलावा शैख हम्माद हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद के इल्मी वारिस और नाइब भी शुमार किए जाते हैं।

इमाम अबू हनीफा की दूसरी बड़ी दरसगाह शहर बसरा थी जो इमामुल मुहद्दिसीन शैख हसन बसरी (वफात 110 हिजरी) के उलूमे हदीस से मालामाल थी, यहां भी इमाम अबू हनीफा ने इल्मे हदीस का भरपूर हिस्सा पाया।

शैख अता बिन अबी रबाह (वफात 114 हिजरी) मक्का में मुक्कीम शैख अता बिन अबी रबाह से भी इमाम अबू हनीफा ने भरपूर इस्तिफादा किया। शैख अता बिन अबी रबाह ने बेशुमार सहाबए किराम खास कर हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा, हज़रत अबू हुऱैरा रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से इस्तिफादा किया था। शैख अता बिन अबी रबाह सहाबिए रसूल हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के खुसूसी शगिर्द शुमार किए जाते हैं।

शैख इकरमा बरबरी (वफात 104 हिजरी) यह हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के खुसूसी शगिर्द हैं। कम व बेश 70 मशहूर ताबईन इनके शगिर्द हैं, इमाम अबू हनीफा भी उनमें शामिल हैं। मक्का में इमाम अबू हनीफा ने इनसे इल्मी इस्तिफादा किया।

मदीना के सात फुकहा में से हज़रत सुऱैमान और हज़रत सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर से इमाम अबू हनीफा ने अहादीस की सिमाअत की है। यह सातों फुकहा मशहूर व मारुफ ताबईन थे। हज़रत सुऱैमान उम्मुल मोमेनीन हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा के परवरदा गुलाम हैं, जबकि हज़रत सालिम हज़रत उमर फारूक

रज़ियल्लाहु अन्हु के पोते हैं जिन्होंने अपने वालिद सहाबिए रूस हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर से तालीम हासिल की थी।

मुल्के शाम में इमाम औज़ाई और इमाम मकहूल से भी इमाम अबू हनीफा ने इल्म हासिल किया।

दूसरे मुहद्दिसीन के तर्ज़ पर इमाम अबू हनीफा ने अहादीस की सिमाअत के लिए हज के असफार का भरपूर इस्तिमाल किया, चुनांचे आपने तकरीबन 55 हज अदा किए। हज की अदाएंगी से पहले और बाद में मक्का और मदीना में क़याम फरमा कर कुरान व सुन्नत को समझने और समझाने में वाफिर वक़्त लगाया। बू उमय्या के आखिरी अहद में जब इमाम अबू हनीफा का हुकुमरानों से इख्तिलाफ हो गया था तो इमाम अबू हनीफा ने तकरीबन 7 साल मक्का में मुक़ीम रह कर तालीम व तअल्लुम के सिलसिले को जारी रखा।

हज़रत इमाम अबू हनीफा के शगिर्द

सीरतुन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुसन्निफे अव्वल “अल्लामा शिबली नोमानी” ने अपनी मशहूर व मारूफ किताब “सीरतुन नोमान” में लिखा है कि इमाम अबू हनीफा के दर्स का हल्का इतना कुशादा था कि खलीफए वक़्त की हुदूदे हुकूमत इससे ज़्यादा कुशादा न थीं। सैकड़ों उलमा व मुहद्दिसीन ने इमाम अबू हनीफा से इल्मी इस्तिफादा किया। इमाम शाफई फरमाया करते थे कि जो शख्स इल्मे फिक़ह में कमाल हासिल करना चाहे उसको इमाम अबू हनीफा के फिक़ह की तरफ रुख करना चाहिए और यह भी फरमाया कि अगर इमाम मोहम्मद (इमाम अबू हनीफा के शगिर्द) मुझे न मिलते तो शाफई, शाफई न होता बल्कि कुछ और होता।

इमाम अबू हनीफा के चंद मशहूर शागिर्दों के नाम हसबे ज़ैल हैं जिन्होंने अपने उस्ताद के मसलक के मुताबिक़ दर्स व तदरीस का सिलसिला जारी रखा। काज़ी अबू यूसूफ़, इमाम मोहम्मद बिन हसन अश शैबानी, इमाम जुफ़र बिन हुज़ैल, इमाम यहया बिन सईद अलक़त्तान, इमाम यहया बिन ज़करिया, मुहद्दिस अब्दुल्लाह बिन मुबारक, इमाम वकी बिन ज़र्ह और इमाम दाऊद ताई वगैरह।

काज़ी अबू यूसूफ़ (वफ़ात 182 हिजरी) आपका नाम याक़ूब बिन इब्राहीम अंसारी है। 113 हिजरी या 117 हिजरी में कूफ़ा में पैदा हुए। इमाम अबू यूसूफ़ को मआशी तंगी की वजह से तालीमी सिलसिला जारी रखना मुश्किल हो गया था मगर इमाम अबू हनीफा ने इमाम यूसूफ़ और उनके घर के तमाम अखराजात बर्दाशत करके उनको तालीम दी। ज़िहानत, तालीमी शौक और इमाम अबू हनीफा की खुसूसी तवज्जोह की वजह से काज़ी अबू यूसूफ़ एक बड़े मुहद्दिस व फ़कीह बन कर सामने आए। फ़िक़ह हनफी की तदवीन में काज़ी अबू यूसूफ़ का अहम किरदार है। अब्बासी दौरें हुकूमत में काज़िस्स कुज़ात के ओहदे पर फायज़ हुए। यह पहला मौक़ा था जब किसी को काज़ियुल कुज़ात के ओहदे पर फायज़ किया गया। इमाम अबू हनीफा से बाज़ मसाइल में इख़िलाफ़ भी किया, लेकिन पूरी ज़िन्दगी खास कर काज़ियुल कुज़ात के ओहदे पर फायज़ होने के बाद फ़िक़ह हनफी को ही फैलाया। मसलके इमाम अबू हनीफा पर उसूले फ़िक़ह की सबसे पहली किताब तहरीर फरमाई। 182 हिजरी वफ़ात पाई।

इमाम मोहम्मद बिन हसन अश शैबानी (वफ़ात 189 हिजरी) आप 131 हिजरी में दमिशक़ में पैदा हुए फिर फ़ुक़हा व मुहद्दिसीन के शहर कूफ़ा चले गए, वहां बड़े बड़े मुहद्दिसीन और फ़ुक़हा की सोहबत

पाई। इमाम अबू हनीफा से तक़रीबन दो साल जेल में तालीम हासिल की। इमाम अबू हनीफा की वफात के बाद काज़ी अबू युसूफ से तालीम मुकम्मल की, फिर मदीना जा कर इमाम मालिक से हदीस पढ़ी। सिर्फ बीस साल की उम्र में मसनदे हदीस पर बैठ गए। यह फिकह हनफी के दूसरे अहम बाज़ू शुमार किए जाते हैं, इसी लिए इमाम अबू युसूफ और इमाम मोहम्मद को सहिबैन कहा जाता है। इमाम मोहम्मद के बेशुमार शगिर्द हैं, लेकिन इमाम शाफई का नाम खास तौर पर ज़िक्र किया जाता है। इमाम मोहम्मद की हदीस की मशहूर किताब “मुअत्ता इमाम मोहम्मद” आज भी हर जगह मौजूद है। इमाम मोहम्मद की तसनीफात बहुत हैं, फिकह हनफी का मदार इन्हीं किताबों पर है, इनकी दर्जे ज़ैल किताबें मशहूर व मारुफ हैं जो फतावा हनफिया का माखज़ हैं।

अलमबसूत, अलजामेउस सगीर, अलजामेउस कबीर, अज़ ज़ियादात, अस सियरुस सगीर, अस सियरुल कबीर।

इमाम जुफर (वफात 158 हिजरी) इमाम जुफर बिन हुज़ैल 110 हिजरी में पैदा हुए। इब्तिदाई उम्र में इल्मे हदीस से खास शगफ व तअल्लुक था, अल्लामा नववी ने इनको साहिबुल हदीस में शुमार किया है, फिर इल्मे फिकह की जानिब तवज्जोह की और आखिर उम्र तक यही मशगला रहा। बसरा के काज़ी के हैसियत से भी रहे। आप हज़रत इमाम अबू हनीफा के खास शागिर्दों में से हैं। आप फिकह हनफी के अहम सुतून हैं।

इमाम यहया बिन सईद अलक़त्तान (वफात 198 हिजरी) आप 120 हिजरी में पैदा हुए। अल्लामा ज़हबी ने लिखा है कि फन अस्माउर रिजाल (सनदे हदीस पर बहस का इल्म) सबसे पहले उन्होंने ही शुरू

किया है, फिर उसके बाद दूसरे हज़रात मसलन इमाम यहया बिन मईन ने इस इल्म को बाकायदा फन की शकल दी। इमाम यहया बिन सईद अलकत्तान ने हज़रत इमाम अबू हनीफा से इल्मी इस्तिफादा किया है।

इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक (वफात 181 हिजरी) यह भी इमाम अबू हनीफा के शागिर्दों में से हैं। इल्मे हदीस में बड़ी महारत हासिल की, यहां तक कि अमिरुल मोमिनीन फिल हदीस का लक़ब मिला। 118 हिजरी में पैदा हुए और 181 हिजरी में वफात पाई। इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक का क़ौल है कि अगर अल्लाह तआला इमाम अबू हनीफा और सुफयान सौरी के ज़रिये मेरी मदद न फरमाता तो मैं एक आम इंसान से बढ़ कर कुछ न होता।

तदवीने फिक़ह

असरे क़दीम व जदीद में इल्मे फिक़ह की मुश्तलिफ अल्फाज़ के साथ तारीफ की गई है, मगर उनका खुलासा कलाम यह है कि कुरान व हदीस की रौशनी में अहकामे शरइया का जानना फिक़ह कहलाता है। अहकामे शरइया के जानने के लिए सबसे पहले कुरान करीम और फिर अहादीस की तरफ रुजू किया जाता है। कुरान व हदीस में किसी मसअले की वज़ाहत न मिलने पर इजमा व क़यास (यानी कुरान व हदीस की रौशनी में नए मसाइल के लिए इजतेहाद) की तरफ रुजू किया जाता है।

फिक़ह को समझने से पहले इमाम अबू हनीफा के एक अहम उसूल व ज़ाबते को ज़ेहन में रखें कि मैं पहले किताबुल्लाह और सुन्नते नबवी को इख्तियार करता हूं, जब कोई मसअला किताबुल्लाह और सुन्नते रसूल में नहीं मिलता तो सहाब किराम के अक़वाल व

अमल को इख्तियार करता हूँ। उसके बाद दूसरों के फतावे के साथ अपने इजतिहाद व क़यास पर तवज्जोह देता हूँ। जब मसअला क़यास और इजतिहाद पर आ जाता है तो फिर मैं अपने इजतिहाद को तरजीह देता हूँ। यह हज़रत इमाम अबू हनीफा का अपना खुद बनाया हुआ उसूल नहीं है बल्कि उस मशहूर हदीस की इत्तिबा है जिसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु को वसीयत फरमाई थी। इसी तरह हज़रत इमाम अबू हनीफा का यह उसूल है कि अगर मुझे किसी मसअले में कोई हदीस मिल जाए चाहे उसकी सनद में कोई ज़ोफ भी हो तो मैं अपने इजतिहाद व क़यास को छोड़ कर उसको क़बूल करता हूँ।

फिक़ह का दार व मदार सहाबिए रसूल हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़ाते अक़दस पर है और इस फिक़ह की बुनियाद वह अहादीसे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं जिनको हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में ही हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु से सहाबए किराम मसाइले शरइया मालूम करते थे। कूफा शहर में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु कुरान व हदीस की रौशनी में लोगों की रहबूआई फरमाते थे। हज़रत अलक़मा बिन कैस कूफी और हज़रत असवद बिन यज़ीद कूफी हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु के खास शगिर्द हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु खुद फरमाते थे कि जो कुछ मैंने पढ़ा लिखा और हासिल किया वह सब कुछ अलक़मा को दे दिया, अब मेरी मालूमात अलक़मा से ज़्यादा नहीं है। हज़रत अलक़मा और हज़रत असवद के इंतिकाल के बाद

हज़रत इब्राहीम नखई कूफी मसनद नशीन हुए और इल्मे फिक़ह को बहुत कुछ वुसअत दी यहां तक कि उन्हें “फकीहुल इराक़” का लक़ब मिला। हज़रत इब्राहीम नखई कूफी के ज़माने में फिक़ह का गैर मुरत्तब ज़खीरा जमा हो गया था जो उनके शागिर्दों ने खास कर हज़रत हम्माद कूफी ने महफूज़ कर रखा था। हज़रत हम्माद कूफी के इस ज़खीरे को इमाम अबू हनीफा कूफी ने अपने शागिर्दों खास कर इमाम युसूफ, इमाम मोहम्मद और इमाम जुफर को बहुत मुनज़ज़म शकल में पेश कर दिया जो उन्होंने बाकायदा किताबों में मुरत्तब कर दिया, यह किताबें आज भी मौजूद हैं। इस तरह इमाम अबू हनीफा हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद के दो वास्तों से हकीकी वारिस बने और इमाम अबू हनीफा के ज़रिये हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद ने कुरान व सुन्नत की रौशनी में जो समझा था वह उम्मत मुस्लिमा को पहुंच गया। गरज़ ये कि फिक़ह हनफी की तदवीन उस दौर का कारनामा है जिसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खैरुल कुरून करार दिया और अहादीसे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुकम्मल हिफाज़त के साथ उसी ज़माने में किताबी शकल में मुरत्तब की गई।

(वज़ाहत) इन दिनों बाज़ हज़रात फिक़ह का ही इंकार करना शुरू कर देते हैं हालांकि कुरान व हदीस को समझ कर पढ़ना और इससे मसाइले शरइया का इस्तिंबात करना फिक़ह है। नीज़ कुरान व हदीस में बहुत सी जगह फिक़ह का ज़िक्र भी वज़ाहत के साथ मौजूद हैं। मशहूर हदीस की किताब (बुखारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, नसई, इब्ने माजा, तबरानी, बैहकी, मुसनद अहमद, मुसनद हिब्बान, मुसनद अहमद बिन हमबल वगैरह) की तालीफ से पहले ही इमाम

अबू हनीफा के शागिर्दों ने फिक्रह हनफी को किताबों में मुरत्तब कर दिया था। अगर वाकई फिक्रह काबिले रद है तो मजकूर हदीस की किताबों के मुसन्निफों ने अपनी किताब में फिक्रह की तरदीद में कोई बाब क्यों नहीं बनाया? या कोई दूसरी मुस्तक़िल किताब फिक्रह की तरदीद में क्यों तसनीफ नहीं की? गरज़ ये कि यह उन हज़रात के हठधरमी है, वरना कुरान व हदीस को समझ कर मसाइल का इस्तिंबात करना ही फिक्रह कहलाता है जिसे जमहूर मुहद्दिसीन व मुफस्सेरीन व उलमाए उम्मत ने तसलीम किया है।

(नुक्ता) फिक्रह हनफी का यह खुसूसी इमतिyayज़ है कि साबिक़ा हुकुमतों (खास कर अब्बासिया व उसमानिया हुकूमत) का 80 फीसद क़ानूने अदालत व फौजदारी फिक्रह हनफी रहा है और आज भी बेशतर मुस्लिम मुमालिक का क़ानूने अदालत फिक्रह हनफी पर कायम है। यह क़वानीन कुरान व हदीस की रौशनी में बनाए गए हैं।

हज़रत इमाम अबू हनीफा की किताबें

हज़रत इमाम अबू हनीफा ने दौराने दर्स जो अहादीस बयान की हैं उन्हें शागिर्दों ने “हद्दसना” और “अखबरना” वगैरह अल्फ़ाज़ के साथ जमा कर दिया। इमाम अबू हनीफा के दरसी इफ़ादात का नाम “किताबुल आसार” है जो दूसरी सदी हिजरी में मुत्तब हुई उस ज़माने तक किताबों की तालीफ़ बहुत ज़्यादा आम नहीं थी। “किताबुल आसार” उस दौर की पहली किताब है जिसने बाद के आने वाले मुहद्दिसीन के लिए तरतीब व तबवीब के राहनुमा उसूल फ़राहम किए। अल्लामा शिबली नोमानी ने “किताबुल आसार” के बहुत से नुस्खों की निशान दही की है लेकिन आम शोहरत चार नुस्खों को

हासिल है। इन नुस्खों में से इमाम मोहम्मद की रिवायत करदा किताब को सबसे ज़्यादा शोहरत व मक़बूलियत हासिल हुई।

“किताबुल आसार” बरिवायत इमाम मोहम्मद

“किताबुल आसार” बरिवायत काज़ी अबू युसूफ

“किताबुल आसार” बरिवायत इमाम जुफर

“किताबुल आसार” बरिवायत इमाम हसन बिन ज़ियाद

मसानीदे इमाम अबू हनीफा उलमाए किराम ने हज़रत इमाम अबू हनीफा की पंद्रह मसानीद शुमार की हैं जिसमें अइम्मए दीन्और हुफ्फाज़े हदीस ने आपकी रिवायात को जमा करके हमेशा के लिए महफूज़ कर दिया, उनमें से मुसनद इमाम आज़म इल्मी दुनिया में मशहूर है जिसकी बहुत सी शुरुहात भी लिखी गई हैं। इस सिलसिले में सबसे बड़ा काम मुक्के शाम के इमाम अबुल मुवायद खवारज़मी (वफात 665 हिजरी) ने किया है जिन्होंने तमाम मसानीद को बड़ी ज़खीम किताब जामेउल मसानीद के नाम से जमा किया है।

हज़रत इमाम अबू हनीफा के मशहूर शगिर्द इमाम मोहम्मद की मशहूर किताबें भी फिक़ह हनफी के अहम माखज़ हैं।

अलमबसूत, अलजामेउस सगीर, अलजामेउस कबीर, अज ज़ियादात, अस सियरुस सगीर, अस सियरुल कबीर।

हज़रत इमाम अबू हनीफा का तक़वा

किताब व सुन्नत की तालीम और फिक़ह की तदवीन के साथ इमाम साहब ने ज़ोहद व तक़वा और इबादत में पूरी ज़िन्दगी बसर की। रात का बेशतर हिस्सा अल्लाह तआला के सामने रोने, नफल नमाज़ पढ़ने और तिलावते कुरान में गुज़ारते थे। इमाम साहब ने इल्मे दीन

की खिदमत को ज़रिये मआश नहीं बनाया बल्कि मआश के लिए रेशम बनाने और रेशमी कपड़े तैयार करने का बड़ा कारखाना था जो सहाबिए रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत उमर बिन हु़रैस रज़ियल्लाहु अन्हु के घर में चलता था। इमाम अबू हनीफा का तअल्लुक़ खुशहाल घराने से था, इस लिए लोगों की खास तौर से अपने शागिर्दों की बहुत मदद किया करते थे। आपने 55 हज अदा किए।

हज़रत इमाम अबू हनीफा की शान में बाज़ उलमाए उम्मत के अक़वाल

इमाम अली बिन सालेह (वफात 151 हिजरी) ने इमाम अबू हनीफा की वफात पर फरमाया “इराक़ का मुफ़्ती और फ़कीह गुजर गया।” (मनाकिबे ज़हबी पेज 18)

इमाम मिसअर बिन किदाम (वफात 153 हिजरी) फरमाते थे कि “कूफा के दो शख्सों के सिवा किसी और पर रश्क नहीं आता। इमाम अबू हनीफा और उनका फ़िक्ह, दूसरे शैख हसन बिन सालेह और उनका जुहद व क़नाअत।” (तारीखे बग़दाद जिल्द 14 पेज 328)

मुल्के शाम के फ़कीह व मुहद्दिस इमाम औज़ाई (वफात 157 हिजरी) फरमाते थे “इमाम अबू हनीफा पेचीदा मसाइल को सब अहले इल्म से ज़्यादा जानने वाले थे।” (मनाकिब कुरदी पेज 90)

इमाम दाऊद ताई (वफात 160 हिजरी) फरमाते थे कि “इमाम अबू हनीफा के पास वह इल्म था जिसको अहले ईमान के दिल क़बूल करते हैं।” (अलखैरातुल हिसान पेज 32)

इमाम सुफयान सौरी (वफात 167 हिजरी) के पास एक शख्स इमाम अबू हनीफा से मुलाकात करके आया। इमाम सुफयान सौरी ने फरमाया तुम रूए ज़मीन के सबसे बड़े फकीह के पास से आ रहे हो। (अलखैरातुल हिसान पेज 32)

इमाम मालिक बिन अनस (वफात 179 हिजरी) फरमाते हैं कि “मैंने अबू हनीफा जैसा इंसान नहीं देखा।” (अलखैरातुल हिसान पेज 28)

इमाम वकी बिन जर्ह (वफात 195 हिजरी) फरमाते हैं “इमाम अबू हनीफा से बड़ा फकीह और किसी को नहीं देखा।”

इमाम यहया बिन मईन (वफात 233 हिजरी) इमाम अबू हनीफा के कौल पर फतवा दिया करते थे और उनकी अहादीस के हाफिज़ भी थे। उन्होंने इमाम अबू हनीफा की बहुत सारी अहादीस सुनी हैं। (जामे बयानुल उलूम, अल्लामा इब्ने बर जिल्द 2 पेज 149)

इमाम सुफयान बिन उयैना (वफात 198 हिजरी) फरमाते थे कि “मेरी आंखों ने अबू हनीफा जैसा इंसान नहीं देखा। दो चीजों के बारे में ख्याल था कि वह शहर कूफा से बाहर न जाएगी मगर वह ज़मीन के आखिरी किनारों तक पहुंच गई। एक इमाम हमज़ा की किरात और दूसरी अबू हनीफा का फिक़ह।” (तारीखे बग़दाद जिल्द 13 पेज 347)

इमाम शाफई (वफात 204 हिजरी) फरमाते हैं कि “हम सब इल्मे फिक़ह में इमाम अबू हनीफा के मोहताज हैं, जो शख्स इल्मे फिक़ह में महारत हासिल करना चाहे तो वह इमाम अबू हनीफा का मोहताज होगा।” (तारीखे बग़दादी जिल्द 23 पेज 161)

इमाम बुखारी के उस्ताद इमाम मक्की बिन इब्राहीम फरमाते हैं कि “इमाम अबू हनीफा परहेज़गार, आलमे आखिरत के रागिब और अपने

मुआसरीन में सबसे बड़े हाफिज़े हदीस थे।” (मनाकिबुल इमाम अबी हनीफा शैख मौफिक बिन अहमद मक्की)

इमाम मौफिक बिन अहमद मक्की इमाम बकर बिन मोहम्मद जरंजरी (वफात 152 हिजरी) के हवाले से तहरीर करते हैं कि इमाम अबू हनीफा ने किताबुल आसार का इतिखाब चालीस हजार अहादीस से किया है। (मनाकिब इमाम अबी हनीफा)

हज़रत इमाम अबू हनीफा के उलूम का नफा

हज़रत इमाम अबू हनीफा के इंतिकाल के बाद आपके शागिर्दों ने हज़रत इमाम अबू हनीफा के कुरान व हदीस व फिकह के दुरुस को किताबी शकल दे कर उनके इल्म के नफा को बहुत आम कर दिया है, खास कर जब आपके शगिर्द काज़ी अबू युसूफ अब्बासी हुकूमत में काज़ीयुल कुज़ात के उहदे पर फायज़ हुए तो उन्होंने कुरान व हदीस की रौशनी में इमाम अबू हनीफा के फैसलों से हुकुमती सतह पर अवाम को मुतआरफ कराया, चुनांचे चंद ही सालों में फिकह हनफी दुनिया के कोने कोने में रायज हो गया और उसके बाद यह सिलसिला बराबर जारी रहा हत्ताकि अब्बासी व उसमानी हुकूमत में मज़हबे अबी हनीफा को सरकारी हैसियत दे दी गई चुनांचे आज 1200 साल गुज़र जाने के बाद भी तकरीबन 75 फीसद उम्मत मुस्लिमा इसपर अमल पैरा है और हजार साल से उम्मत मुस्लिमा की अक्सरियत इमाम अबू हनीफा की कुरान व हदीस की तफसीर व तशरीह और वज़ाहत व बयान पर ही अमल करती चली आ रही है। हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, बंगलादेश और अफगानिस्तान के मुसलमानों की बड़ी अक्सरियत जो दुनिया में मुस्लिम आबादी का 55 फीसद से

ज्यादा है, इसी तरह तुर्की और रूस से अलग होने वाले मुमालिक नीज़ अरब मुमालिक की एक जमाअत कुरान व हदीस की रौशनी में इमाम अबू हनीफा के ही फैसलों पर अमल पैरा है।

मसादिर व मराजे

हज़रत इमाम अबू हनीफा की शख्सियत पर जितना कुछ मुख्तलिफ ज़बानों खास कर अरबी ज़बान में लिखा गया है वह उम्मान दूसरे किसी मुहद्दिस या फकीह या आलिम पर नहीं लिखा गया। यह इमाम अबू हनीफा की इल्मी व अमली खिदमात के क़बूल होने की बज़ाहिर अलामत है। हज़रत इमाम अबू हनीफा की शख्सियत के मुख्तलिफ पहलुओं पर जो किताबें लिखी गई हैं उनमें सेछकके नाम हस्बे ज़ैल हैं। शैख जलालुद्दीन सुयूती की किताब तबयीज़ुस सहीफा फी मनाकिबिल इमाम अबी हनीफा” से खुसूसी इस्तिफादा करके इस मज़मून को लिखा है। अल्लाह तआला इन तमाम मुसन्निफों को अजरे अज़ीम अता फरमाए, आमीन।

हज़रत इमाम अबू हनीफा की सवानेह हयात से मुतअल्लिक़ बाज़ अरबी किताबें

मनाकिबुल इमाम आज़म - शैख मुल्ला अली क़ारी (वफात 1014 हिजरी)

तरजुमतुल इमाम आज़म अबी हनीफा अन नोमान बिन साबित- इमाम खतीब बगदादी (वफात 392 हिजरी)

तबयीज़ुस सहीफा फी मनाकिबिल इमाम अबी हनीफा- अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती (वफात 911 हिजरी)

तुहफतुस सुलतान फी मनाकिबि नोमान- शैख काज़ी मोहम्मद बिन हसन बिन कास अबुल कासिम (वफात 324 हिजरी)

उक़दुल मरजान फी मनाकिबि अबी हनीफा नोमान- शैख अबू जाफर अहमद बिन मोहम्मद मिस्री तहावी (वफात 321 हिजरी)

उक़दुल जिमान फी मनाकिबिल इमाम आज़म अबू हनीफा नोमान- शैख मोहम्मद बिन युसूफ सालिही (वफात 943 हिजरी)

उक़दुल जिमान फी मनाकिबिल इमाम आज़म अबू हनीफा नोमान- मौलवी मोहम्मद मुल्ला अब्दुल कादिर अफगानी।

अखबार अबी हनीफा व असहाबिहि - शैख काज़ी अबी अब्दुल्लाह हुसैन बिन अली अस सैमरी (वफात 436 हिजरी)

फज़ाइल अबी हनीफा व अखबारुहु व मनाकिबुहु- शैख अबुल कासिम अब्दुल्लाह बिन मोहम्मद (वफात 330 हिजरी)

शकाएकुन नोमान फी मनाकिबिल इमाम आज़म अबी हनीफतुन नोमान- शैख जारुल्लाह अबुल कासिम ज़मख़शरी(वफात 538 हिजरी)

अलखैरातुल हिसान फी मनाकिबिल इमाम आज़म अबी हनीफा नोमान- शैख मुफ़्ती अल हिजाज़ शैख शहाबुद्दीन अहमद बिन हजर मक्की (वफात 973 हिजरी)

किताबु मनाज़िलिल अइम्मा अल अरबआ- इमाम अबू ज़करिया यहया बिन इब्राहीम (वफात 550 हिजरी)

मनाकिबुल इमाम अबी हनीफा व साहिबैहि अबी युसूफ व मोहम्मद बिन अलहसन- इमाम हाफिज़ अबी अब्दुल्लाह मोहम्मद बिन अहमद उसमान ज़हबी (वफात 748 हिजरी)

किताबु मकानतिल इमाम अबी हनीफा फी इल्मिल हदीस- शैख मोहम्मद अब्दुर रशीद नोमानी अलहिन्दी, तहकीक शैख अब्दुल फत्ताह अबू गुद्दह

अबू हनीफा नोमान व आराउहुल कलामिया- शैख शमसुद्दीन मोहम्मद अब्दुल लतीफ मिस्री।

अबू हनीफा नोमान (इमामुल अइम्मा अलफुकहा)- शैख वहबी सुलैमान गावजी।

तानीबुल खतीब अला मा साकहू फी तरजुमति अबी हनीफा मिनल अकाज़ीब- शैख मोहम्मद ज़ाहिद बिन हसन अल कौसरी।

अबू हनीफा, हयातुहू व असरूहू आराउहू व फिकहुहू- शैख मोहम्मद अबू ज़ोहरा।

मनाकिबुल इमाम आज़म अबी हनीफा (पहला अरैर दूसरा हिस्सा)- मौफिक बिन अहमद मक्की, मोहम्मद बिन शहाब इबनुल बज़ज़ार कुर्दी।

अइम्मतुल फिकहिल इस्लामी अबू हनीफा, शाफई, मालिक, इब्ने हमबल- शैख नूह बिन मुस्तफा रूमी हनफी।

मनाकिबुल इमाम आज़म अबी हनीफा- शैख मौफिक बिन अहमद अलख्वारज़मी।

अल जवाहिरुल मुज़ीअह फी तराजिमिल हनफिया- शैख अब्दुल कादिर कुरशी।

हयाते अबी हनीफा- शैख सैयद अफीफी।

तुहफतुल इखवान फी मनाकिबि अबी हनीफा- अल्लामा अहमद अब्दुल बारी आमूहल हदीदी।

अत्तालिकाति हिसान अला तुहफतिल इखवान फी मनाकिब अबी हनीफा- अल्लामा मोहम्मद अहमद मोहम्मद आमूह।

उकूदुल जवाहिरिल मुनीफा फी अदिल्लति मज़हबिल इमाम अबी हनीफा- अल्लामा मुहद्दिस सैयद मोहम्मद मुरतज़ा अज़ जुबैदी हुसैनी हनफी (वफात 1205 हिजरी)

हज़रत इमाम अबू हनीफा की सवानेह हयात से मुतअल्लिक बाज़ उर्दू किताबें

सीरतुन नोमान- अल्लामा शिबली नोमानी।

सीरते अइम्मा अरबआ- काज़ी अतहर मुबारकपुरी।

हज़रत इमाम अबू हनीफा की सियासी ज़िन्दगी- मौलाना मनाज़िर अहसन गीलानी।

मकामे अबू हनीफा- मौलाना सरफराज़ सफदर खान।

इमाम आज़म और इल्मे हदीस- मौलाना मोहम्मद अली सिद्दीकी कांधलवी।

इमाम आज़म अबू हनीफा: हालात व कमालात, मलफूज़ात- डाक्टर मौलाना खलील अहद थानवी (तबयीज़ुस सहीफा फी मनाकिबिल इमाम अबी हनीफा का तरजुमा)

तकलीदे अइम्मा और मकामे इमाम अबू हनीफा- मौलाना मोहम्मद इसमाईल संभली (राकिमुल हुरूफ के हकीकी दादा मोहतरम)

इमाम आज़म अबू हनीफा, हयात व कारनामे- मौलाना मोहम्मद अब्दुर रहमान मज़ाहिरी।

हज़रत इमाम अबू हनीफा पर इरजा की तोहमत - मौलाना नेमतुल्लाह आज़मी साहब।

इल्मे हदीस में इमाम अबू हनीफा का मक़ाम व मरतबा - मौलाना हबीबुर रहमान आज़मी साहब।

इमाम आज़म अबू हनीफा और मोतरेज़ीन - मौलाना मुफ्ती सैयद मेहदी हसन शाहजहांपूरी।

फकाहत इमाम आज़म अबू हनीफा- मौलाना खुदा बख्श साहब रब्बानी।

मलफूज़ाते इमाम अबू हनीफा- मुफ्ती मोहम्मद अशरफ उसमानी।

हदाइकुल हनफिया (इमाम अबू हनीफा से 1300 हिजरी तक दुनिया भर के एक हज़ार से ज़ायद हनफी उलमा व फुक्कहा का ज़िक्र)- मौलवी फकीर अहमद जेहलमी।

हज़रत इमाम अबू हनीफा के 100 किस्से- मौलाना मोहम्मद ओवैस सरवर।

इमाम आज़म अबू हनीफा के हैरतअंगेज़ वाक्यात- मौलाना अब्दुल क़य्यूम हक्कानी।

इमाम अबू हनीफा की ताबेइयत और सहाबा से उनकी रिवायत- मौलाना अब्दुश शहीद नोमानी।

इमाम आज़म अबू हनीफा शहीदे अहले बैत- मुफ्ती अबुल हसन शरीफुल्लाह अलकौसरी।

अत्तरिकुल अस्लम उर्दू शरह मुस्नदुल इमाम आज़म- मौलाना मोहम्मद ज़फर इक़बाल साहब।

इमाम अबू हनीफा की मुहद्दिसाना हैसियत- मौलाना सैयद नसीब अली शाह अलहाशमी, मौलाना मुफ्ती नेमत हक्कानी।

इमाम अबू हनीफा का आदिलाना दिफा (अल्लामा कौसरी की किताब तानीबुल खतीब का उर्दू तरजुमा)- हाफिज़ अब्दुल कुद्दूस खान।

हयात हज़रत इमाम अबू हनीफा (शैख अबू ज़ोहरा मिस्री की अरबी किताब का तरजुमा)- प्रोफेसर गुलाम अहमद हरीरी।

हज़रत इमाम अबू हनीफा की सवानेह हयात से मुतअल्लिक अंग्रेजी ज़बान में भी बहुत सी किताबें शाये हुई हैं, लेकिन अल्लामा शिबली नोमानी की किताब Imam Abu Hanifah: Life and Works का मुतालआ इंतिहाई मुफीद है।

एलाउस सुनन- असरे हाज़िर के जय्यिद आलिम व मुहद्दिस शैख ज़फर अहमद उसमानी थानवी ने हज़रत इमाम अबू हनीफा और उनके शागिर्दों से मंकूल तमाम मसाइले फिक्हिय्या को 22 जिल्दों में अहादीसे नबविया से मुदल्लल किया है। मुल्के शाम के मशहूर हनफी आलिम शैख अब्दुल फत्ताह अबू गुद्दह (वफात 1417 हिजरी) ने इस किताब की तकरीज़ तहरीर फरमाई है। अरबी ज़बान में तहरीर क़दा इस अज़ीम किताब की 22 मोटी जिल्दे हैं जो अरब व अजम में आसानी से हासिल की जा सकती हैं।

अल्लाह तआला इस खिदमत को क़बूल फरमा कर अजरे अज़ीम अता फरमाए आमीन।

शैख शाह इसमाईल शहीद और उनकी किताब तक़वियतुल ईमान

न सिर्फ़ बर्र सगीर (हिन्द, पाकिस्तान, बंगलादेश और अफगानिस्तान) में बल्कि पूरे आलमे इस्लामी में शैख शाह वलीउल्लाह की शख्सीयत इतिहाई मुसल्लम और काबिले क़दर है। बर्र सगीर में हदीस पढ़ने और पढ़ाने की सनद मुहम्मदिसीने किराम और फिर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक हज़रत शाह वलीउल्लाह के वास्ते से ही हो कर जाती है। बर्र सगीर का हर मक़तबे फ़िक्क अपना तअल्लुक़ शैख शाह वलीउल्लाह की शख्सीयत से जोड़ कर अपने हक़ पर होने को ज़ाहिर करता है। हज़रत शाह वलीउल्लाह और उनकी औलाद ने क़ुरान व हदीस की ख़िदमत के लिए अपनी ज़िन्दगियां वक़फ़ कर दी थीं।

शाह वलीउल्लाह के पोते शाह इसमाईल शहीद (1779-1831) ने भी अपनी पूरी ज़िन्दगी एलाये कलेमतुल्लाह, एहयाये इस्लाम और क़ुरान व हदीस की ख़िदमत में सर्फ़ की। उन्होंने तक्ररीबन 10 किताबें तहरीर फरमाईं। शाह इसमाईल शहीद ने न सिर्फ़ क़लमी जिहाद किया बल्कि अमली जिहाद में भी शिर्क़ त की, चुनांचे 1831 में बिलआख़िर बालाकोट के मक़ाम पर शहादत हासिल की।

शाह इसमाईल शहीद के ज़माने में इस इलाके में शिर्क़ और ~~झिन्दा~~ काफ़ी रायज हो गई थीं, चुनांचे उन्होंने अपनी ज़िन्दगी का बेशतर हिस्सा क़ुरान व हदीस की रौशनी में शिर्क़ और बिदआत की तरदीद और तौहीद व सुन्नत की जड़ें मज़बूत करने में सर्फ़ किया। इसी मक़सद को सामने रख कर उन्होंने 1826 में किताब तक़वियतुल

ईमान लिखी। यह किताब आज तक कितनी मरतबा शाये हो चुकी है इसका अंदाज़ा लगाना भी मुश्किल है, गरज़ लाखों लोगों ने इस किताब से फैज़याब हो कर अपनी ज़िन्दगी का रुख सीधा किया। शाह इसमाईल शहीद ने अपनी इस किताब में जुक्कान व हदीस की रौशनी में शिर्क और बिदआत की तरदीद की है। जिसपर बाज़ हज़रात ने गलत फैसला लेकर इस शख्स को काफिर कह दिया जिसने पूरी ज़िन्दगी कुरान व हदीस के मुताबिक गुजारी, लाखों लोगों ने उसके इल्म से फायदा हासिल करके अपनी उखरवी ज़िन्दगी की तैयारी की, जिसने अल्लाह तआला की रज़ा के हुसूल के लिए अपनी जान तक का नज़राना पेश कर दिया।

मैंने किताब का मुतालआ किया है, मुझे कहीं कोई ऐसी इबारत नहीं मिली जिसकी बुनियाद पर किसी आलिमे दीन को सिर्फ जुबज़ व एनाद की वजह से काफिर करार दिया जाए। मेरे अज़ीज़ दोस्तो! इस्लाम इसलिए नहीं आया कि छोटी छोटी बात पर मुसलमानों को भी दायरए इस्लाम से खारिज किया जाए, बल्कि इस्लाम का बुनियादी व अहम मक़सद यह है कि हर शख्स कल्मा लाइलाह इल्लल्लाह मोहम्मदुर रसूलुल्लाह पढ़ कर मुलसमान हो जाए और कल्मा के तकाज़ों पर अमल करके हमेशा हमेशा की जहन्नम से बच जाए। किसी इंतिकाल शुदा मुअय्यन शख्स को काफिर कहने का मतलब यह है कि आपने उसके लिए हमेशा हमेशा की जहन्नम का फैसला सादिर फरमा दिया। अल्लाह हम सबकी हिफाज़त फरमाए, आमीन। इस मौक़े पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशाद को भी याद रखें, अगर कोई शख्स किसी शख्स के लिए कहे काफिर! तो यह अल्फाज़ किसी एक को ज़रूर पहुंचेगा, या तो वह

वाकई काफिर होगा, वरना कहने वाला काफिर हो जाएगा। (बुखारी, मुस्लिम, मुअत्ता इमाम मालिक, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, इब्ने माजा, नसई, मुसनद अहमद)

अगर हमें किसी शख्स के मुसमान होने का इल्म होता है तो कितनी खुशी होती है, यकीनन खुशी की बात है कि वह हमेशा हमेशा की जहन्नम से बच गया अगर ईमान के साथ इस दुनिया से रुखसत हो जाए। मेरे अज़ीज़ दोस्तो! किसी शख्स को काफिर करार देने में हमें कभी भी जल्दबाज़ी से काम नहीं लेना चाहिए और न ही उसको फखरिया तौर पर बयान करना चाहिए।

अब्बास अली सिद्दीकी ने यह तहरीर किया है कि शाह इसमाईल शहीद ने इस किताब में लिखा है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एहतेराम बड़े भाई की तरह करना चाहिए और इसकी बिना पर कुफ़्र का फतवा लगाया गया है। किताब की पूरी इबारत यूँ है “तमाम इंसान आपस में भाई भाई हैं, जो बहुत बुजुर्ग हो वह बड़ा भाई है, उसकी बड़े भाई की सी ताज़ीम करो, बाकी सबका मालिक अल्लाह है, इबादत उसी की करनी चाहिए। मालूम हुआ कि जितने अल्लाह के मुकर्रब बन्दे हैं चाहे अम्बिया हों या औलिया हों वह सबके सब अल्लाह के बेबस बन्दे हैं और हमारे भाई हैं, मगर हक़ तआला ने उन्हें बड़ाई बख़शी है तो हमारे बड़े भाई की तरह हुए, हमें उनकी फरमांबरदारी का हुकुम हुआ, क्योंकि हम छोटे हैं लिहाज़ा उनकी ताज़ीम इंसानों की सी करो और उन्हें माबूद न बनाओ।” (पेज 134-135)

शाह इसमाईल शहीद का नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बड़े भाई से मुशाबहत देने का मक़सद वाज़ेह है कि नबी अकरम

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एहतेराम ज़रूरी है, उनका ज़्यादा से ज़्यादा एहतेराम किया जाए, लेकिन इस किस्म का एहतेराम नहीं किया जाए कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को माबूद बना दिया जाए जो कि बिल्कुल गलत है। इस इबारत की बिना पर किसी शख्स को कैसे काफिर कहा जा सकता है। अल्लाह तआला ने अपने पाक कलाम में इरशाद फरमाता है **जब तुम अपने हज के अरकान से फारिग हो जाओ तो तुम अल्लाह तआला का ज़िक्र करो जैसा कि बाप दादा का ज़िक्र करते हो बल्कि बाप दादा के ज़िक्र करने से भी ज़्यादा अल्लाह का ज़िक्र करो।** (सूरह बकरह 200) इस आयत में अल्लाह तआला ने अपने ज़िक्र करने को बाप दादा के ज़िक्र करने से मुशाबहत दी है, मगर इसका मतलब यह नहीं कि (अल्लाह की पनाह) अल्लाह तआला बाप दादा बन गया, बल्कि इसका वाज़ेह मतलब यह है कि हम अल्लाह तआला का कसरत से ज़िक्र करें।

मेरी तमाम हज़रात से खुसूसी दरखास्त है कि किसी मुअय्यन शख्स को काफिर कहने से बिल्कुल बाज़ रहें जबकि वह अल्लाह की वहदानियत और कुरान के किताबुल्लाह होने का इक़्रार करता हो और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आखरी नबी भी मानता हो, मज़ीद इसके कि कुरान व हदीस पर अमल पैरा भी हो। लिहाज़ा आप अगर किसी शख्स की तहरीर से मुत्तफ़िक्र नहीं हैं तो उसकी तरदीद कर सकते हैं लेकिन काफिर नहीं कह सकते हैं। वल्लाहु आलम बिस सवाब।

मुल्के शाम - फज़ीलत और तारीख

शाम सिरयानी ज़बान का लफ़्ज़ है जो हज़रत नूह अलैहिस सलाम के बेटे हज़रत साम बिन नूह की तरफ मंसूब है। तूफाने नूह के बाद हज़रत साम इसी इलाक़े में आबाद हुए थे। मुल्के शाम के बहुत से फ़ज़ाइल अहादीसे नबविया में ज़िक्र किए गए हैं, क़ुरान करीम में भी मुल्के शाम की सरज़मीन का बाबरकत होना बहुत सी आयात में ज़िक्र है। यह मुबारक सरज़मीन पहली जंगे अज़ीम तक उसमानी हुकूमत की सरपरस्ती में एक ही खित्ता थी, बाद में अंग्रेजों और अहले फ़्रांस की पालीसियों ने इस सरज़मीन को चार मुल्कों (सूरया, लेबनान, फलस्तीन और उर्दुन) में तकसीम करा दिया, लेकिन क़ुरान व सुन्नत में जहां भी मुल्के शाम का तज़केरा वारिद हुआ है इससे यह पूरा खित्ता मुराद है जो असरे हाज़िर के चार मुल्कों (सूरया, लेबनान, फलस्तीन और उर्दुन) पर मुशतमिल है। इसी सरज़मीन के मुतअल्लिक़ नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बहुत से इरशादात अहादीस की किताबों में महफूज़ हैं, मसलन इसी मुबारक सरज़मीन की तरफ हज़रत इमाम मेहदी हिजाज़े मुक़द्दस से हिजरत फरमा कर क़याम फरमाएंगे और मुसलमानों की क़यादत फरमाएंगे। हज़रत ईसा अलैहिस सलाम का नुज़ूल भी इसी इलाक़ा यानी दमिशक़ के मशरिक़ में सफेद मीनार पर होगा। गरज़ ये कि यह इलाक़ा क़यामत से पहले इस्लाम का मज़बूत किला व मर्क ज़ बनेगा। इसी मुबारक सरज़मीन में क़िबला अक्वल वाक़े है जिसकी तरफ नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबए किराम ने तकरीबन 16 या 18 महीने नमाज़ें अदा फरमाई हैं। इस क़िबला अक्वल का

क़याम मस्जिदे हराम (मक्का) के चालीस साल बाद हुआ। मस्जिदे हराम और मस्जिदे नबवी के बाद सबसे बाबरकत फज़ीलत की जगह मस्जिदे अक्सा है। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जज़ीरए अरब के बाहर अगर किसी मुल्क का सफर किया है तो वह सिर्फ़ मुक्के शाम है। इसी सरज़मीन में वाक़े मस्जिदे अक्सा की तरफ़ एक रात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मक्का से ले जाया गया और वहां आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तमाम अम्बिया की इमामत फरमा कर नमाज़ पढ़ाई, फिर बाद में इसी सरज़मीन से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आसमानों के ऊपर ले जाया गया जहां आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अल्लाह तआला के दरबार में हाज़िरी हुई। इस सफर में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जन्नत व जहन्नम के मुख्तलिफ़ मनाज़िर देखे और सात आसमानों पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुख्तलिफ़ अम्बियाए किराम से मुलाकात हुई। यह मुकम्मल वाक़या रात के एक हिस्से में अंजाम पाया। मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक्सा के इस सफर को इसरा और मस्जिदे अक्सा के दरबार में हाज़िरी के इस सफर को मेराज कहा जाता है।

अगरचे क़िबला अव्वल बैतुल मक़दिस हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु के अहदे खिलाफ़त में फतह हुआ लेकिन इसकी बुनियाद हज़रत उसामा बिन ज़ैद बिन हारसा रज़ियल्लाहु अन्हु के लशकर से पड़ चुकी थी जिसकी रवांगी का फैसला माहे सफर 11 हिजरी में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लिया था, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीमारी की खबर सुन कर यह लशकर मदीना के करीब खेमाज़न रहा। इस लशकर ने हज़रत

अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौरै खिलाफत में पहली फौजी मुहिम शुरू की।

मुल्के शाम में दीने इस्लाम पुंछने तक तकरीबन 1500 साल से सिरयानी ज़बान ही बोली जाती थी लेकिन मुल्के शाम के बाशिन्दों ने इतिहाई खुलूस व मोहब्बत के साथ दीने इस्लाम का इस्तिक़बाल किया और बहुत कम अरसे में अरबी ज़बान इनकी मादरी व अहम ज़बान बन गई, बड़े बड़े जय्यिद मुहद्दीसीन, फ़ुक़हा व उलमा इस सरज़मीन में पैदा हुए। दिमश्क के फतह होने के सिर्फ 26 या 27 साल बाद दिमश्क इस्लामी खिलाफत/हुकूमत का दारुस सलतनत बन गया। अल्लाह तआला ने इंसान व जिन्नात ज़मीन व सारी कायनात को पैदा किया। बाज़ इंसानों को मुंतख़ब करके उनको रसूल व नबी बनाया, इसी तरह ज़मीन के बाज़ हिस्सों (मसलन मक्का, मदीना और मुल्के शाम) को दूसरे हिस्सों पर फौक़ियत व फज़ीलत दी। अल्लाह तआला ने मुल्के शाम की सरज़मीन को अपने पैगम्बरों के लिए मुंतख़ब की, चुनांचे अम्बिया व रुसुल की अच्छी खासी तादाद इसी सरज़मीन में इंसानों की रहनुमाई के लिए मबऊस फरमाई गई। हज़रत इब्राहीम अलैहिस सलाम जैसे जलीलुल क़दर रसूल अपने भतीजे हज़रत लूत अलैहिस सलाम के साथ मुल्के इराक़ से हिज़रत फरमा कर मुल्के शाम में सुकूनत पज़ीर हुए। इसी मुक़द्दस सरज़मीन से हज़रत इब्राहीम अलैहिस सलाम ने मक्का के बहुत से सफर करके मक्का को आबाद किया और वहां बैतुल्लाह की तामीर की। हज़रत इब्राहीम अलैहिस सलाम की नसल के बेशुमार अम्बिया अलैहिस सलाम (हज़रत इसहाक़, हज़रत याक़ूब, हज़रत अय्यूब, हरत सुलैमान, हज़रत इलयास, हज़रत अलयसा, हज़रत ज़करिया, हज़रत

यहया और हज़रत ईसा अलैहिस सलाम) की यह सरज़मीन मसकन व मदफन बनी और उन्होंने इसी सरज़मीन से अल्लाह के बन्दों को अल्लाह की तरफ बुलाया। गरज़ ये कि मुसलमानों, ईसाइयों और यहूदियों के लिए यह सरज़मीन बहुत बाबरकत है। फिलहाल बैतुल मक़दिस की बाबरकत ज़मीन पर यहूदियों का कब्ज़ा है। अल्लाह तआला बैतुल मक़दिस को यहूदियों के चंगुल से आज़ाद फरमाए, मुसलमानों को फतहयाब फरमाए, अपने दीन की नुसरत फरमाए और हम सबको अपने दीने इस्लाम की खिदमत के लिए क़बूल फरमाए। क़यामत की बाज़ बड़ी निशानियों का ज़हूर भी इसी मुक़द्दस सरज़मीन पर होगा, चुनांचे हज़रत मेहदी इसी सरज़मीन से मुसलमानों की क़यादत संभालेंगे। दिमश्क के मशरिक में सफ़ेद मीनार पर नमाज़े फजर के वक़्त हज़रत ईसा अलैहिस सलाम का नुज़ूल होगा और उसके बाद हज़रत ईसा अलैहिस सलाम उम्मत मुस्लिमा की बाग़डोर संभालेंगे। दज्जाल और याजूज व माजूज जैसे बड़े बड़े फितने भी इसी सरज़मीन से ख़त्म किए जाएंगे। दुनिया के चप्पे चप्पे पर इसी इलाक़े की सरपरस्ती में मुसलमानों की हुकूमत कायम होगी। यमन से निकलने वाली आग लोगों को इसी बाबरकत सरज़मीन की तरफ हांक कर ले जाएगी और सब मोमिन इस मुक़द्दस सरज़मीन में जमा हो जाएंगे और फिर इसके बाद जल्द ही क़यामत कायम हो जाएगी।

क़ुरान करीम में इस बाबरकत ज़मीन का जिक़रे ख़ैर

“पाक है वह ज़ात जो अपने बन्दे को रात ही में मस्जिदे हक़ से मस्जिदे अक़सा तक ले गया जिसके आस पास हमने बरकत दे रखी

है।” (सूरह इसरा 1), (यह इलाका कुदरती नहरों और फलों की कसरत और अम्बिया का मस्कन व मदफन होने के लेहाज़ से मुमताज़ है, इस लिए इसको बाबरकत करार दिया गया)

“हमने तेज हवा को सुलैमान अलैहि सलाम के ताबे कर दिया जो उनके फरमान के मुताबिक़ इसी ज़मीन की तरफ चलती थी जहां हमने बरकत दे रखी है।” (सूरह अम्बिया 81) यानी मुल्के शाम की सरज़मीन। जिस तरह पहाड़ और परिंदे हज़रत दाऊद अलैहिस सलाम के लिए मुसख़्खर कर दिए गए थे इसी तरह हवा हज़रत सुलैमान अलैहिस सलाम के ताबे कर दी गई थी, वह तख़्त पर बैठ जाते थे और जहां चाहते महीनों की दूरी लम्हों में तैय करके वहां पहुंच जाते। हवा आपके तख़्त को उड़ा कर ले जाती।

“हज़रत मूसा अलैहिस सलाम ने कहा ऐ मेरी क़ौम वालो! इस मुक़द्दस ज़मीन में दाखिल हो जाओ जो अल्लाह तआला ने तुम्हारे नाम लिख दी है।” बनी इसराइल के मूरिस हज़रत याकूब अलैहिस सलाम का मस्कन बैतुल मुक़द्दस था, लेकिन हज़रत यूसुफ अलैहिस सलाम की इमारते मिस्र के ज़माने में यह लोग मिस्र जा कर आबूद हो गए थे। तब से उस वक़्त तक मिस्र ही में रहे जब तक हज़रत मूसा अलैहिस सलाम उन्हें रातों रात फिरऔन से छुप कर निकाल ले गए।

“हम इब्राहीम और लूत को बचा कर उस ज़मीन की तरफ ले गए जिसमें हमने तमाम जहां वालों के लिए बरकत रखी थी।” (सूरह अम्बिया 71) हज़रत इब्राहीम अलैहिस सलाम और उनके भतीजे हज़रत लूत अलैहिस सलाम इराक़ से मुक़द्दस सरज़मीन मुल्के शाम हिजरत फरमा गए थे।

“हमने उन लोगों को जो कि बिल्कुल कमज़ोर शुमार किए जाते थे इस सरज़मीन के मशरिक व मगरिब का मालिक बना दिया जिसमें हमने बरकत रखी है।” (सूरह आराफ 137) ज़मीन से मुराद शाम का इलाका फलस्तीन है जहां अल्लाह तआला ने अमालिका के बाद बनी इसराइल को गल्बा अता फरमाया।

इस सरज़मीन की फज़ीलत नबी रहमत की ज़बानी

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया ऐ अल्लाह! हमें बरकत अता फरमा हमारे मुल्क शाम में हमें बरकत दे हमारे यमन में। आपने यही कलेमात तीन या चार मरतबा दोहराए। (बुखारी, तिर्मिज़ी, मुसनद अहमद, तबरानी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जब मैं सोया हुआ था तो मैंने देखा कि अमूदुल किताब (ईमान) मेरे सर के नीचे से खींचा जा रहा है। मैंने गुमान किया कि उसको उठा ले लिया जाएगा तो मेरी आंख ने उसका तआकुब (पीछा) किया, उसका कस्द (इरादा) मुल्के शाम का था। जब जब भी शाम में फितने फैलेंगे वहां ईमान में इज़ाफा होगा। (मुसंद अहमद, तबरानी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मैंने ख्वाब में देखा कि कुछ लोग अमूदुल किताब (ईमान) को ले गए और उन्होंने मुल्के शाम का इरादा किया। जब जब भी फितने फैलेंगे तो शाम में अमन व सूकून रहेगा। (तबरानी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मैंने देखा अमूदुल किताब मेरे तकिये के नीचे से हटाया जा रहा है, मेरी आखों ने इसका पीछा किया तो पाया कि वह बुलंद नूर की मानिंद है, यहां

तक कि मैंने ज़ुमान किया वह इसको पसंद करता है और इसको शाम ले जाने का इरादा रखता है तो मैंने समझा कि जब जबभी फितने वाक़े होंगे तो शाम में ईमान मज़बूत होगा। (तबरानी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मैंने शबे मेराज में देखा कि फरिश्ते मोती की तरह एक सफ़ेद अमूद उठाए हुए हैं। मैंने पूछा तुम क्या उठाए हुए हो? उन्होंने कहा यह इस्लाम का सुतून है हमें हुकुम दिया गया है कि हम इसको मुल्के शाम में रख दें। एक मरतबा मैं सोया हुआ था तो मैंने देखा कि अमूदुल किताब मेरे तकिये के नीचे से निकाला जा रहा है। मैंने सोचा कि अल्लाह तआला ने इसको ज़मीन से ले लिया। जब मेरी आंख ने इसका पीछा किया तो देखा कि वह एक बुलंद नूर के मिस्ल मेरे सामने है यहां तक कि इसको मुल्के शाम में रख दिया गया। (तबरानी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अगर अहले शाम में फसाद बरपा हो जाए तो फिर तुम में कोई खैर नहीं है। मेरी उम्मत में हमेशा एक ऐसी जमाअत रहेगी जिसको अल्लाह तआला की मदद हासिल होगी और उसको नीचा दिखाने वाले कल क़यामत तक उस जमाअत को नुक़सान नहीं पहुंचा सकते हैं। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, तबरानी, सही इब्ने हिब्बान)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मेरी उम्मत की एक जमाअत हमेशा अल्लाह के अहक़ाम की पाबन्दी करेगी जिसको नीचा दिखाने वाले और मुख़ालफ़त करने वाले नुक़सान नहीं पहुंचा सकते। अल्लाह तआला का फैसला आने तक वह अल्लाह तआला के दीन पर क़ायम रहेंगे। मालिक बिन यख़ामिर रहमतुल्लाह अलैहि ने कहा ऐ अमीरुल मोमिनीन मैंने हज़रत मआज़ रज़ियल्लाहु

अन्हु से सुना है कि यह जमाअत मुल्के शाम में होगी। (ब्खारी, मुस्लिम, तबरानी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मेरी उम्मत में एक जमाअत हक के लिए लड़ती रहेगी और कयामत तक हक उन्हीं के साथ रहेगा। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने हाथ से मुल्के शाम की तरफ इशारा किया। (अब् दाऊद, मुसनद अहमद, तबरानी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मेरी उम्मत में एक जमाअत दिमश्क और बैतुल मकदिस के अतराफ में जिहाद करती रहेगी, लेकिन इस जमाअत को नीचा दिखाने वाले और इस जमाअत की मुखालफत करने वाले इस जमाअत को नुकसान नहीं पहुंचा पाएंगे और कयामत तक हक उन्हीं के साथ रहेगा। (रवाहु अबू याला)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया क़त्ल करने के दिन (जंग में) मुसलमानों का खेमा अलगौता में होगा जो दिमश्क के करीब वाके है। (मुसनद अहमद, अबू दाऊद)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मुसलमानों का खेमा अलगौता में होगा। इस जगह दिमश्क नामी एक शहर है जो शाम के बेहतरीन शहरों में से एक है। (सही इब्ने हिब्बान)

हज़रत औफ बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुआ जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक छोटे खेमे में मौजूद थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस वक़्त मुझे

क्रयामत की छः निशानियां बताई (1) मेरी मौत (2) बैतुल मक़दिस की फतह (3) मेरी उम्मत में अचानक मौतों की कसरत (4) मेरी उम्मत में फितना जो उनमें बहुत ज़्यादा जगह कर जाएगा (5) मेरी उम्मत में माल व दौलत की फरावानी कि अगर तुम किसी को 100 दीनार दोगे तो वह उस पर (कम समझने की वजह से) नाराज़ होगा (6) तुम्हारे और बनी असफर (सैहूनी ताकतों) में जंग होगी, उनकी फौज में 80 टुकड़ियां होंगी और हर टुकड़ी में 12000 फौजी होंगे। उस दिन मुसलमानों का खेमा अलगौता नामी जगह में होगा जो दिमश्क शहर के करीब में वाके है। (तबरानी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मुल्के शाम वालो! तुम्हारे लिए खैर और बेहतरी हो। शाम वालो! तुम्हारे लिए खैर और बेहतरी हो। सहाबा ने सवाल किया किस लिए या रसूलुल्लाह! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया रहमत के फरिश्तों ने खैर व भलाई के अपने बाज़ू इस मुल्क पर फैला रखे हैं (जिनसे ख़ूबी बरकतें इस मुक़दस खिल्ते में नाज़िल होती हैं) (तिर्मिज़ी, मुसनद अहमद)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया शाम की सरज़मीन से ही हश्र कायम होगा। (मुसनद अहमद, इब्ने माजा)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जहरत ईसा अलैहिस सलाम का नुज़ूल दिमश्क के मशरिक में सफेद मीनार पर होगा। (तबरानी)

इन दिनों इस बाबरकत खिल्ता खासकर सीरिया में मुसलमानों का नाहक खून बह रहा है। मज़मून लिखे जाने तक कई हज़ार मुसलमानों की जान जा चुकी है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम के कीमती अक़वाल की रौशनी में मुलसमान एक दूसरे के
 भाई और एक जिस्म के मिस्ल हैं लिहाज़ा हमारी दीनी व अखलकि
 जिम्मेदारी है कि हम अपनी दुआओं में इस खित्ते में अमन व सुकून
 के लिए अल्लाह तआला से खुसूसी दुआएं करें। अल्लाह तआला इस
 खित्ता के मुसलमानों को मुत्तहिद फरमा, इस्लाम के झंडे को बुलंद
 फरमा। अल्लाह तआला सूरया में मुसलमानों के अहवाल को सही
 फरमा। या अल्लाह! सूरया में मुसलमानों के खून खराबे को खत्म
 फरमा। अल्लाह तआला इस मुक़द्दस सरज़मीन में अमन व सुकून
 पैदा फरमा। अल्लाह तआला सूरया और फलस्तीन के मुसलमानों को
 मुत्तहिद हो कर इस्लाम मुखालिफ ताकतों से लड़ने वाला बना।
 अल्लाह तआला सूरया और फलस्तीन के मज़लूम मुसलमानों की
 मदद फरमा। अल्लाह तआला मुल्के शाम के मुसलमानों को दीने
 इस्लाम पर कायम रहने वाला बना। जो अनासिर मुल्क शाम के
 मुसलमानों में तफरका डालना चाहते हैं, अल्लाह तआला उनको
 नाकाम बना दे, उनको जलील कर दे, आमीन।

शैखुल हदीस मौलाना मोहम्मद ज़करिया कांधलवी

आज उम्मत मुस्लिमा खास कर बर्रे सगीर में रहने वाले मुलसमान मुख्तलिफ जमाअतों, गिरोहों और तंज़ीमों में मुक़सिम हो गए हैं। “हर फिरका और गिरोह समझता है कि वह ही हक़ पर है और दूसरे बातिल पर हैं।” (सूरह रूम 32)

कुरान व हदीस के मुतालाआ से वाज़ेह तौर पर मालूम होता है कि इख्तिलाफ़ फी नफ़सिही बुरा नहीं है बशर्ते इख्तिलाफ़ का बुनियादी मक़सद हक़ीक़त का इज़हार हो और इस इख्तिलाफ़ से किसी की दिल आज़ारी और एहानत मतलूब व मक़सूद न हो। इख्तिलाफ़ तो दौरे नबूवत में भी था। बाज़ उम्म में सहाबए किराम की राय एक दूसरे से मुख्तलिफ़ हुआ करती थी। बाज़ मवाक़े पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबए किराम से मशवरा लिया और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी राय के बजाए सहाबए किराम के मशवरे पर अमल किया, मसलन जंगे उहद के मौक़े पर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबए किराम के नुक्ताए नज़र पर अमल करके मदीना से बाहर निकल कर कुफ़फ़ारे मक्का का मुकाबला किया।

जंगे अहज़ाब से वापसी पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबए किराम की एक जमाअत को फ़ौरन बनू कुरैज़ा रवाना फरमाया और कहा कि असर की नमाज़ वहां जा कर पढ़ो। रास्ते में जब नमाज़े असर का वक़्त ख़त्म होने लगा तो सहाबए किराम में असर की नमाज़ पढ़ने के मुतअल्लिक़ इख्तिलाफ़ हो गया। एक जमाअत ने कहा कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के

फरमान के मुताबिक हमें बनू कुरैज़ा ही में जाकर असर पढ़नी चाहिए चाहे असर की नमाज़ कज़ा हो जाए। जबकि दूसरी जमाअत ने कहा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कहने का मंशा यह था कि हम असर की नमाज़ के वक़्त में ही बनू कुरैज़ा पहुंच जाएंगे, लेकिन अब चूंकि असर के वक़्त में बनू कुरैज़ा की बस्ती में पहुंच कर नमाज़े असर पढ़ना मुमकिन नहीं है, लिहाज़ा हमें असर की नमाज़ अभी पढ़ लेनी चाहिए। इस तरह सहाबए किराम दो जमाअतों में मुंकसिम हो गए, कुछ हज़रात ने नमाज़े असर वहीं पढ़ी, जबकि दूसरी जमाअत ने बनू कुरैज़ा की बस्ती में जाकर कज़ा पढ़ी। जब सुबह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बनू कुरैज़ा पहुंचे और इस वाक्ये से मुतअल्लिक तफसीलात मालूम हुई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी जमाअत पर भी कोई तंकीद नहीं की और न ही इस अहम मौक़े पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कोई हिदायत जारी की जिससे मालूम हुआ कि अहकाम में इख़्तिलाफ़ तो कल कयामत तक जारी रहेगा और इस किस्म का इख़्तिलाफ़ मज़मूम नहीं है, अलबत्ता अक़ायद और उसूल में इख़्तिलाफ़ करना मज़मूम है।

अल्लामा इबनुल कय्यिम ने अपनी किताब “अस सवाइकुल मुरसला” में दलाइल के साथ लिखा है कि सहाबए किराम के दरमियान भी बहुत से मसाइल में इख़्तिलाफ़ था जिनमें से एक मसअला एक मजलिस में एक लफ़्ज़ से तीन तलाक़ वाक़े होने के बारे में है। यह इख़्तिलाफ़ महज़ इज़हारे हक़ या तलाशे हक़ के लिए था।

लेकिन आज हम इख़्तिलाफ़ के नाम पर बुग़ज़ व इनाद कर रह हैं, अपने मक़तबे फ़िक़्र को सही और दूसरे मक़ातिबे फ़िक़्र को ग़लत

करार देने के लिए अपनी तमामतर सलाहियतें सर्फ कर रहे, हैं हालांकि इस्लाम में इख्तिलाफ की मुजाइश तो है, मगर बुग़ज़ व इनाद और लड़ाई झगड़ा करने से मना फरमाया गया है जैसा कि अल्लाह तआला ने अपने पाक कलाम में फरमाया “आपस में झगड़ा न करो, वरना बुज़दिल हो जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी।” (सूरह अंफाल 46)

आज गैर मुस्लिम कौमें खास कर यहूद व नसारा की तमाम माद्री ताकतें मुसलमानों को ज़ेर करने में मसरूफ हैं, यह दुनियावी ताकतें इस्लाम और मुसलमानों को ज़लील व रुसवा करने के लिए हर मुमकिन हरबा इस्तेमाल कर रही हैं जिस से हर जीशऊर वाकिफ है लिहाज़ा हम सब की ज़िम्मेदारी है कि सहाबा और अकाबेरीन की सीरत की रौशनी में अपने इख्तिलाफ को सिर्फ इज़हार हक या तलाशे हक तक महदूद रखें। अपना मौक़िफ ज़रूर पेश करें, लेकिन दूसरे की राय की सिर्फ इस मुनियाद पर मुखालफत न करें कि इसका तअल्लुक दूसरे मक़तबे फ़िक्र से है। अब तो दूसरे आसमानी मज़ाहिब के साथ भी हमआहंगी की बात शुरू होने लगी है, लिहाज़ा हमें उम्मत मुस्लिमा के शीराज़े को बिखेरने के बजाए इसमें पैवन्दकारी करनी चाहिए। अगर किसी आलिम के क़ौल में कुछ नुक़्स है तो उसकी ज़िन्दगी का बेश्तर हिस्सा सामने रख कर उसकी इबारत में तौजीह व तावील करनी चाहिए, न कि उसपर कुक्क व शिर्क के फतवे लगाए जाएं। फ़रई मसाइल में इख्तिलाफ की सूरत में दूसरे मक़ातिबे फ़िक्र की राय का एहतेराम करते हुए क़ुरान व हदीस की रौशनी में अपना मौक़िफ ज़रूर पेश किया जा सकता है, लेकिन

दूसरे मकातिबे फिक्र की राय की तज़लील और रुसवाई हमारी ज़िन्दगी का मक़सद नहीं होना चाहिए।

बर्से सगीर में मुख्तलिफ़ मकातिबे फिक्र के आपसी इख़्तिलाफ़ात का शिकार हदीस की बेलौस खिदमत करने वाली शख़्सियत शैख़ुल हदीस मौलाना ज़करिया की भी है। फज़ाइल से मुतअल्लिक़ उनकी तहरीर करदा 9 किताबों के मजमूआ “फज़ाइल आमाल” को भरपूर तंकीद का निशाना बनाया गया है और उनकी इल्मे हदीस की अज़ीम खिदमात को ही पसे पुश्त डाल दिया गया है। इन 9 किताबों के मजमूआ पर मुख्तलिफ़ एतेराज़ात किए गए जिनके बहुत से जवाबात शाये हुए और यह सिलसिला बराबर जारी व सारी है। इस सिलसिले की अहम कड़ी हज़रत मौलाना लतीफ़ुर रहमान साहब कासमी की अरबी ज़बान में तहरीर करदा वह जामे किताब “तहकीक़ मक़ाल फी तखरीज अहादीस फज़ाइलिल आमाल लिश शैख़ मोहम्मद ज़करिया” है जो बैरुत (लिबनान) और दुबई से शाये हुई है। यह किताब अरबी ज़बान में है और 664 पेजों पर मुशतमिल है। हिन्द व पाक में इसके दो तरजुमे इख़्तिसार के साथ शाये हो चुके हैं।

शैख़ुल हदीस मौलाना मोहम्मद ज़करिया के उन 9 किताबों के मजमूआ पर एतेराज़ात का खुलासा दो उमूर पर मुशतमिल है।

- 1) किताब में ज़ईफ़ अहादीस भी तहरीर की गई हैं।
- 2) बुज़ुर्गों के वाक्यात कसरत से ज़िक्र किये गए हैं।

मसअले की वज़ाहत से पहले चंद तारीखी हक़ायक़ को समझें

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में हदीस लिखने की आम इजाज़त नहीं थी, ताकि कुरान व हदीस में इख़्तिलात पैदा न हो जाए।

खुलफ़ाए राशिदीन के ज़माने में भी हदीस का नज़्म सिर्फ़ इफ़िद़ी तौर पर और वह भी महदूद पैमाने पर था।

200 हिजरी से 300 हिजरी के दरमियान अहादीस लिखने का खास एहतेमाम हुआ चुनांचे हदीस की मशहूर व मारूफ़ किताबें बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, नसई वगैरह (जिनको सिहाये सिता कहा जाता है) इसी दौर में तहरीर की गई हैं जबकि मुअत्ता इमाम मालिक 160 हिजरी के करीब तहरीर हुई। इन अहादीस की किताबों की तहरीर से पहले ही 150 हिजरी में इमाम अबू हनीफ़ा (शैख़ नोमान बिन साबित) की वफ़ात हो चुकी थी। इमाम मोहम्मद की रिवायत से इमाम अबू हनीफ़ा की हदीस की किताब “किताबुल आसार” इन अहादीस की किताबों की तहरीर से पहले मुरत्तब हो गई थी।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़रमान या अमल को जो हदीस ज़िक्र करने का बुनियादी मक़सद होता है, मतन कहा जाता है।

जिन वास्तों से यह हदीस मुहदिस तक पहुंचती है उसको सनदे हदीस कहते हैं। हदीस की मशूह़ किताबों में मुहदिस और सहाबी के दरमियान उम्मून दो या तीन या चार वास्ते हैं कहीं कहीं इससे ज़्यादा भी हैं।

अहादीस की किताबें तहरीर होने के बाद हदीस बयान करने वाले रावियों पर बाकायदा बहस हुई, जिसको असमाउर रिजाल की बहस कहा जाता है। अहकामे शरइया में उलमा व फुकहा के इख्तिलाफ की तरह इससे भी कहीं ज्यादा शदीद इख्तिलाफ मुहद्दीसीन का रावियों को ज़ईफ और सिकह करार देने में है, यानी एक हदीस एक मुहद्दीस के नुक्तए नज़र में ज़ईफ और दूसरे मुहद्दीसीन की राय में सही हो सकती है।

सनद में अगर कोई रावी गैर मारूफ साबित हुआ यानी यह मालूम नहीं कि वह कौन है या उसने किसी एक मौके पर झुठ बोला है या सनद में इंकिता है तो इस बुनियाद पर मुहद्दीसीन व फुकहा एतियात के तौर पर इस रावी की हदीस को अकायद और अहकाम में कबूल नहीं करते हैं बल्कि जो अकायद या अहकाम सही मुस्तनद अहादीस से साबित हुए हैं उनके फज़ाइल के लिए क़बूल करते हैं, बुआंचे बुखारी व मुस्लिम के अलावा हदीस की मशहूर व मारूफ तमाम ही किताबों में ज़ईफ अहादीस की अच्छी खासी तादाद मौजूद है और उम्मतए मुस्लिमा इन किताबों को ज़मानए क़दीम से क़बूलियत का शरफ दिए हुए है हत्ताकि बुखारी की तालीक़ और मुस्लिम की शवाहिद में भी ज़ईफ अहादीस मौजूद हैं। इमाम बुखारी ने हदीस की बहुत सी किताबें तहरीर फरमाईं, बुखारी शरीफ के अलावा उनकी भी तमाम किताबों में ज़ईफ अहादीस कसरत से मौजूद हैं।

(नोट) अगर ज़ईफ अहादीस काबिले एतेबार नहीं हैं तो सवाल यह है कि मुहद्दीसीन ने अपनी किताबों में उन्हें क्यों जमा किया? और उनके लिए तवील सफर क्यों किए? नीज़ यह बात ज़ेहन में रखें कि अगर ज़ईफ हदीस को काबिले एतेबार नहीं समझा जाएगा तो सीरते

नबवी और तारीखे इस्लाम का एक बड़ा हिस्सा दफन करना पड़ेगा। ज़मानए क़दीम से जमहूर मुहद्दिसीन का उसूल यही है कि ज़ईफ़ हदीस फ़ज़ाइल में मोतबर है और उन्होंने ज़ईफ़ हदीस को सही हद्दिस की अक़साम के ज़िम्न में ही शुमार किया है।

मुस्लिम शरीफ की सबसे ज़्यादा मक़बूल शरह लिखने वाले इमाम नववी (मुअल्लिफ़ रियाज़ुस सालिहीन) फरमाते हैं मुहद्दिसीन, फ़ुकहा और उनके अलावा जमहूर उलमा ने फरमाया ज़ईफ़ हदीस पर अमल करना फ़ज़ाइल और तर्गीब व तरहीब में जायज़ और मुस्तहब है। (अलअज़कार पेज 7-8)

इसी उसूल को दूसरे उलमा व मुहद्दिसीन ने तहरीर फरमाया है जिनमें से बाज़ के नाम यह हैं:

— शैख मुल्ला अली क़ारी (मौजूआते कबीरा पेज 8, शरहुल अकारिया जिल्द 1 पेज 9, फतह बाबुल इनाया जिल्द 1 पेज 49)

— शैख इमाम हाकिम अबू अब्दुल्लाह नीशापूरी (मुस्तदरक हाकिम जिल्द 1 पेज 490)

— शैख इब्ने हजर अलहैसमी (फतहुल मुबीन पेज 32)

— शैख अबू मोहम्मद बिन कुदामा (अलमुगनी जिल्द 1 पेज 1044)

— शैख अल्लामा शौकानी (नीलुल औतार जिल्द 3 पेज 68)

— शैख हाफिज इब्ने रजब हमबली (शरह अलत तिमिज़ी जिल्द 1 पेज 42-74)

— शैख अल्लामा इब्ने तैमिया हमबली (फतावा जिल्द 1 पेज 39)

— शैख नवाब सिद्दीक हसन खान (दलीलुत तालिब अलल मतालिब पेज 889)

जहां तक बुजुर्गों के वाक्यात बयान करने का तअल्लुक है तो उससे कोई हुकुम साबित नहीं होता है बल्कि सिर्फ़ कुक़ान व हदीस से साबित शुदा हुकुम की ताईद के लिए किसी बुजुर्ग का वाक्या ज़िक्र किया जाता है। बुर्जगों के वाक्यात तहरीर करने का रिवाज हर वक़्त और हर मक्तबे फ़िक्र में मौजूद है जैसा कि मौलाना लतीफ़ुर रहमान कासमी साहब ने अपनी किताब “तहकीक़ुल मक़ाल फी तखरीज अहादीस फज़ाइलिल आमाल लिश शैख मोहम्मद ज़करिया” में दीगर मकातिबे फ़िक्र के बहुत से उलमा की किताबों के नाम हवालों के साथ तहरीर फरमाए हैं। उम्मतु मुस्लिमा का एक बड़ा हिस्सा इस बात पर मुत्तफ़िक्र है कि कभी कभी बुजुर्गों के ज़रिया ऐसे वाक्यात रूनुमा हो जाते हैं जिनका आम आदमी से ख़ूब मुश्किल होता है, नीज़ अगर मान भी लिया जाए कि किताब में बाज़ वाक्यात का ज़िक्र ग़ैर मुनासिब है या चंद मौजू अहादीस ज़िक्र कर दी गई हैं अगरचे वह अहादीस की मशहूर व मारुफ़ किताबों से ही ली गई हैं, तो सिर्फ़ इस कुनिय्याद पर उनकी हदीस की खिदमात को नज़र अंदाज करना उनकी अज़ीम शख़सीयत के साथ इंसाफ़ नहीं है। शैख़ुल हदीस ने चालीस साल से ज़्यादा हदीस की किताबें पढ़ाई, कोईतंखाह नहीं ली। सौ से ज़्यादा अरबी व उर्दू ज़बान में किताबें तहरीर फरमाई, एक किताब के हुक्क भी अपने लिए महफूज़ नहीं रखे। 18 जिल्दों पर मुशतमिल “औजजुल मसालिक इला मुअत्ता इमाम मालिक” किताब अरबी ज़बान में तहरीर फरमाई जिससे लाखों अब्ब व अजम ने इस्तिफ़ादा किया और यह सिलसिला बराबर जारी है।

शैखुल हदीस मौलाना मोहम्मद ज़करिया की शख्सीयत

शैखुल हदीस 10 रमज़ान 1315 हिजरी, 12 फरवरी 1898 को ज़िला मुज़फ्फरनगर के कसबा कांधला के एक इल्मी घराने में पैदा हुए, आपके वालिद शैख मोहम्मद यहया मदरसा मज़ाहिरुल उलूम सहारनपुर में उस्ताज़े हदीस थे। आपके दादा शैख मोहम्मद इसमाईल भी एक बड़े जय्यिद आलिम थे। आपके चाचा शैख मोहम्मद इलयास हैं जो फाज़िले दारुल उलूम देवबन्द होने के साथ तबलिगी जमाअत के मुअस्सिस भी हैं जिन्होंने उम्मत मुस्लिमा की इस्लाह के लिए मुख़िलासाना कोशिश करते हुए एक ऐसी जमाअत की बुनियाद डाली जिसकी इसार व कुर्बानी की बज़ाहिर कोई नज़ीर इस दौर में नहीं मिलती और यह जमाअत एक मुख़्तसर अरसे में दुनिया के चप्पे चप्पे में यहां तक कि अरबों में भी फैल चुकी है। 6 खलीजी मुमालिक, 22 अरब मुमालिक और 75 इस्लामी मुमालिक मिलकर भी आज तक कोई ऐसी मुनज़ज़म जमाअत नहीं तैयार कर सके जिसकी एक आवाज़ पर बेग़ैर किसी इशतिहारी वसीले के लाखों का मजमा पलक झपकते ही जमा हो जाए। उम्मी तौर पर अब हमारी ज़िन्दगी दिन बदिन मुनज़ज़म होती जा रही है, चुनांचे स्कूल, कालेज और यूनिवर्सिटी हत्ताकि मदारिसे अरबिया इस्लामिया में भी दाखिला का एक मुअय्यन वक़्त, दाखिला के लिए टेस्ट और इंटरव्यू, क्लासों का नज़म व नस्क़ फिर इमतेहानात और 3 या 5 या 8 साला कोर्स और हर साल के लिए मुअय्यन किताबें पढ़ने पढ़ाने की तहदीद कर दी गई है। हालांकि कुरान व हदीस से उनका कोई सबूत नहीं मिलता। इसी तरह अपनी और भाइयों की इस्लाह के लिए कोई वक़्त मुअय्यन नहीं होना चाहिए, लेकिन तालीम व मुलाज़मत व कारोबार

गरज़ ये कि हमारी जिन्दगियों के मुनज़्जम शिडयूल को सामने रखते हुए अकाबेरीन ने इस मेहनत के लिए भी वक़्त की एक तर्तीब दे दी है। इंफिरादी तौर पर जब हमारे अंदर कमियां मौजूद हैं तो इजतिमाई तौर पर काम करने की सूरत में कमियां खत्म नहीं हो जाएंगी। मौजूदा दौर की कोई भी इस्लामी तंज़ीम तंकीद से खाली नहीं है। खुलासए कलाम यह है कि शैख मोहम्मद इलयास की फिक्र से वजूद में आने वाली अपनी और भाईयों की इस्लाह की मजूका कोशिश मजमूई एतेबार से बेशुमार खूबियां अपने अंदर समोए हुए है।

शैखुल हदीस मौलाना मोहम्मद ज़करिया के चचाज़ाद भाई शैख मोहम्मद यूसुफ बिन शैख मोहम्मद इलयास थे जिन्होंने अरबी ज़बान में तीन जिल्दों पर मुशतमिल हयातुस सहाबा तहरीर फरमाई जिसके मुख्तलिफ ज़बानों में तरजुमा भी हुए, जो अरब व अजम में लाखों की तादाद में शाये हुए और हो रहे हैं, जिनसे लाखों की तादाद ने इस्तिफादा किया और कर रहे हैं।

इस खानदान ने अरबी व उर्दू में सैकड़ों किताबें तहरीर कीं लेकिन खुलूस व लिल्लाहियत की वाज़ेह अलामत यह है कि एक किताब के हुकूक भी अपने लिए महफूज़ नहीं किए, बल्कि अल्लाह तआला से अजरे अज़ीम की उम्मीद के साथ एलान कर दिया कि जो चाहे शाये करे, फरोख्त करे, तकसीम करे, चुनांचे दुनिया के बेशुमार नाशिरीन खास कर लिबनान के बहुत से नाशिरीन इस खानदान की अरबी किताबें बड़ी मिकदार में शाये कर रहे हैं और अरबों में उनकी किताबें बहुत मकबूल हैं। सउदी अरब के तकरीबन तमाम बड़े मक्तबों में उनकी किताबें (मसलन औज़ुअ मसालिक इला मुअत्ता इमाम मालिक और हयातुस सहाबा) दस्तियाब हैं।

12 साल की उम्र में शैख हदीस मौलाना मोहम्मद ज़करिया ने मदरसा मज़ाहिरुल उलूम सहारनपुर में दाखिला लिया। दारुल उलूम देवबन्द के बाद मदरसा मज़ाहिरुल उलूम सहारनपुर बर्रे सगीर का सबसे बड़ा मदरसा शुमार किया जाता है जिसकी बुनियाद दारुल उलूम देवबन्द के 6 महीने बाद रखी गई थी। शैखुल हदीस के हदीस के अहम असातज़ा में शैख खलील अहमद सहारनपुरी आपके वालिद शैख मोहम्मद यहया और आपके चाचा शैख मोहम्मद इलयास थे। वालिद के इंतिकाल के बाद सिर्फ 20 साल की उम्र में (1335हिजरी में) मदरसा मज़ाहिरुल उलूम सहारनपुर में उस्ताज़ हो गए। 1341 हिजरी में अपने शैख खलील अहमद सहारनपुरी के इसरार पर सिर्फ 26 साल की उम्र में बुखारी शरीफ का दर्स शुरू फरमा दिया। 1345 हिजरी में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शहर मदीना में एक साल क़याम फरमाया और मदरसा अल उलूमश शरईया (मदीना) में हदीस की मशहूर किताब अबू दाऊद पढ़ाई। यह मदरसा आज भी मौजूद है जिसके ज़िम्मेदार सैयद हबीब मदनी के बड़े साहबजादे हैं। मदीना के क़याम के दौरान ही अपनी मशहूर किताब औजज़ुल मसालिक इल मुत्ता इमाम मालिक की तालीफ शुरू फरमा दी थी, उस वक़्त आपकी उम्र 29 साल थी। 1346 हिजरी में मदीना से वापसी के बाद दोबारा मदरसा मज़ाहिरुल उलूम सहारनपुर में हदीस की किताबें खास कर बुखारी शरीफ और अबू दाऊद पढ़ाने लगे और यह सिलसिला 1388 हिजरी में यानी 73 साल की उम्र तक जारी रहा। गरज़ ये कि आपने 50 साल से ज़्यादा हदीस पढ़ाने और लिखने में गुज़ारे और इस तरह हज़ारों तलबा ने आपसे हदीस पढ़ी

जो दीने इस्लाम की खिदमत के लिए दुनिया के कोने कोने में फैल गए।

शैखुल हदीस ने हज की अदाएगी के लिए मक्का और मदीना के बहुस से सफर किए। 1345 हिजरी में आप अपने उस्ताद शैख खलील अहमद सहारपुरी के साथ मदीना में मुक्किम थे कि आपके उस्तादे मोहतरम का इंतिकाल हो गया और वह जन्नतुल बकी में अहले बैत के करीब दफन किए गए। शैखुल हदीस मौलाना मोहम्मद जकरिया की भी ख्वाहिश थी कि मदीना में ही मौलाए हकीकी सजा मिलूं, चुनांचे बतारीख एक शाबान 1402 हिजरी मदीना में आपका इंतिकाल हुआ। एक अजीम जम्मे गफीर की मौजूदगी में मदीना के मशहूर कब्रिस्तान अलबकी के उस हिस्से में दफन किए गए जहां अब तदफीन का सिलसिला बन्द हो गया है। मस्जिदे नबवी के तकरीबन तमाम अइम्मा शैखुल हदीस के जनाजे में शरीक थे। शैखुल इस्लाम मौलाना हुसैन अहमद मदनी के भतीजे सैयद हबीब मदनी (साबिक रईसुल औकाफ, मदीना) ने अपनी निगरानी में शैखुल हदीस की कब्र उनके उस्ताद शैख खलील अहमद सहारनपुरी के बगल में बनवाई, इस तरह दोनों शूयूख अलहे बैत के करीब ही मदफून हैं। दारुल उलूम देवबन्द के उस्ताद और मुजाहिदे आज़ादी शैखुल इस्लाम मौलाना हुसैन अहमद मदनी ने चंद मरहलों में तकरीबन 15 साल मस्जिदे नबवी में उलूमे नबूवत का दर्स दिया। उनके भतीजे सैयद हबीब मदनी एक तवील अरसे तक मदीना के गवर्नर की सरपरस्ती में मदीना के इंतिज़ामी उलूम देखते रहे, गरज़ ये कि वह अरसे दराज़ तक मुसाइद गवर्नर थे। सउदी अरब में कोई भी हिन्द निज़ाद सउदी इन्ते बड़े ओहदे पर फायज़ नहीं हुआ।

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो शख्स मदीना में मर सकता है (यानी यहां आ कर मौत तक क़याम कर सकता है) उसे ज़रूर मदीना में मरना चाहिए क्योंकि मैं उस शख्स की शिफाअत करूंगा जो मदीना में मरेगा। (तिर्मिज़ी)

शैखुल हदीस को आखिरी उम्र में (1397 हिजरी में) सउदी शहरीयत भी मिल गई थी और उन्होंने सउदी पासपोर्ट से ही हिन्दुस्तान का आखिरी सफर और इससे पहले साउथ अफ्रीका का सफर किया था। शैखुल हदीस के खलीफा अब्दुल हफीज़ अब्दुल हक मक्की साहब भी मौजूद हैं जो अपने खानदान के बूरे अफराद के साथ 1952 में हिजरत फरमा कर मक्का में मुक़ीम हुए, मक्का में मक्तबा इमदादिया के मालिक हैं। इस मक्तबा से हिन्द व पाक के उलम की अरबी किताबें सउदी हुूमत की इजाज़त के बाद बड़ी मिक़दार में शाये होती हैं।

शैखुल हदीस मौलाना मोहम्मद ज़करिया की इल्मी खिदमात

शैखुल हदीस ने अरबी और उर्दू में 100 से ज़्यादा किताबें तहरीर फरमाई हैं जिनमें से बाज़ अहम किताबों का मुख्तसर तआरुफ अर्ज़ है।

औजुल मसालिक इला मुअत्ता इमाम मालिक यह किताब अरबी ज़बान में है जो हदीस की मशहूर व मारुफ किताब मुअत्ता इमाम मालिक की शरह है। इस किताब की 18 जिल्दें हैं जो आपने ढ़ेस हदीस और दूसरी मसरूफियात के साथ 1375 हिजरी में 30 साल की

जिद्ध व जोहद के बाद तहरीर फरमाई। मदीना के क़याम के दौरान इस किताब की तालीफ़ शुरू फरमाई थी, उस वक़्त आपकी उम्र सिर्फ़ 29 साल थी। दुनिया के तक़रीबन तमाम मकातिबे फ़िक़् के उलमा इस किताब से इस्तिफ़ादा करते हैं। लिबनान के बुहल से नाशिरिन इस किताब के लाखों की तादाद में जुसखे शाये कर रहे हैं। सउदी अरब की तक़रीबन तमाम ही लाइब्रेरियों और मक्तबों की यह किताब ज़ीनत बनी हुई है, मालिकी हज़रात इस किताब को निहायत इज़ज़त व एहतेराम के साथ पढ़ते और पढ़ाते हैं, यहां तक कि बाज़ मलिकी उलमा ने फरमाया है कि हमें फ़ुरूई मसाइल से वाक़फ़ियत सिर्फ़ इसी किताब से हुई है। बाज़ नाशिरिन ने इस किताब को 15 जिल्दों में शाये किया है।

अल अबवाब वत्तराजिम लिल बुखारी इस किताब में बुखारी शरीफ़ के अबवाब की वज़ाहत की गई है। बुखारी शरीफ़ में अहादीस के मजमूआ के उनवान पर बहस एक मुस्तक़िल इल्म की हैसियत रखती है जिसे तरजुमतुल अबवाब कहते हैं। शैख़ ज़करिया ने इस किताब में शाह वलीउल्लाह देहलवी और अल्लामा इब्ने हजर असक़लानी जैसे उलमा के ज़रिया बुखारी के अबवाब के बारे में की गई वज़ाहतें ज़िक़र करने के बाद अपनी तहक़ीकी राय पेश की हैं। यह किताब अरबी ज़बान में है और इसकी 6 जिल्दें हैं।

लामुउद्दिरारी अला जामे सहीहिल बुखारी यह मजमूआ दरअसल शैख़ रशीद अहमद गंगोही का दर्से बुखारी है जो शैख़ुल हदीस के वालिद शैख़ मोहम्मद यहया ने उर्दू ज़बान में कलमबंद किया था। शैख़ हदीस मौलाना ज़करिया ने इसका अरबी ज़बान में तरजुमा किया और अपनी तरफ़ से कुछ हज़फ़ व इज़ाफ़ात करके किताब की

तालीक और हवाशी तहरीर फरमाए। इस तरह शैखुल हदीस की 12 साल की इंतिहाई कोशिश और मेहनत की वजह से यह अज़ीम किताब मंज़रे आम पर आई। इस किताब पर शैखुल हदीस का मुकद्दमा बेशुमार खूबियों का हामिल है। यह किताब अरबी ज़बान में है और इसकी 10 जिल्दें हैं।

बज़लुल मजहूद फी हल्लि अबी दाऊद यह किताब शैख खलील अहमद सहारनपूरी की तहरीर करदा है, लेकिन शैखुल हदीस मौलाना मोहम्मद ज़करिया की चंद सालों की कोशिश के बाद ही 1345 हिजरी में मदीना में मुकम्मल हुई। इस किताब के मुतअल्लिक कहा जाता है कि शैखुल हदीस ने अपने उस्ताद से ज़्यादा वक़्त लगा कर इस किताब को पायए तकमील तक पहुंचाया। यह किताब अरबी ज़बान में है और इसकी तकरीबन 20 जिल्दें हैं।

अलकौकबुद दरी अला जामिउत तिमिज़ी यह मजमूआ दरअसल शैख रशीद अहमद गंगोही का उर्दू ज़बान में रसतिमिज़ी शरीफ है जो शैखुल हदीस ने अरबी ज़बान में तरजुमा करके अपने तालीकात के साथ मुरत्तब किया है। यह किताब अरबी ज़बान में है और उसकी 4 जिल्दें हैं।

ज़ुजउ हज्जतिल विदा व उमरातुन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस किताब में शैख हदीस ने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हज और उमरह से मुतअल्लिक तफसील ज़िक्र फरमाई है। हज और उमरह के मुख्तलिफ मसाइल और मराहिल, नीज़ उन जगहों के मौजूदा नाम जहां हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कयाम फरमाया था या जहां से गुजरे थे ज़िक्र किया है। यह किताब अरबी ज़बान में है।

खसाइले नबवी शरह शमाइले तिमिज़ी इमाम तिमिज़ी की मशहू
तालिफ “अश शमाइलुल मोहम्मदिया” का तफसीली जायज़ा उर्दू
ज़बान में तहरीर किया है। इस किताब का अंग्रेजी तरजुमा भी शाये
हो चुका है।

शैखुल हदीस की चंद दूसरी अरबी किताबें

वुज़ूब एफाउल लेहया

उसूलुल हदीस अला मज़हबिल हनफीया

औलियातुल कयामह

तबवीब अहकामिल कुरान लिल जस्सास

तबवीब तावील मुख्तलिफिल अहादीस लिइब्ने कुतैबा

तबवीब मुश्किलिल आसार लिल तहावी

तकरीरुल मिशकात मअ तालिकातिह

तकरीरुन नसई

तलखीसुल बज़ल

जामेउर रिवायात वल अजज़ा

जुज़उ इख्तिलाफिस सलात

जुज़उल आमालि बिन नियात

जुज़उ अफज़लिल आमाल

जुज़उ उमरउल मदीना

जुज़उ इंकहतिही

जुज़उ तखरीज हदीसि आइशा फी किस्सति बरीरा

जुज़उल जिहाद

जुज़उ रफ़इल यदैन

जुज़उ तुरुकिल मदीना
 जुज़उल मुबहमात फिल असानीद वर रिवायात
 जुज़उ मा कालल मुहद्दिसून फिल इमामिल आज़म
 जुज़उ मुकप्फिरातिज़ जुनूब
 जुज़उ मुलतक़तिल मिरकात
 जुज़उ मुलतक़तिर रुवात अनिल मिरकात
 हवाशी अलल हिदाया
 शरह सुल्लमुल उलूम
 अलवकाये वद दुहूर (तीन जिल्दें, पहली जिल्द नबी अकरम
 सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत के मुतअल्लिक़, दूसरी जिल्द
 खुलफाए राशिदीन के मुतअल्लिक़ और तीसरी जिल्द दूसरे हुकमरानों
 के मुतअल्लिक़)

शैखुल हदीस की चंद उर्दू किताबें

अल एतेदाल फी मरातिबिर रिजाल
 आपी बीती (7 जिल्दें)
 असबाब इख़ितलाफिल अइम्मा
 अत्तारीखुल कबीर
 सीरते सिद्दीक़
 निज़ामे मज़ाहिरुल उलूम (दस्तूर)
 तारीख़ मज़ाहिरुल उलूम
 शरहुल अल्फिया (तीन जिल्दें)
 अकाबिर का तक्वा
 अकाबिर का रमज़ान

अकाबिर उलमाए देवबन्द

मौत की याद

फज़ाइले ज़बाने अरबी

फज़ाइले तिजारत

फज़ाइले आमाल (फज़ाइल पर मुशतमिल 9 किताबों का मजमूआ)

शरीअत व तरीक़त का तलाज़ुम (इसका अरबी ज़बान में तरज़ुमा मिस्र से शाये हो चुका है)

चंद सतरें शैखुल हदीस मौलाना मोहम्मद ज़करिया की शख्सियत के मुतअल्लिक़ तहरीर की हैं, अल्लाह तआला क़ब्ब फरमाए। तफसीलात के लिए दूसरी किताबों के साथ मौलाना सैयद अबुल हसन अली नदवी की किताब (तज़केरा शैखुल हदीस मौलाना मोहम्मद ज़करिया) का मुतालआ फरमाएं। मेरे हर हर लफज़ से आपका मुत्तफिक़ होना कोई ज़रूरी नहीं है अलबत्ता फज़ाइले आमाल को सामने रख कर शैखुल हदीस की शख्सियत पर कुछ कहने या लिखने से पहले उनकी दूसरी तसानीफ़ खास कर 18 जिल्दों पर मुशतमिल मशहूर व मारुफ़ अरबी ज़बान में तहरीर करदा किताब “औजज़ुल मसालिक इला मुअत्ता इमाम मालिक” का मुतालआ कर लें। अरबी से वाक़फियत न होने की सूत में दुनिया के किसी भी हिस्से के मारुफ़ आलिम खास कर उलमा से इस किताब के मुतअल्लिक़ मालूमात हासिल कर लें।

शैखुल हदीस व मुजाहिदे आज़ादी मौलाना मोहम्मद इसमाईल संभली

अपने हकीकी दादा शैखुल हदीस व मुजाहिदे आज़ादी हज़रत मौलाना मोहम्मद इसमाईल संभली की ज़िन्दगी के मुख्तसर अहवाल लिख रहा हूँ।

1899 में शहर संभल के मोहल्ला दीपा सराय में मुक़्त बिरादरी के सरवर वाले खानदान में पैदा हुए।

इब्तिदाई तालीम संभल और भावलपुर में हुई।

1919 में जब जलियान वाला बाग का इंसानियत सोज़ वाक़्या पेश आया तो मौलाना ने निहायत जोश व वल्वला खेज़ तक़रीर की, इसी तक़रीर से उनकी सियासी व समाजी ज़िन्दगी का आगाज़ हुआ। इस मौक़े पर आपको रईसुल मुक़र्रिरीन का खिताब दिया गया।

1920 में दारुल उलूम देवबन्द में तालीम हासिल करने के लिए दाखिला लिया।

1921 में तालिब इल्मी के ज़माने में ही अंग्रेज़ों के खिलाफ पुरजोश तक़रीर के जुर्म में गिरफ्तार किया गया, दो साल कैद बामशक्कत का हुकुम सुनाया गया।

दो साल की कैद बामशक्कत से रिहाई के बाद संभल ही में रहकर अपनी अधूरी तालीम की तरफ तवज्जोह दी।

1922 में दोबारा दारुल उलूम जाकर मौलाना अनवर शाह कश्मीरी, मौलाना शब्बीर अहमद उसमानी और दूसरे असातज़ए किराम की सोहबत में रह कर तालीम मुकम्मल की।

1924 क आखिर में दारुल उलूम देवबन्द से फरागत के बाद मदरसा शाही मुरादाबाद में मुदरिस हो गए।

1930 में जमीअत उलमाए हिन्द के सातवें डिक्टेटर की हैसियत से अंग्रेजों ने गिरफ्तार किया, छः महीने की कैद कैद बामशक्कत की सज़ा मिली।

1934 के एलक्शन में संभल के मशहू व मारुफ नवाब आशिक हुसैन के मुकाबले में फतह हासिल की।

1942 जब कांग्रेस ने हिन्दुस्तान छोड़ो का नारा दिया तो हिन्दुस्तान के दूसरे सियासी रहनुमाओं के साथ मौलाना को संभल से गिरफ्तार किया गया, तकरीबन एक साल बाद रिहाई हुई। गरज़ मौलाना ने हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिए तकरीबन चार साल जेल में गुज़ारे।

1946 में एम.एल.ए. के एलेक्शन में दोबारा फतह हासिल की और 1952 तक एम.एल.एल. रहे।

1946 में अपनी सियासी मसरूफियात की वजह से मदरसा शाही मुरादाबाद की दर्स व तदरीस की खिदमात से सुबुकदोशी हासिल कर ली।

1952 से 1957 तक जमीअत उलमाए हिन्द के नाज़िमे आला रहे।

1957 से 1962 तक मदरसा चिल्ला अमरोहा में शैख हदीस की हैसियत से खिदमात अंजाम दीं।

1962 से 1965 तक मदरसा इमदादिया मुरादाबाद में बुखारी शरीफ का दर्स दिया।

1965 से 1973 तक मदरसा तालीमुल इस्लाम गुजरात में शैख हदीस के मंसब पर फायज़ रहकर बुखारी व मुस्लिम का दर्स दिया।

1973 से 1974 तक बनारस दारुल उलूम में शैखुल हदीस रहे और दर्से बुखारी दिया, गरज़ आपने 17 साल तक बुखारी पढ़ाई।

1974 में मुस्लाज़मत का इरादा तर्क करके संभल तशरीफ ले आए और तसनीफी काम में मसरूफ हो गए, आपकी तसनीफात में “अखबारुत तंज़ील” यानी कुरान की पेशीन गोइयां, “तकलीदे अइम्मह” और “मक़ामाते तसव्वुफ” काबिले ज़िक्र हैं।

मवाना मेरठ के बाशिन्दों के बेहद इसरार पर वहां आठ माह क़याम फरमा कर दर्से कुरान दिया।

आखिरी उम्र में कई साल रमज़ान्ना मुबारक मुंबई में जुम्हारे और तरावीह के बाद कुरान करीम की तफसीर बयान फरमाई।

23 नवम्बर 1975 बरोज़ इतवार को संभल में वफात हुई।

दारुल उलूम देवबन्द के मोहतमिम हज़रत मौलाना मरग़बूरहमान साहब

तक़रीबन 150 साल से उम्मत-ए-मुस्लिमा की दिलों की धड़कन बनकर दारुल उलूम देवबन्द तालिबाने उलूमे नबूवत को इल्म की दौलत के साथ अमले सालेह और अखलाके फाज़िला की पाकीज़ह तरबीयत देने में मसरूफ़ है। इसका असल सरमाया तवक्कुल अलल्लाह है, किसी हुक्मत की इमदाद या किसी मुस्तक़िल ज़रिये आमदनी के बेग़ैर महज़ अल्लाह तआला के फज़ल व करम और आम मुसलमानों के अतियात से यह इदारा अपनी बेश बहा खिदमात की तरफ़ रवां दवां है।

इसी इदारे के हालिया मोहतमिम हज़रत मौलाना मरग़बूरहमान साहब शहर बिजनौर के एक अमीर घराने में तक़रीबन 100 साल पहले पैदा हुए। आपके वालिद हज़रत मौलाना मशीयतुल्लाह साहब बिजनौर के रईस जमींदार थे। वह दारुल उलूम देवबन्द की शूरा के मिम्बर भी थे। हज़रत मौलाना मरग़बूरहमान साहब ने दारुल उलूम देवबन्द से 1932 में फरागत हासिल की। आपने हज़रत मौलाना मुन्ती सहूल साहब से इफ़ता की तालीम हासिल की। फरागत के बाद अपने मोहल्ले की मस्जिद में तक़रीबन 25 साल इमामत के फरायज अंजाम दिए लेकिन इस खिदमत के लिए न सिर्फ़ यह कि उन्होंने कोई मुआवज़ा लिया बल्कि इस दौरान मस्जिद की मुख्तलिफ़ माली ज़रूरियात खुद ही पूरी करते थे। 1962 में दारुल उलूम देवबन्द की मजलिसे शूरा के रुक्न चुने गए। इस ज़िम्मेदारी को निभाने के लिए जब भी कभी दारुल उलूम देवबन्द का सफर करते अपने तमाम

अखराजात खुद ही बरदाशत करते, हत्ताकि अगर दारुल उलूम की कोई चाय भी पीते तो उसकी कीमत दारुल उलूम में जमा फरमाते। इजलासे सद साला के बाद 1982 में मुसाइद मोहतमिम मुकर्रर हुए। 1982 में मोहतमिम बने और जब से वफात तक (एक मुहर्रम 1432 हिजरी, 8 दिसम्बर 2010 इसवी) इस मंसब पर फायज़ रहे। 1982 के इंतिहाई नाजुक हालात में मौलाना ने दारुल उलूम देवबन्द के एहतिमाम और क़यादत की ज़िम्मेदारी संभाली। उन्होंने अपनी खुदाद लाहियतों और तदब्बुर से इस अज़ीम दरसगाह को मुनज़्ज़म रखने में मुसलसल 30 साल बेमिसाल खिदमात अंजाम दीं।

हज़रत मौलाना मरहूम ने अपने तीस साला एहतिमाम के दौरान कोई तंख्वाह नहीं ली बल्कि एक छोटा सा कमरा जो आपको रिहाइश के लिए दिया गया था उसका भी पाबन्दी के साथ किराया अदा करते थे। अपने मेहमानों की चाय वगैरह का मुकम्मल खर्चा अपनी जेब से अदा करते थे अगरचे वह दफ्तरी औकात में ही क्यों न आए। मौलाना मरहूम ने अपनी जायदाद का एक हिस्सा फरोख्त करके दारुल उलूम पर खर्च किया। इसके अलावा अक्सर व बेशतर तआवुन करते रहते थे। हज़रत मौलाना मरहूम कभी भी अपनी राय पर इसरार नहीं करते थे। इंतिहाई सब्र व तहम्मूल के साथ सबको साथ लेने के जज़्बे से काम करते थे। तीस साल पहले एहतिमाम की ज़िम्मेदारी संभालने के वक़्त दारुल उलूम का सालाना बजट तक़रीबन पचास लाख रुपये था, अब चूँकि तलबा की तादाद में कई गुणा इज़ाफ़ा हुआ है नीज़ तामीरी कामों का सिलसिला बराबर जारी है, इसलिए अब सालाना बजट तक़रीबन 14 करोड़ रुपये है।

दारुल उलूम देवबन्द के तहफ्फुज़ और इसे एक अज़ीम मक़ाम पर
 पहुंचाने में जो किरदार हज़रत मौलाना मरहूम ने अदा किया वह
 इतिहाई काबिले क़दर है। हज़रत मौलाना मरहूम साहबे फज़ल और
 साहबे तक्रवा आलिमे दीन थे तवाज़ो व इंकिसारी के हामिल थे,
 शराफ़त और बुज़ुरगी के मुजस्सम पैकर थे। हमारी दुआ है कि
 अल्लाह तआला हज़रत मौलाना मरहूम की मग़फ़िरत फरमाए, उनके
 दरजात बुलंद फरमाए और जन्नतुल फिरदौस में आला मक़ाम अता
 फरमाए। तमाम दीनी मदारिस खास कर दारुल उलूम देवबन्द की
 तमाम शुरू व फ़ितन से हिफाज़त फरमाए, आमीन, नीज़ मुंतसिबीन
 और बही ख्वाहाने दारुल उलूम से दुआए मग़फ़िरत और ईसाल सवाब
 की दरखास्त है।

शैख डाक्टर मोहम्मद मुस्तफा आजमी कासमी दामत बरकातुहुम और उनकी हदीस की खिदमात

अहादीस को अरबी में सबसे पहले कम्प्यूराइज़ करने वाली शख्सीयत जिसको हदीस की खिदमात पर 1980 में काफ़ैसल आलमी एवार्ड मिला और जिसने मुस्तशरेकीन (खास कर Joseph Schacht, Ignac Goldziher और David Margoliouth) के कुरान व हदीस की तदवीन पर एतेराज़ात के मुदल्लल जवाबात में अंग्रेज व अरबी ज़बान में बहू सी किताबें तसनीफ कीं जिसको असरे हाज़िर में शर्क व गर्ब में इल्मे हदीस की अहम मुक्तामद शख्सीयत तसलीम किया गया है।

आपकी पैदाइश 1930 के आस पास उत्तर प्रदेश के मरदुम खेज़ इलाका मऊ (आजमगढ़) में हुई। बर्रे सगीर की मारुफ इल्मी दरसगाह दारुल उलूम देवबन्द से 1952 में फरागत हासिल की। अज़हरुल हिन्द दारुल उलूम देवबन्द से उलूमे नबूवत में फज़ीलत की डिग्री हासिल करने के बाद दुनिया के मारुफ इस्लामी इदारा जामिया अजहर मिस्र से 1955 में “शहादुल्ल आलमिया मअल इजाज़ह बित्तदरीस” (एम.ए.) की डिग्री हासिल की और वतने अज़ीज़ वापस आ गए। 1955 में मुलाज़मत के गरज़ से क़तर चले गए और वहां कुछ दिनों गैर अरबीदां हज़रात को अरबी ज़बान की तालीम दी, फिर क़तर की पब्लिक लाइब्रेरी में लाइब्रेरियन की हैसियत से फरायज अंजाम दिए। इस दौरान आपने अपने इल्मी जौक व शौक की बुनियाद पर बहुत से कीमती मखतूतात पर भी काम किया।

1964 में क़तर से लंदन चले गए और 1966 में दुनिया की मारुफ यूनिवर्सिटी Cambridge London से जनाब A.J. Arberry और जनाब Prof. R.B. Serjeant की सरपरस्ती में Studies in Early Hadith Literature के मौजू पर Ph.D की। मजकूरा मौजू पर अंग्रेजी ज़बान में Thesis पेश फरमा कर Cambridge University से डाक्टरेट की डिग्री से सरफराज़ होने के बाद आप दोबारा क़तर तशरीफ ले गए और वहां क़तर पब्लिक लाइब्रेरी मज़ीद दो साल यानी 1968 तक काम किया।

1968 से 1973 तक जामिया उम्मुल क़ुरा मक्का में मुसाइद प्रोफेसर की हैसियत से ज़िम्मेदारी बखूबी अंजाम दी।

1973 से रिटायरमेंट यानी 1991 तक का सऊद यूनिवर्सिटी में मुस्तलहातुल हदीस के प्रोफेसर की हैसियत से इल्मे हदीस की ग़ांकदर खिदमात अंजाम दीं।

1968 से 1991 तक मक्का और रियाज़ में आपकी सरपरस्ती में बेशुमार हज़रात ने हदीस के मुख्तलिफ पहलुओं पर रिसर्च की। इस दौरान आप सउदी अरब की बहुत सी यूनिवर्सिटियों में इल्मे हदीस के मुमतहिन की हैसियत से मुतअय्यन किए गए, नीज़ मुख्तलिफ तालीमी व तहक़ीकी इदारों के मिम्बर भी रहे।

हदीस की अज़ीम खिदमात पर 1980 में किंग फैसल आलमी अवार्ड

1980 में दर्ज ज़ैल खिदमात के पेशे नज़र आपको किंग फैसल आलमी अवार्ड से सरफराज़ किया गया।

1) आपकी किताब "दिरासत फिल हदीसिन नबवी व तारीखि तदविनिह" जो कि अंग्रेजी ज़बान में तहरीर करदा आपकी Thesis का बाज़ इजाफात के साथ अरबी में तरजुमा है, जिसका पहला एडीशन किंग सउदी यूनिवर्सिटी ने 1975 में शाये किया था। इस किताब में आपने मज़बूत दलाइल के साथ अहादीसे नबविया का दिफा करके तदवीने हदीस के मुतअल्लिक मुस्तशरेकीन के एतेराज़ात के भरपूर जवाबात दिए हैं।

2) सही इब्ने खुज़ैमा जो कि सही बुखारी व सही मुस्लिम के अलावा अहादीसे सहीहा पर मुशतमिल एक अहम किताब है, असरे हाज़िर में चार जिल्दों में इसकी इशाअत आपकी तखरीज व तहकीक के बाद ही दोबारा मुमकिन हो सकी। इसके लिए आपने मुख्तलिफ मुल्कों के सफर किए।

3) अहादीसे नबविया को अरबी ज़बान में सबसे पहले कम्प्यूटराइज़ करके आपने हदीस की वह अज़ीम खिदमत की है कि आने वाली नसलें आपकी इस अहम खिदमत से फायदा हासिल करती रहेंगी। इंशाअल्लाह यह अमल आपके लिए सदकए जारिया बनेगा।

इस तरह डाक्टर मोहम्मद मुस्तफा आज़मी कासमी दुनिया में पहले शख्स हैं जिन्होंने अहादीस की अरबी इबारतों को कम्प्यूटराइज़ किया। गरज़ ये कि मुंतसेबीन मक्तबे फिक्रे देवबन्द को फख्र हासिल है कि जिस तरह अहादीस को पढ़ने व पढ़ाने, हदीस की कताबों की शरह तहरीर करने और हुज्जियते हदीस और उसके दिफा में सबसे ज़्यादा काम उनके उलमा ने किया है, इसी तरह अहादीसे नबविया को कम्प्यूटराइज़ करने वाला पहला शख्स भी फाज़िले दारुल उलूम देवबन्द ही है जिसने कुरान व हदीस की तालीम व तअल्लुम से

कामयाबी के वह मनाज़िल तैय किए जो आम तौर पर लोगों कम मुयस्सर होते हैं। या अल्लाह! मौसू को मज़ीद इल्मे नाफे अता फरमा और आखिरत में भी इमतियाज़ी कामयाबी अता फरमा, आमीन।

डाक्टर मोहम्मद मुस्तफा आज़मी कासमी साहब ने हदीस की किताबों की तखरीज व तहकीक़, उनपर तालिकात, अपनी निगरानी में उनके इशाअत और कुरान व हदीस की तदवीन के मुतअल्लिक़ मुस्तशरेकीन के एतेराज़ात के मुदल्लल जवाबात अंग्रेजी व अरबी में पेश करके देने इस्लाम की ऐसी अज़ीम खिदमत पेश की है कि उनकी शख्सीयत सिर्फ़ हिन्दुस्तान या सउदी अरब तक महदूद नहीं है बल्कि दुनिया के कोने कोने से उनकी खिदमात को सराहा गया है, हत्ताकि इस्लाम मुखालिफ़ कुव्वतों ने भी आपकी इल्मी हैसियत को तसलीम किया है। गरज़ ये कि असरे हाज़िर में शैख़ुल हदीस मौलाना अनवर शाह कश्मीरी के शागिर्द रशीद मुहद्दिसे कबीर शैख़ हबीबुर रहमान आज़मी के बाद शैख़ डाक्टर मोहम्मद मुस्तफा आज़मी कासमी साहब का नाम सरेफेहरिस्त है जिन्होंने बहुत सी हदीस की किताबों के मखतूतात पर काम करके अहादीस के ज़खीरे को उम्मत मुस्लिमा के हर खास व आम के पास पहुंचाने में अहम रोल अदा किया। शैख़ हबीबुर रहमान आज़मी ने भी तक़रीबन 11 अहादीस की किताबों की तखरीज के बाद उनकी इशाअत करवाई थी।

डाक्टर मोहम्मद मुस्तफा आज़मी ने सउदी नेशनलिटी हासिल होने के बावजूद अपने मुल्क, इलाक़ा और अपने इदारा से बराबर तअल्लुक़ रखा है, तक़रीबन हर साल ही अपने वतन का सफर करते रहे हैं, अपने इलाक़े के लोगों की फलाह व बबहूद के लिए बहुत से काम

करवाते रहे हैं। डाक्टर आजमी ने दारुल उलूम देवबन्द में दाखिले से पहले तकरीबन छः महीने मदरसा शाही मुरादाबाद में तालीम हासिल की है, नीज़ आप तकरीबन एक साल अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में भी ज़ेरे तालीम रहे हैं। आपके तीन बच्चे हैं, बेटी फातिमा मुस्तफा आजमी अमेरीका से M.Com और Ph.D करने के बाद शैख ज़ायद यूनिवर्सिटी में मुसाइद प्रोफेसर हैं। बड़े साहबज़ादे अक़ील मुस्तफा आजमी अमेरीका से इंजीनियरिंग फिर मास्टर इन इंजीनियरिंग और पी.एच.डी. करने के बाद किंग सउद यूनिवर्सिटी में मुसाइद प्रोफेसर हैं, छोटे बेटे जनाब अनस मुस्तफा आजमी ने UK से Ph.D की है और King Faisal Specialist Hospital में बरसरे रोज़गार हैं। इसके अलावा किंग खालिद बिन अब्दुल अज़ीज़ ने आपकी अज़ीम खिदमात के पेशे नज़र 1982 में आपको Medal of Merit, First Class से सरफराज़ फरमाया।

Saudi Nationality

1981 में हदीस की गिरांकदर खिदमात के पेशे नज़र आपको सउदी नेशनलिटी अता की गई।

दूसरी अहम जिम्मेदारियां

- Chairman of the Department of Islamic Studies, College of Education, King Saud University
- Visiting Scholar at the University of Michigan, Ann Arbor, Michigan (1981-1982)

- Visiting Fellow of St. Cross College, Oxford, England, during Hilary term (1987)
- Visiting Scholar at the University of Colorado, Boulder, Colorado, USA (1989-1991)
- King Faisal Visiting Professor of Islamic Studies at Princeton University, New Jersey (1992)
- Member of Committee for promotion, University of Malaysia
- Honorary Professor, Department of Islamic Studies, University of Wales, England

इल्मी खिदमात

आपकी इल्मी खिदमात का मुख्यतः तआरुफ पेशे खिदमत है

1) Studies in Early Hadith Literature: यह किताब दरअसल डाक्टर मुस्तफा आज़मी साहब की पी.एच.डी. की थेसिस है जो अंग्रेजी ज़बान में तहरीर की गई थी जिसका पहला एडीशन बैरूतसे 1968 में शाये हुआ, दूसरा एडीशन 1978 और तीसरा एडीशन 1988 में अमेरीका से शाये हुआ और उसके बाद बहुत से एडीशन शाये हो चुके हैं और अलहम्दु लिल्लाह यह सिलसिला बराबर जारी है। इसका 1993 में तुर्की ज़बान में और 1994 में इन्डोनेशी और उर्दू ज़बान में तरजुमा शाये हो चुका है। मशरिक व मगरिब की बहुत सी यूनिवर्सिटियों में यह किताब निसाब में दाखिल है।

2) दिरासत फिल हदीसिन नबवी व तारीखि तदवीनिह - मौसूफ ने अंग्रेजी ज़बान में तहरीर करदा अपनी थेसिस में बाज़ इज़ाफात फरमा

कर खुद अरबी ज़बान में तरजुमा किया है जो 712 पेजों पर मुशतमिल है जिसका पहला एडीशन किंग सउद यूनिवर्सिटी ने 1975 में शाये किया था। उसके बाद रियाज व बैरुत से बहुत से एडीशन शाये हो चुके हैं। इन दोनों मजूका अंग्रेजी व अरबी किताबों में मुस्तनद दलाइल से यह साबित किया गया है कि हदीस की तदवीन का आगाज़ हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में ही हो गया था, नीज़ इस दावे को गलत साबित किया गया है कि तदवीन का आगाज़ दूसरी और तीसरी सदी हिजरी में हुआ था।

3) मनहजुन नक़द इंदल मुहद्दिसीन नशअतुहु, तारीखुहु - इस किताब में मौफ़्फ़ ने दलाइल से साबित किया है कि मुहद्दिसीने कराम ने अहादीस के इल्मी ज़खीरे को सही करार देने के लिए जो उसलूब इख्तियार किया है उसकी कोई मिसाल यहां तक कि हमारे ज़माने में भी नहीं मिलती है। नीज़ इस किताब में तदवीने हदीस के इब्तिदाई दौर में मुहद्दिसीन के हक़ीकी तरीके कार पर रौशनी डाली गई है। यह किताब अरबी ज़बान में है और 234 पेजों पर मुशतमिल है। इस किताब का पहला एडीशन 1975 में रियाज़ से, दूसरा एडीशन 1982 में रियाज़ से और तीसरा एडीशन 1983 में रियाज़ से शाये हुए हैं, इसके बाद भी इस किताब के शाये होने का सिलसिला जारी है। यह किताब जामिया इस्लामिया मदीना के निसाब में दाखिल है। यह अपनी किस्म की पहली अहम किताब है।

4) किताबुत तमीज़ लिल इमाम मुस्लिम - इमाम मुस्लिम की असूले हदीस की मशहूर किताब “अत्तमीज़” आपकी तहकीक़ व तखरीज के बाद शाये हुई।

5) Studies in Hadith Methodology and Literature: इस किताब में हदीस के तरीके कार से बहस की गई है ताकि अहदीस को समझने में आसानी हो, नीज़ मुस्तशरेकीन ने जो शुबहात पैदा कर दिए थे उनका इज़ाला करने की एक बेहतरीन कोशिश है। मुसन्निफ ने इस किताब को दो हिस्सों में मुंकासिम किया है, पहले हिस्से में अहदीस के तरीके कार से बहस की गई है जबकि दूसरे हिस्से में हदीस के अदबी पहलू को सिहाये सित्ता और दूसरी हदीस की किताबों की रौशनी में उजागर किया है। यह किताब अंग्रेज़िदां असहाब के लिए उलूम व अदबे हदीस के मुतालआ का अहम ज़रिया है जो मुख्तलिफ यूनिवर्सिटियों के निसाब में दाखिल है। किताब का पहला और दूसरा एडीशन 1977 में अमेरीका से तीसरा एडीशन 1988 में अमेरीका से शाये हुआ, उसके बाद बहुत से एडीशन शाये हो चुके हैं।

6) The History of The Quranic Text from Revelation to Compilation: यह डाक्टर मोहम्मद मुस्तफा आजमी कासमी की बेहतरीन तसानीफ में से एक है जिसमें कुरान करीम की तदवीन की तारीख मुस्तनद दलाइल के साथ ज़िक्र फरमाई है। दूसरी आसमानी किताबों की तदवीन से कुरान करीम की तदवीन का मुकारना फरमा कर कुरान करीम की तदवीन के महासिन व खूबियों का तज़क़िरा फरमाया है, नीज़ इस्लाम मुखालिफ कुव्वतों को दलाइल के साथ जवाबात तहरीर किए हैं। इस किताब में हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़रिये कुरान करीम का हतमी नुसखा तैयार करने के लिए तरीके कार पर भी मुफस्सल रौशनी डाली गई है। इस किताब का पहला एडीशन 2003 में इंग्लैंड से दूसरा एडीशन 2008

में जुबई से शाये हुआ। इसके बाद सउदी अरब, मलेशिया, कनाडा और कुवैत से बहुत से एडीशन शाये हो चुके हैं।

7) On Schacht's of Muhammadan Jurisprudence: मशहूर व मारुफ मुस्तशरिक "शाख्त" की किताब का तंकीदी जायज़ा और फिकह इस्लामी के मुतअल्लिक उसके ज़रिया उठाए गए एतेराज़ात के मुदल्लल जवाबात पर मुशतमिल एक अहम तसनीफ है जो मुख्तलिफ यूनिवर्सिटियों के निसाब में दाखिल है। यह किताब 243 पेजों पर मुशतमिल है। इस किताब का पहला एडीशन 1985 में न्यू यार्क से द्वारा एडीशन 1996 में इंग्लैंड से शाये हुआ है। इसके बाद बहुत से एडीशन शाये हो चुके हैं और सिलसिला बराबर जारी है। यह किताब दुनिया की मुख्तलिफ यूनिवर्सिटियों के निसाब में दाखिल है। 1996 में इसका तुर्की ज़बान में तरजुमा शाये हुआ। अरबी ज़बान में तरजुमा और उर्दू में मुलख़ख़स तबाअत के मरहले में है।

8) उसूलल फिक़हिल मोहम्मदी लिल मुस्तशरिक शाख्त (दिरासत नक़दियह) - यह डाक्टर मोहम्मद मुस्तफा आज़मी साहब की अंग्रेज़ी ज़बान में तहरीर करदा किताब का अरबी तरजुमा है जो डाक्टर अब्दुल हकीम मतरूदी ने किया है जो अभी तक शाये नहीं हो सका है।

9) कुत्ताबुन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम - इस किताब में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जानिब से लिखने वाले सहाब किराम का तज़क़िरा है। मुअर्रेख़ीन ने उमूमन 40-45 कातेबीन नबी का ज़िक्र फरमाया है लेकिन डाक्टर आज़मी साहब ने 60 से ज़्यादा कातेबीन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़िक्र तारीख़ी दलाइल के साथ फरमाया है। इस किताब का पहला एडीशन

1974 में दिमश्क से और दूसरा एडीशन 1978 में बैरुत से और तीसरा एडीशन 1981 में रियाज़ से शाये हुआ है। इसके बाद इस किताब के बहुत से एडीशन शाये हो चुके हैं। इस किताब का अंग्रेजी तरजुमा जल्दी ही शाये हुआ है।

10) अलमुहद्दिसून मिनल यमामा इला 250 हिजरी तक़रीबन - इब्तिदाए इस्लाम से अब तक आलमे इस्लाम के तमाम शहरों के मुहद्दिसीन के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है, मगर मुसन्नियफ ने अलयमामा के मुहद्दिसीन का तज़क़िरा इस किताब में किया है। इस किताब का पहला एडीशन 1994 में बैरुत से शाये हुआ है।

11) मुअत्ता इमाम मालिक - आपकी तखरीज व तहकीक़ के बाद इस अहम किताब की 8 जिल्दों में इशाअत हुई। यह हदीस की मशहूर व मारुफ़ किताब है जो इमाम मालिक ने तसनीफ़ फरमाई है। बुखारी व मुस्लिम की तहरीर से पहले यह किताब सबसे मोतबर किताब तसलीम की जाती थी। आज भी इसे अहम मक़ाम हासिल है। मुअस्ससह ज़ायद बिन सुल्तान आल नहयान अबू ज़हबी ने इसकी इशाअत की है। आप ने मुअत्ता मालिक के रावियों पर भी काम किया है जिनकी तादाद आपकी तहकीक़ के मुताबिक़ 105 है।

12) सही इब्ने ख़ुज़ैमा - सही इब्ने ख़ुज़ैमा जो हदीस की सही बुखारी व सही मुस्लिम के अलावा अहादीसे सहीहा पर मुशतमिल एक अहम किताब है, डाक्टर मोहम्मद आज़मी साहब ने ही हदीस की इस नायाब किताब को तलाश किया जिसके बारे में यह ख्याल था कि यह ज़ाये हो चुकी है, इस तरह हदीस की यह अहम किताब मौसूफ़ की तखरीज व तहकीक़ के बाद ही दोबारा शाये हो सकी। इसकी चार जिल्दें हैं, पहला एडीशन 1970 में बैरुत से दूसरा एडीशन 1982 में

रियाज़ से और तीसरा एडीशन 1993 में बैरुत से और उसके बाद बेशुमार एडीशन मुख्तलिफ़ इदारों से शाये हुए और हो रहे हैं।

13) अलइलल लिअली बिन अब्दुल्लाह अलमदीनी - आपकी तहकीक़ व तालीक के बाद इसका पहला एडीशन 1972 में और दूसरा एडीशन 1974 में शाये हुआ। इसके बाद बहुत से एडीशन शाये हो चुके हैं।

14) सुनन इब्ने माजा - हदीस की इस अहम किताब की आपने तखरीज व तहकीक़ करने के बाद इसको कम्प्यूटराइज़ करके चार जिल्दों में 1983 में रियाज़ से शाये कराया। अहादीस को कम्प्यूटराइज़ करने का सिलसिला आपने किसी हद तक Cambridge University में Ph.D के दौरान शुरू कर दिया था।

15) सुनन कुबरा लिन नसई - आपने 1960 में इसके मखतूता को हासिल करके इसकी तखरीज व तहकीक़ के बाद इशाअत फरमाई।

16) मगाज़ी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लिउरवा बिन जुबैर बिरिवायति अबिल असवद - मशहूर व मारुफ़ ताबेई हज़रत उरवा बिन जुबैर (विलादत 23 हिजरी) की सीरत पाक के मौजू पर तहरीर करदा सबसे पहली किताब (मगाज़ी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) डाक्टर मोहम्मद मुस्तफा आजमी ने अपनी तखरीज व तहकीक़ और तंकीद के बाद शाये की। इस किताब का पहला एडीशन 1981 में शाये हुआ। यह किताब इस बात की अलामत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के फौरन बाद सीरते नबवी पर लिखना शुरू हो गया था। इदारा सकाफते इस्लामिया, पाकिस्तान ने इस किताब का उर्दू तरजुमा करके 1987 में शाये किया है, इस किताब का अंग्रेजी ज़बान में तआरुफ़ तबाअत

के मरहले में है, असल किताब (अरबी ज़बान में) का पहला एडीशन 1981 में रियाज़ से शाये हुआ है।

17) सही बुखारी का मखतूता - बहुत से उलमा के हवाशी के साथ 725 में तहरीर करदा सही बुखारी का मखतूता जो 1977 में इस्तम्बूल से हासिल किया गया, मौसूफ की तहकीक के बाद तबाअत के मरहले में है।

गरज़ ये कि डाक्टर मोहम्मद मुस्तफा आज़मी साहब ने हदीस की ऐसी अज़ीम खिदमात पेश फरमाई हैं कि उनकी हदीस की खिदमात का एतेराफ आलमे इस्लामी ही में नहीं बल्कि मुस्तशरेकीन ने भी आपकी सलाहियतों का एतेराफ किया है। मौसूफ की अक्सर किताबें इन्टरनेट पर **FreeDownload** के लिए मुहैया हैं।

लेखक का परिचय

मौलाना डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी का तअल्लुक सम्भल (यूपी) के इल्मी घराने से है, उनके दादा मशहूर मुहद्दिस, मुक़र्रिर और स्वतंत्रता सेनानी मौलाना मोहम्मद इसमाईल सम्भली (रह) थे जिन्होंने मुख्तलिफ मदरसों में तकरीबन 17 साल बुखारी शरीफ का दर्स दिया, जबकि उनके नाना मुफ्ती मुशर्रफ हुसैन सम्भली (रह) थे जिन्होंने मुख्तलिफ मदरसों में इफता की ज़िम्मेदारी निभाने के साथ साथ बुखारी व हदीस की दूसरी किताबें भी पढ़ाई।

डाक्टर नजीब कासमी ने इब्तिदाई तालीम सम्भल में ही हासिलकी, चुनांचे मिडिल स्कूल पास करने के बाद अरबी तालीम का आगाज़ किया। इसी बीच 1986 में यूपी बोर्ड से हाई स्कूल भी पास किया। 1989 में दारुल उलूम देवबन्द में दाखिला लिया। दारुल उलूम देवबन्द के क़याम के दौरान यूपी बोर्ड से इन्टरमीडिएट का इमतिहान पास किया। 1994 में दारुल उलूम देवबन्द से फरागत हासिल की। दारुल उलूम देवबन्द से फरागत के बाद जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली से B.A (Arabic) और तरजुमे के दो कोर्स किए, उसके बाद दिल्ली यूनिवर्सिटी से M.A. (Arabic) किया।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली के अरबी विभाग की जानिब से मौलाना डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी को “अल जवानिबुल अदबिया वल बलागिया वल जमालिया फिल हदीसिन नबवी” यानी हदीस के अदबी व बलागी व जमाली पहलू पर दिसम्बर 2014 में **डाक्टरेट की डिग्री** से सम्मानित किया गया। डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी ने प्रोफेसर डाक्टर शफीक अहमद खां नदवी भूतपूर्व सदर अरबी विभाग और प्रोफेसर रफीउल इमाद फायनान की अंतर्गत में

अरबी ज़बान में 480 पृष्ठों पर मुशतमिल अपना तहकीकी मकाला पेश किया। डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी ने बहुत सी किताबें उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी ज़बानों में तहरीर की हैं। 1999 से रियाज़(सऊदी अरब) में बरसरे रोज़गार हैं। कई सालों से रियाज़ शहर में हज तरबियती कैम्प भी मुनअक्किद कर रहे हैं। उनके मज़ामीन उर्दू अखबारों में प्रकाशित होते रहते हैं।

मौलाना डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी की वेब साइट (www.najeebqasmi.com) को काफी मक़बूलियत हासिल हुई है जिसकी मोबाइल ऐप (**Deen-e-Islam**) तीन ज़बानों (उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी) में है जिसमें मुख्तलिफ इस्लामी मौजूआत पर मज़ामीन के साथ उनकी किताबें और बयानात हैं।

हज व उमरह से मुतअल्लिक खुसूसी ऐप (**Hajj-e-Mabroor**) भी तीन ज़बानों (उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी) में है, जिन से सफर के दौरान हत्ताकि मक्का, मिना, मुज़दल्फा और अरफात में भी इस्तिफादा किया जा सकता है।

हिंदुस्तान और पाकिस्तान के मशहूर उलमा, दीनी इदारों और मुख्तलिफ मदरसों ने दोनों Apps (**दुन्या की पहली मोबाइल ऐपस**) की ताईद में ख़ूब तहरीर फरमा कर अवाम व खवास से दोनों Apps से फायदा उठाने की अपील की है।

<http://www.najeebqasmi.com/>

najeebqasmi@gmail.com

[MNajeeb Qasmi - Facebook](#)

[Najeeb Qasmi - YouTube](#)

Whatsapp: [00966508237446](tel:00966508237446)

First Islamic Mobile Apps on the world in 3 languages:

Deen-e-Islam & Hajj-e-Mabroor

AUTHOR'S BOOKS



IN URDU LANGUAGE:

حج مبرور، مختصر حج مبرور، حی علی الصلاة، عمرہ کا طریقہ، تحفہ رمضان، معلومات قرآن، اصلاحی مضامین جلد ۱،
اصلاحی مضامین جلد ۲، قرآن وحدیث: شریعت کے دواہم ماخذ، سیرت النبی ﷺ کے چند پہلو،
زکوٰۃ و صدقات کے مسائل، فیلی مسائل، حقوق انسان اور معاملات، تاریخ کی چند اہم شخصیات، علم و ذکر

IN ENGLISH LANGUAGE:

Quran & Hadith - Main Sources of Islamic Ideology
Diverse Aspects of Seerat-un-Nabi
Come to Prayer, Come to Success
Ramadan - A Gift from the Creator
Guidance Regarding Zakat & Sadaqaat
A Concise Hajj Guide
Hajj & Umrah Guide
How to perform Umrah?
Family Affairs in the Light of Quran & Hadith
Rights of People & their Dealings
Important Persons & Places in the History
An Anthology of Reformative Essays
Knowledge and Remembrance

IN HINDI LANGUAGE:

کوران اور ہدیس - اسلامی آئیڈیالوجی کے مین سورس
سیرت النبی کے مختلف پہلو
نماز کے لیے آؤ، سफलता کے لیے آؤ
رمضان - اللہ کا ایک उपहार
ज़कात और सदकात के बारे में गाइडेंस
हज और उमराह गाइड
मुख्तसर हजजे मबरूर
उमरہ کا तरीکا
پاروارکي मामले کوران اور ہدیس کی روشنی میں
لوگوں کے अधिकار اور उनके मामलात
महत्वपूर्ण व्यक्ति और स्थान
सुधारात्मक निबंध का एक संकलन
इल्म और जिक्र



First Islamic Mobile Apps of the world in 3 languages
(Urdu, Eng. & Hindi) in iPhone & Android by Dr. Mohammad Najeeb Qasmi

DEEN-E-ISLAM

HAJJ-E-MABROOR